दुखमोचन

नागार्जुन



राजकमल प्रकाशन

दिल्ली-६ पटना-६

प्रकाशक :
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
८, फैज बाजार, दिल्ली-६

पांचवी आवृत्ति, १९७२

मूल्य : छह रुपये



मुद्रक :
आदर्श प्रेस,
दरियागज, दिल्ली

···समर्पण

'दुखमोचन' को आकाशवाणी के लखनऊ-प्रयाग केन्द्र ने तेरह किस्तो मे (समग्र रूप मे) प्रसारित किया था—'५६ के जुलाई, अगस्त और सितम्बर मे। प्रोड्यूसर थे श्री भारतभूषण अग्रवाल। कथोपकथन और परिसवाद को छोड़कर कथावस्तु का पूरा वाचन श्री विजय बोस ने किया था। निम्नलिखित कलाकारो का स्वर-सयोग पाकर उपन्यास के पन्द्रहों पात्र लाख-लाख श्रोताओ के लिए कुछ अरसे तक अविस्मरणीय हो उठे :

अशोक कुमार (दुखमोचन), उषा आर्या (मामी), शोभारानी पजाबी (अपर्णा), रीता वर्मा (टुनू), के० बी० एल० वर्मा (सुखदेव), डी० के० बनर्जी (निस्याबाबू), राज जोशी (टेकनाथ), सुरेश बिहारी लाल (बेणी माधव), कौशलबिहारी लाल (मधुकान्त), कुमुद (चमकी), अनिल मालवीय (लीलाधर), उमेश दीक्षित (रामसागर), उर्मिला दीक्षित (माया), और देवव्रत दीक्षित (योगेन्द्र)।

समर्पण की बात सोचते ही ये सभी चेहरे मुझे याद आ गए है··

—नागार्जुन

····एक

टिप टिप टिप

पिछले सत्तर घण्टो से आसमान टपक रहा था । ऊदे-ऊदे भारी-भारी बादल विराट् चँदोवा की तरह ऊपर तने हुए थे। नीचे भीगी धरती सिकुड-सिमटकर मानो छोटी हो आई थी । कीचड की घिचिर-पिचिर ने मन की प्रफुल्लता हर ली थी ।

टिप टिप टिप ··

काली—डरावनी रात का यह सन्नाटा कई गुना अधिक गहरा हो रहा था । अमराइयो मे डालो और टहनियो की सन्धियो से चिपके झीगुरो की एकरस-एकस्वर झकार बरसात की इस प्रकृति को भयानक बना रही थी । कही कोई कुत्ता भी तो नही भूंक रहा था ।

धान के खेतो मे पानी भरा था, कही कम कही ज्यादा । मेडों पर जुताई के समय किसानो ने मिट्टी डाल दी थी; वह अब बैठ गई थी लेकिन फिसलन के मारे उस पर से चलना मुश्किल था ।

—साली ने नाक मे दम कर दिया, थूऽऽ···

मद्धू ने वर्षा को गाली दी और सुरती थूककर मेड पर से खेत मे उतर आया। एक बडे मेढक ने छलाग मारी तो जोरो की आवाज हुई छपाक्...। पानी के कुछ-एक छीटे मद्धू की नगी बाँहो पर पडे। न छाता था, न बाँस की छतरी ही थी। कन्धे पर गमछा-भर था जो कि अभी पूरी तरह भीगा नही था।

खेत मे धान के पौधो को रौंदता हुआ वह आगे बढ रहा था— सीधे पश्चिम या दक्षिण की तरफ नही, कोने की तरफ। मुलायम पाँक, कडे-तीखे घोघे, घास की गाँठें, बारीक घुँघचियाँ और जाने क्या-क्या तलवो के नीचे आ रहा था।

एक के बाद दूसरा खेत, दूसरे के बाद तीसरा, फिर चौथा फिर और, फिर और! फिर ऊँची सतह की बलुआही जमीन मिली। मक्के की खूँटियो से उलझकर चलना असम्भव हो उठा तो फिर मद्धू ने मेड पकड ली। यह रामसागर का ही खेत था। और माँ भी तो रामसागर की मरी थी न!

हाँ, अभी कुछ देर पहले रामसागर की बूढी माँ के प्राण-पखेरू उडे थे और मधुकान्त लोगो को इसकी खबर देने निकला था। दो ही जने बाकी थे जिनके यहाँ जाना था, दुखमोचन और वेणी माधव्। टमका-कोइली कोई छोटा गाँव नही था, पाँच हज़ार से ऊपर की जनसख्या वाली यह एक भारी बस्ती थी। दरअसल यह छोटी-छोटी कई बस्तियो का एक समूह था। बीच-बीच मे खेत और बाग फैले हुए थे। उत्तर-पूरब तरफ से कन्नी काटकर एक नदी निकल गई थी। इधर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की पक्की सडक, उधर मीटरगेज की रेलवे लाइन।

दुखमोचन का घर नज़दीक आया तो बादल की टिपिर-टिपिर रुक गई। कीचड से सने पैरो की उँगलियो मे हल्की-हल्की-सी खुजली महसूस हो रही थी। मद्धू की तबियत हुई कि कुएँ पर चलकर एक डोल पानी खीच ले और अच्छी तरह पैरो को धो डाले। लेकिन अभी तो रात-भर घूमना-फिरना था, फिर क्यो कोई पैर धोए।

दुखमोचन के दालान के सामने जो आँगन था, वह छोटा नही था। लगातार कई रोज वर्षा हुई थी, मगर सतह ऊँची होने के कारण आँगन घिच-पिच नही हो पाया । भीगी मिट्टी पैरो के नीचे रबड-सी दबती मालूम दे रही थी ।

बाहर बैठकखाने मे कोई सो रहा था। दुखमोचन का भाई सुखदेव दालान के भीतर कोठरी मे सोया होगा, मधुकान्त को यह निश्चय था ही , फिर भी वह दो सीढी ऊपर बरामदे मे न जाकर नीचे आँगन मे ही खडा रहा।

उसने तम्बाकू निकाला, चूने के लिए चुनौटी निकाली अण्टी से। सोचा कि सुरती तैयार करके ही सुखदेव और दुखमोचन को जगाना उचित होगा ·

लाठी एक तरफ खडी कर दी और उचककर वह बरामदे के किनारे पर बैठ गया। आठ-दस रोज़ बाद वह दुखमोचन के यहाँ आया था। इस बीच दुखमोचन बाढ-पीडितों की सहायता के लिए लगातार बाहर-ही-बाहर घूमता रहा, मधुकान्त की ही नही, गाँव के दूसरे लोगो की भी मुलाकात उससे नही हुई थी।

सुरती फाँककर मद्धू ने आवाज़ लगाई—सुखदेव भाई! ओ सुख-देव भाई ई ई ई ई

—ऊँ ! !

सुखदेव ने करवट बदली तो अन्दर चारपाई चरमरा उठी।

—उठिए, सुखदेव भाई!

—क्या है मद्धू ?

—रामसागर की माँ मर गई ··

—कब ? —सुखदेव ने उसी तरह अलसाई आवाज़ मे पूछा।

मुँह मे सुरती की थूक भर आई थी। मधुकान्त ने जैसे-तैसे कहा—घण्टा-भर हुआ है। ज़रा रुककर पूछा—सुखदेव, भाई, आपके टॉर्च मे बैटरी तो भरी होगी न ?

किवाड खोलकर सुखदेव बाहर निकले और टॉर्च की रोशनी से समूचा आँगन जगमगा उठा।

सुरती थूककर मद्धू ने पूछा—दुखमोचन कब लौटे ?

—लौट तो आए थे शाम को ही, लेकिन सोए है देर से

—तो फिर उनको जगाने की जरूरत नही ?

सुखदेव रहे तो चुप ही, लेकिन रग-ढग से साफ था कि बीच नीद का यह विघ्न उनको बेहद अखरा है।

कि इतने मे अन्दर घर मे से खडाऊँ की खट-पट सुनाई पडी।

—लो, जग तो गए दुखन !

आश्वस्त होने की भावना मे डूबे हुए ये शब्द मद्धू को सुखदेव के मुँह से निकलने के कारण ही शायद अच्छे नही लगे। उसका दिल चाहता था कि हफ्ता-भर की गहरी थकावट के बाद दुखमोचन अभी दो-एक रोज पूरा आराम ले और इस समय बुढिया की श्मशान-यात्रा मे सुखदेव ही शरीक हो।

अगले ही क्षण दुखमोचन मद्धू के सामने खडा था।

—तुम सो जाओ !—उसने भाई से कहा। फिर मधुकान्त के कन्धे थपथपाकर बोला—चल, मै चलता हूँ।

—नही दुखन भैया, तुम बहुत थके हो !

—चल, चल !—दुखमोचन ने हँसकर कहा—पागल कही का !

—नही, दुखन भैया !

—उहुँ !

खडाऊँ दुखमोचन ने बरामदे पर रख दी और आगे आँगन मे निकल आया।

दाहिने कान पर जनेऊ चढाते हुए सुखदेव ने कहा—बबुअन, टॉर्च नही लोगे साथ ?

—नही भैया !

—ले लो न !—मधुकान्त ने कहा तो दुखमोचन ने उसकी उंगली

दबा ली मगर प्रकट रूप मे कहा—नही, रहने दो, बरसात का मौसम है और हमारी बँसवार मे साँप रहते हे

सुखदेव ने कहा—हाँ मद्धू, बबुअन ठीक कहते हैं · और और मै रामसागर की माँ के शव को कन्धे जरूर लगाता, किन्तु फिर तीन दिन हमारे शालिग्राम बिना पूजे ही पडे रहेगे, शख मे पानी भरकर कौन उन्हे नहलाएगा और कौन करेगा सहस्रशीर्षा मन्त्र का पाठ ? समझते हो न मधुकान्त ?

मद्धू चुप रहा। सुखदेव को तसल्ली नही हुई उस चुप्पी से तो टॉर्च जलाकर उसकी मुखमुद्रा देख लेनी चाही, लेकिन दुखमोचन के पीछे-पीछे जाते मधुकान्त के सिर और पीठ के पिछले हिस्से ही दिखाई पडे, जिन पर किसी प्रकार का भाव अकित नही था।

सही रास्ता काफी घूमकर इधर आता था, इसी से मधुकान्त खेतो मे से होकर दुखमोचन के घर तक पहुँचा था। अब वापसी मे वेणी-माधव को साथ लेना था। गाँव के बीचो-बीच जो रास्ता था, दुखमोचन और मधुकान्त उसी पर आ गए।

तीनो रामसागर के दालान पर पहुँचे। अन्दर औरते रो रही थी। तीखी खुरदरी रुलाई के वेधक स्वरो से भादो की काली रात का वह मनहूस सन्नाटा टूक-टूक हो रहा था।

कचन और कन्हाई लालटेन लेकर गये और बाँस काट लाए।

ताजे-हरे बाँस के डण्डो से उधर अर्थी बनती रही, इधर लोगो मे बाते होती रही। आँगन के कोने मे तुलसी का चबूतरा था। उसी के नजदीक उत्तर की तरफ सिर करके लाश रख दी गई थी। सामने ईंट के आधे टुकडे पर ढिबरी जल रही थी, जिसका फीका-फीका आलोक बुढ़िया की बुझी पुतलियो से टकरा रहा था।

लोग यही मना रहे थे कि सुबह तक अब और वर्षा न हो कि रामसागर दुखमोचन को उठाकर अलग ले गया।

—गीली लकडी से तो लाश जलेगी नही दुखन भाई !

—किसके यहाँ हो सकती है सूखी लकडी ?

—अंपने यहाँ तो फूस भी नही है भैया !

—मद्धू या वेणी से न पूछ लें ?

—मद्धू का बाप कटखना है, होगी भी तो नही देगा।

—और वेणी ?

—मालूम करो।

दुखमोचन ने वेणी को बुलाया तो मालूम हुआ कि वह पुरानी फूस के चार-छ पूले दे सकता है।

बरसात के मौसम मे गरीब गृहस्थो के यहाँ सूखी लकडियाँ पाना बडा ही कठिन है। लगातार कई दिन कई रात तक जब बारिश होती रही हो तो उस कठिनाई का न ओर मिलेगा न छोर !

दुखमोचन ने कुछ देर सोचा। एकाएक उसे काठ के अपने वे तख्ते याद आ गए जो तख्तपोशो की तैयारी के लिए चीरे गए थे। निश्चय ही यह लकडी अच्छी किस्म की थी, मगर रामसागर की माँ का अग्नि-सस्कार भी होना ही था।

कचन और कन्हाई को साथ लेकर दुखमोचन फौरन आए और बैलो वाले अपने बाहरी घर से तख्ते निकलवा ले गए। सुखदेव को कुछ पूछने की हिम्मत नही हुई ..

रामसागर ने सूखी लकडी का यह अनोखा इन्तज़ाम देखा तो आँखे भर-भर आई। भर्राये गले से बोला—दुखन भैया, अपना भाई तो काम नही आया, मगर तुम तो सगे भाई से भी बढकर निकले।

झुककर उसने दुखमोचन के पैर छू लिए।

थोडी ही देर बाद अर्थी बाहर निकली। लोग चुपचाप नदी की ओर बढे। वर्षा सचमुच रुक गई थी, लेकिन आसमान साफ नही हुआ था।

बीजू आम के पेडो का पुराना बाग नदी के किनारे-किनारे दूर तक फैला था। गाँव के मुर्दे वही जलाए जाते थे। इलाके के पुराने ज़मीदार राजा रत्नेश्वरी नन्दन सिंह जी बहादुर की ज़मीदारी तो

सरकार ने ले ली, मगर यह बाग नही ले सकी। राजा साहब ने चुपके-चुपके कुछ-एक धनी किसानो को बाग की जमीन पर पट्टा लिख दिया। अधिकाश पेड ईटे तैयार करनेवाली कम्पनियो के ठेकेदार कटवा ले गए। अब बाग बडी तेज़ी से खेतो का रूप ले रहा था, आम लोगो के लिए यह एक विकट समस्या थी कि मुर्दे कहाँ जलाए जायँ। ज़मीदार नदी का कछार भी पट्टे पर उठा रहे थे। दुखमोचन ने गाँव के लोगो की राय से एक एकड जमीन श्मशान के लिये छेंक रखी थी। इसमे चार-ही-छ पेड बच रहे थे अब।

वही रामसागर ने माँ का दाह-सस्कार किया। लाश जलने मे बहुत देर नही लगी। सुबह होते-होते नहा-धोकर लोग वापस आ गए।

रिवाज के मुताबिक मामी ने पत्थर का टुकडा आगे रख दिया तो दुखमोचन ने उस पर पैर रखकर पानी डाल दिया, फिर भीगे कपडे बदले।

मामी बुडबुडाने लगी—मरने का कोई और मौसम बूढी को नही मिला क्या! माई री माई, न ऐसी बारिश देखी न ऐसा मरना ही देखा! और · यह भी ऐसे परोपकारी जीव है कि भगवान् ही बचावें तो बचावें · नही जाते अर्थी के साथ तो बुढिया शायद इन्ही के माथे मँडराती रहती ·

दुखमोचन ने मुस्कराकर कहा—तुम तो नाहक रज करती हो मामी! कोई-न-कोई तो हमारे घर से जाता ही न। मै नही जाता तो भैया जाते कि नही?

मामी चुपचाप रसोईघर के अन्दर चली गई।

दुखमोचन बरामदे पर रखे हुए पीढे पर बैठ गया। पैर की उँगलियो के नाखून पानी मे फूलकर और भी सफेद, और भी बडे, लग रहे थे।

—बच्ची! · · · ए बच्चीीीी!

दुखमोचन ने बेटी को पुकारा। पिछवाड़े की बगिया से जवाब मे आवाज़ आई—आई बापा, अभी आई!

पायलो की रुन-झुन रुन-झुन से अपने आने की घोषणा करती हुई एक चौदह बरस की लडकी सामने दिखाई पडी। उसके दोनो हाथ गीली-रूखी मिट्टी से सने थे, बडी-बडी कमलपत्री आँखो मे उल्लास छलक रहा था। गोरी सूरत, सुडौल देह !

पिता ने स्नेहपूर्ण निगाहो से पुत्री को देखा।

वह नजदीक आकर खडी हो गई।

नाक पर पसीने की बूँदियाँ चमक रही थी। चोटियो को जूडे की शकल मे लपेट लिया गया था, किन्तु उनके दोनो सिरे अपनी काली-चमकीली झालर छिपा नही सके थे। सामने पेशानी पर एक पतली लट काले कुण्डल की तरह चिपकी हुई थी।

दुखमोचन ने कहा—सारी बागबानी आज ही पूरी कर लोगी बेटा ?

लडकी खिलखिला पडी और बोली—अभी-अभी तो खुरपी लेकर उधर गई थी कि आपने पुकार लिया। पद्मा ने हजारा गेंदे के पौधे भेजे है, सोचा कि लगा दूँ।

पिता मुस्कराए। नरमी से कहा—उस रोज़ पुराना ब्लेड दिया था, ले तो आओ बेटी !

दुखमोचन ने पैर के नाखूनो की तरफ हाथ से इशारा किया और जाने क्या सोचने लगे।

बच्ची ने ब्लेड लाकर पिता को थमा दिया और वापस चली गई फुलवाडी की ओर। पायलो की रुन-झुन रुन-झुन हौले-हौले शून्य मे समा गई। दुखमोचन ब्लेड से नाखून काटने लगे। उधर दालान पर सुखदेव शालिग्राम की पूजा कर रहे थे। छोटी घण्टी की टुन-टुन टिन-टिन आवाज़ लगातार आ रही थी। साफ था कि पडित सुखदेव मिश्र हमेशा की तरह आज सवेरे भी भगवान को रिझाने बैठ गए है।

आसमान साफ था और सूरज की किरणे खुलकर खेलने लगी थी। बीच मे आँगन, चारो तरफ घर। लगता था कि भादो की कडी धूप

धरती का गीलापन पाँच-सात घण्टो मे ही सोख लेगी ।

बाएँ पैर की बूढी उँगली यानी सबसे मोटी और पहली उँगली बचपन मे ठेस खाकर बुरी तरह घायल हो गई थी । तभी से उसका नाखून ठूँठ पड गया था । कोने मे मसूर-नुमा खोडर बन गई थी, उतनी दूर नाखून को सँभालकर काटना होता था । बाकी सारी उँगलियो के नाखून काटकर इसे आखिर मे लेते थे ।

कई दिनो से अखबार नही देखा था । बाढ-पीडितो के सहायता-कार्य मे मशगूल रहने के कारण क्षण-भर की भी फुरसत नही मिली थी । अब आज काफी अखबार इकट्ठे ही देखने थे, मगर पलके नीद की प्यासी थी ।

एक बार पलक झिपी तो ब्लेड बहक गया । उसी अँगूठे का नाखून ज़रा अन्दर तक कट गया । दुखमोचन ने धोती की खूँट से खून पोछा । पसीना, पानी, खून का आँसू, कोई भी तरल पदार्थ क्यो न हो, खादी उन्हे चट से सोख जाती है । और दुखमोचन ने तो स्कूली जीवन मे स्याहीसोख का भी काम अक्सर खादी के अपने कुर्ते से ही लिया था ।

छोटी थाली मे नाश्ता लेकर मामी सामने आई तो धोती की खूँट मे खून के धब्बे देखते ही आतक और विस्मय के मारे अपनी जीभ पर उन्होने दाँत गडा लिये ।

कुछ नही मामी—दुखमोचन ने कहा । मगर मामी चीखी—तुमसे हज़ार बार कहा कि ब्लेड से नाखून काटने का काम न लिया करो, लेकिन एक जाहिल औरत की बात कौन सुनता है !

दुखमोचन को हँसी आ गई, बोला—तो कुल्हाडी ही थमा देती !

मामी का साँवला-सलोना स्वस्थ मुखमण्डल गम्भीर हो गया । नाश्ता की थाली नीचे रखकर वह पीने का पानी लेने गईं । लौटी तो कहा—कहाँ रखा वह ब्लेड ? लाओ, मेरे हवाले करो ।

करौंदे का अचार और दो हल्के परौंठे । दुखमोचन आहिस्ते-आहिस्ते नाश्ता करने लगा । मामी ने छोटी लडकी को आवाज़ देकर

बाँस की चौकोर पखी मँगवा ली थी और अब नज़दीक बैठकर हवा करने लगी ।

एक पराँठा खत्म हुआ तो आधा गिलास पानी पीकर दुखमोचन ने मामी की तरफ देखा ।

विधवा-जीवन की कठिन और लम्बी तपस्या उनकी आँखो के पानी मे कडवापन नही भर पाई थी । पिछले कई वर्षों से वह इस परिवार की सेवा कर रही थी । मायके मे या ससुराल में अपना कोई था भी तो नही । थे तो बस, बडी ननद के यही तीन लडके । सुखदेव की स्त्री धनी बाप की इकलौती थी । वहाँ आकर हमेशा के लिए जम जाने मे उसे घाटा था । दुखमोचन की औरत पाँच साल पहले हैज़ा की शिकार हुई थी । नारायण हज़ारीबाग मे महकमा-जगलात का मुलाज़िम था । उसकी पत्नी यही रहती थी । बच्चो मे दो थे दुखमोचन के, एक नारायण का ।

मामी चुपचाप पखी झल रही थी । बीच-बीच मे दुखमोचन की ओर आँखें उठाकर देख लेती थी ।

दूसरा पराँठा थोडा ही बाकी था कि मामी ने पूछ लिया—आज भी कही जाना है ?

—नही, आज कही नही जाऊँगा ।

—तुम्हे क्या, कोई आ जाएगा तो उसके साथ चल दोगे ! और एक बार घर से निकले कि पतग भी क्या उडता है ··

—मामी, क्या मैं योही मारा-मारा फिरता हूँ ?

—नही तो कही कोई अहल्या पडी होगी तुमसे छू जाने की आशा मे ! है न बाबू ?

दुखमोचन को हँसी आ गई और मामी की दबी मुस्कान अब उभर आई । काली पुतलियो वाली आँखो के दूधिया कोए चमकने लगे । फिर वह बोली—नही, आज मैं तुम्हे कही नही जाने दूँगी; बिस्तर ठीक कर देती हूँ, आराम करो !

नाश्ता हो चुका था। अब हाथ-मुँह धो रहे थे दुखमोचन।

मामी उठकर गई, अन्दर से सुपारी और सरौता ले आई।

आँचल से सरौता पोछकर सुपारी के टुकडे करने लगी तो बोली कई दिन हुए, पान खत्म हो गया। आज कोई प्रबन्ध करूँगी।

धोती के छोर से हाथ-मुँह पोछ चुके तो दुखमोचन ने कहा—हाट या स्टेशनवाले बाजार मे मँगवा लिया होता। लोग जाने-आते तो रहते ही है, एँ!

बरई से पान की पत्तियाँ खरीदने का शऊर किसी-किसी मे हुआ करता है—मामी ने कहा और सुपारी का चौथाई टुकडा थमा दिया।

दुखमोचन को मामी ने ही पान खाना सिखलाया था। चार-पाँच साल के अपने कलकत्ता-प्रवास मे उन्होने कभी-कभार ही पान खाया होगा। बगाली या उडिया पान मे उन्हे विरक्ति थी। हाँ, मगही पान का बनारसी विन्यास अच्छा लगता था। मामी के मायकावाले ज़िला पूर्णिया के सुखी-सभ्रान्त काश्तकार लोग थे, जिनके यहाँ पान और ज़र्दा रोजाना खूराक मे शामिल था। इस परिवार म भी मामी ने पान खाने के कई चेले तैयार कर लिए थे। दुखमोचन और छोटी बहू मे तो यह शौक अपनी जड जमा चुका था, बच्ची भी पान खाने लग गई थी।

अखबार कहाँ है?—दुखमोचन ने पूछा—भैया के पास या मेरी कोठरी मे?

—आज इस वक्त अखबारो म मगज़मारी करोगे?

- हाँ, कुछ उलट-पुलट लूँगा तो तसल्ली हो जाएगी।

—सब कुछ सँभालकर रखा हुआ है। आओ!

दुखमोचन आँगन के उत्तर की तरफ अपने घर के अन्दर गये तो मामी ने भी पीछे-पीछे प्रवेश किया।

लकडी की दो अलमारियाँ, दो-तीन ट्रक, एक पलग, एक फोल्डिंग चारपाई और मामूली-सी एक मेज़—अन्दर यही सामान था। अलमारियो के पीछे टूटी कुरसियो के ककाल झाँक रहे थे। मेज़ के

नीचे सही-साबित एक छोटा खूबसूरत स्टूल पडा था।

पलग पर गद्दा। गद्दे पर लाल-पीली किनारियो वाली नीली चादर। सफेद खोल वाला तकिया। सिरहाने की तरफ सामने खुश-फैल जगला। ऊपर दीवार मे पाँच-सात फोटो टँगे थे—गाधी, नेहरू, लेनिन सनयातसेन, भगतसिह, सुभाष .

दुखमोचन लेट गए तो मामी ने अलमारी खोली। अखबार निकाल-कर सिरहाने की तरफ ला रखे—आर्यावर्त, अवतिका, पुस्तकालय सदेश, सोवियत भूमि, अमेरिकन रिपोर्टर, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, दैनिक आर्यावर्त के आठ-दस अक थे।

दुखमोचन ने लपककर आर्यावर्त का एक अक उठा लिया।

निगाहे मोटे-मोटे शीर्षको पर दौडने लगी पुलिस और छात्रों मे भिड़न्त ताप्ती नदी मे अनोखी बाढ, गोरखपुर जिले के बीसो गाँव जलमग्न· ·कोसी बाँध फिर सकट मे- गोआ मे नरमेध समूचे भारत से सत्याग्रहियो के जत्थे ··

मामी पानी से भरा लोटा और गिलास रख गई चुपचाप।

छोटी लडकी ने आहिस्ता से झाँका, फिर दबे-पैरो अन्दर घुस आई। पिता को इसका कुछ भी पता न चला, वह अखबारो मे ही मगन रहे।

लडकी थोडी देर तक पिता की ओर ही आँखे गडाए रही, बाद मे दीवार की तरफ ऊपर जिधर फोटो टँगे थ उधर देखन लगी। पूँछकटी छिपकली शिकार की खोज म छप्पर के अन्दर से उतर आई और गाधीजी के पास ठिठक गई।

छोकरी ने उसे पजे से थूथन झाडते देखा तो अनजान ही पलग की पट्टी मे आ लगी। अब उसका एक हाथ बाप के बदन पर पडा।

दुखमोचन ने लेटे लेटे ही चुमकारकर लडकी को ऊपर खीच लिया, निगाहे लेकिन अखबार की पक्तियो मे ही चिपकी रही। छोकरी ने ठुड्डी पकडकर छिपकली की तरफ पिता का ध्यान आकृष्ट किया।

अखबार छोडकर दुखमोचन उठ बैठे। हुलसकर बेटी को छाती से दबा लिया और बोले—अरे वाह, इसकी तो पूँछ कटी है • बता री छिपकली, क्या नाम है तेरा ?

बाप की गोद मे बैठी और प्यार के बोझ से दबी हुई छ साल की वह लडकी खुशी के मारे फूलकर कुप्पा हो रही थी। खिलखिलाकर बोली—मै बताऊ बापा, इस गिरगिट का नाम ?

—बता तो देखूँ।

—इसका नाम है पूँछकटी।

दुखमोचन हँसने लगे। लडकी भी हँसने लगी।

यह क्या हो रहा है ?—बाहर से मामी की आवाज आई।

दुखमोचन ने उसी तरह आवाज ऊँची करके कहा—कुछ नही मामी।

—अरी, तू उन्हे आराम नही करने देगी टूनूऽऽऽ••

—नही मामी, मैने ही बिठा लिया है इसे—

—अच्छा, तो यह बात है !

लडकी सहमकर काठ हो गई थी और पिता की गोद से उतरकर घर से निकल जाने का जी कर रहा था उसका।

दुखमोचन ने बारी-बारी से उसके गाल थपथपा दिये और कान से मुँह सटाकर आज कहा- रात को तुझे कहानियाँ सुनाऊँगा, हाँ ! अभी बाहर जाकर खेल और पटना जाऊँगा तो गुड्डा लेता आऊँगा तेरे लिए, और चाकलेट

नही—कान हटाकर टूनू ने पिता से आँखें मिलाई और कहा—चाकलेट नही, लेमनचूस लूँगी मै तो !

तो लेमनचूस ही सही—दुखमोचन ने उसे चूम लिया और अगले ही क्षण गोद से उतारकर पलग के नीचे खडा कर दिया।

लडकी चली गई। दुखमोचन लेट गए और आँख मूँदकर निद्रादेवी के दरबार मे प्रवेश किया।

दो ..

मडवा और मकई की आधी फसले बरबाद हो गई थी। भादो मे होने-वाले 'आउँस' और 'गम्हडी' धानो को भी बाढ ने काफी नुकसान पहुँचाया था। अधिकाश खेत-मज़दूर रोजी की तलाश मे अपना-अपना इलाका छोडकर पूरब-पश्चिम जाने वाली रेलगाडियो पर सवार हो चुके थे।

मलेरिया और कालाज़ार ने तो लोगो को तबाह कर ही रखा था। आसिन मे एक नई किस्म की खुजली फैलने लगी। यह दाद की तरह समूचे बदन मे छा जाती थी, गोरी सूरत को साँवली और साँवली को काली कर देती थी। बूढो-सयानो का कहना था कि इस बार बाढ के पानी मे कोई जहरीला असर था जिससे सभी का खून खराब हो गया है। दरअसल यह बीमारी न दाद थी, न खुजली ही, एक विचित्र प्रकार का चर्मरोग था यह। बदन मे कही आपको खुजलाहट महसूस हुई और आपने खुजला लिया। थोडी देर बाद उस जगह चकत्ते निकल आए, फिर आप उसे जाने-अनजाने खुजलाते रहे, सूजन जगह-जगह बढती

रही और चमडी का ऊपरी छिलका सफेद पडता गया। चार-छः रोज बाद देह मे यहाँ-वहाँ चकत्ता-ही-चकत्ता। चकत्तो पर फुसियाँ निकलती गईं, पकती गईं और सूख-साखकर आपको कुरूप बनाती गईं, न खारिश हटी, न चकत्ते मिटे।

सुखदेव और छोटी बहू पर इस बीमारी ने हमला किया तो मामी घबरा उठी। पहले समझा जाता रहा कि भात और गेहूँ की रोटी जिन्हे नसीब नही होती उन्हे ही यह रोग अपना शिकार बनाता है। लेकिन अन्दाज गलत निकला।

दुखमोचन ने बार-बार होमियोपैथी और आयुर्वेद की किताबो मे इस बीमारी की बाबत उलट पुलटकर देखा, मगर कुछ समझ मे नही आया। आखिर दरभगा ले जाकर सरकारी मेडिकल कालेज के एक चर्मरोग-विशेषज्ञ डाक्टर से दोनो का खून टेस्ट करवाया।

नुस्खा देते वक्त डाक्टर ने बतलाया कि गन्धक का अधिक-से-अधिक इस्तेमाल करे। गन्धक का मलहम, गन्धक का तेल, गन्धक की टिकिया। नीम के साबुन से या नीम के पानी मे घाव को अच्छी तरह धो ले, फिर गन्धक मिलाकर नारियल का तेल बार-बार लगावे।

मगर यह दो-चार का रोग तो था नही, आस-पास के गाँवो के सत्तर प्रतिशत लोग इसके शिकार थे। जहाँ-तहाँ मवेशियो पर भी इसका असर देखा गया। दुखमोचन इलाके के पाँच-मान नेताओ और ऑफिसरो से इस सिलसिले मे बार बार मिले, मेडिकल कालेज के अध्यापको और छात्रो से बार-बार सहायता की प्रार्थना की, जिला-अधिकारियो तक प्रतिनिधि-मण्डल की मारफत जनता की सम्मिलित आवाज पहुँचाई। नतीजा यह हुआ कि गन्धक के दर्जनो पकेट और नारियल के तेल से भरे बीसियो डिब्बे ग्राम-पचायत के दफ्तर मे पहुँच गए। सार्वजनिक मामलों मे दिलचस्पी लेनेवाले कुछ-एक व्यापारियो ने नीम की सौ टिकिया साबुन की दी थी।

पचायत गाँव की गुटबन्दी को तोड नही सकी थी अब तक। चौधरी-

टाइप के लोग स्वार्थ-माधन की अपनी पुरानी लत छोडने को तैयार नही थे। जात-पात का टटा, खानदानी घमण्ड, दौलत की धौस, अशिक्षा का अन्धकार, लाठी की अक्ड, नफरत का नशा, रूढि और परम्परा का बोझ जनता की मामूहिक उन्नति के मार्ग मे एक नही अनेक रुकावटे थी। मुसीबत के दिनो मे बाहर वालो से तत्काल सहायता पाना जितना कठिन था, उससे भी कठिन था सहायता मे मिली हुई वस्तुओ और रकमो को सही जगहो तक पहुँचाना। स्वार्थी और लालची लोगो के सीग नही हुआ करते, न कोई खास किस्म का झण्डा-पताका होता है उनका।

एक रोज रात के अन्धेरे मे मास्टर टेकनाथ एक पैकेट गन्धक, पाँच पौण्ड वज़न का नारियल के तेल का टिन, पाँच टिकिया नीम के साबुन की, और डॉक्टरी मलहम की दो-तीन डिब्बियाँ लेकर आया।

सुखदेव शाम की सन्ध्या और पूजा से निबट चुके थे, छोटी भतीजी की तबीयत बहला रहे थे।

पूछा उन्होने—क्या है मास्टर ?…बैठो…

कुछ नही सुखदेव भाई !—मास्टर बैठ गया। बरामदे मे चारपाई पहले से ही बिछी पडी थी।

छप्पर के बाँस से लालटेन लटक रही थी। साफ शीशे की उस मद्धिम रोशनी मे सुखदेव ने टेकनाथ के चेहरे की तरफ गौर से देखा। चालीस से ऊपर का अधेड आदमी। खिचडी बाल ! गोल मुखडा ! गेहुआँ सूरत ! गले के नीचे आधी बाँहो वाली डोरिया कमीज़ थी। काली-पतली कोर की मैली धोती का छोर पैरो से बित्ता-डेढ बित्ता ऊपर ही लटक रहा था। छाती पर बाईं तरफ कमीज़ के पाकिट मे मामूली क्लिप वाली पीली पेन्सिल चमक रही थी। पैर खाली थे।

—मास्टर ने लडकी को नज़दीक बुलाया। अँगोछे मे बँधा सामान थमाकर उससे कहा—अन्दर रख आओ बिटिया ! समझी ? •

माथा हिलाकर लडकी ने हामी भरी। सुखदेव के सामने से बरामदे

के छोर पर कोठरी की ओर जाने लगी, तो उन्होंने लपककर पकड़ा—देखूँ क्या है ?

मास्टर ने मुस्कराकर कहा—आप इसे जाने दीजिए सुखदेव भाई, अभी-अभी मै सब-कुछ बताता हूँ आपको जा बिटिया, रख आ। अँगोछा वापस लेती आना · समझी न ?

लड़की अन्दर चली गई।

सुखदेव हथेली पर तम्बाकू-चूना मलकर सुरती तैयार कर रहे थे। टकनाथ मास्टर चारपाई से उतरा, उनके करीब आकर बैठ गया और फुसफुसाकर बाते करने लगा।

हथेली पर सुरती तैयार होती रही। बातचीत के बीच-बीच दोनो के सिर हिलते रहे, आँखे फैलती-सिकुड़ती रही। विदेशी लालटेन के मद्धिम प्रकाश मे दस-पाँच कीड़े हुलसने-झुलसते रहे।

लड़की खाली अँगोछा लेकर वापस आई कि टेकनाथ ने सुखदेव से सुरती लेकर निचले होठ के हवाले की।

जाने लगा तो सुखदेव बोले—अरे, बैठो अभी !

—नही भैया, जरूरी काम है—मास्टर ने कहा।

—बाजार जाओ तो पचाग लेते आना।

—कौन-सा ?

—कोई भी ?

—अच्छा ! लेता आऊँगा

थोड़ी देर बाद अन्दर खाने गये तो मामी ने सौगात की सारी वस्तुएँ सामने फैला दी। दस-पाँच कौर ही मुँह के अन्दर डाले थे, बाजारू सामग्री की प्रदर्शनी निगाहो के आगे आ पड़ी, तो मुस्कराने लगे पण्डितजी।

खाते समय बोलते नही थे। तनी भौहो और फैली आँखो के जरिये आश्चर्य का भाव बिखेरते हुए प्रश्न की मुद्रा मे सिर हिलाया—क्या है यह सब !

दुगने विस्मय मे मामी चिहुँक उठी। कहा—टुनू के हाथो यह सब आपने ही तो भेजा था अभी! लाल रग के अँगोछे मे

सुखदेव ने माथा हिलाकर स्वीकार किया और खाने लगे।

मामी के हाथ मे पखी आ चुकी थी। नजदीक बैठकर अब वह सुखदेव को हवा कर रही थी। जरा देर बाद उन्होने अपर्णा यानी बडी बच्ची को पुकारा—अप्पी, ओ अप्पी!

अभी आई मामी!—अपर्णा ने ऊँची आवाज मे जवाब दिया। वह इस समय चाची से नेपाल के उनके अपन ग्राम-जीवन की बाते सुन रही थी। बीच मे उठ जाना उसे बुरी तरह अखरा। लेकिन क्या करती?

मामी को बच्चे भी मामी ही कहते आए थे। सुखदेव को छोडकर बाकी सबको वे भी 'तुम' या 'तू' ही कहकर सम्बोधित करती। सुखदेव चार साल बडे और खटकर्मी पण्डित थे, इसी से उनके लिए मामी के मुँह से 'आप' निकलता।

अपर्णा आई। मामी ने इशारे से बताया कि अपने चाचा के सामने फैली वस्तुएँ उठा ले जा। वह उन्हे आँचल मे उठाने लगी तो चाचा ने बाएँ हाथ से सकेत किया—नही, अभी इन्हे नही उठाओ जाओ, अपना काम करो

अपर्णा वापस चली गई।

रसोईघर के बरामदे मे पीढे पर बैठकर सुखदेव खाना खा रहे थे। सामने आँगन था। बरामदे के नीचे महल्ले का चौकीदार बैठा हुआ था—काला कुत्ता। खानेवाले के परिचित चेहरे की तरफ और भोजन-सामग्री की तरफ उसकी निगाहे गडी थी। हमेशा की तरह उसे इस थाली के भात के आखिरी कौर का इन्तजार था।

मामी का दाहिना हाथ सहज गति मे पखी झलता रहा, चेतना थोडी देर के लिए कही और चली गई थी कोई आकर कुछ दे जाए और घर के लोग बिना समझे बूझे योही उसे ले ले, दुखमोचन के लिए यह बात बरदाश्त के बाहर थी। कुछ वर्ष पहले, पडोस के गाँव का

कपडा-सौदागर सुखदेव पण्डित को रेशमी छीटो का एक छोटा बण्डल थमा गया था। चार रोज बाद दुखमोचन को पता लगा तो उन्होने छीटे वापस भेज दी थी। पिछले साल अकाल-निवारण समिति का एक सदस्य यहाँ के लोगो मे सहायता का सामान बाँटने आया था। जाते-जाते ओवल्टीन और जमाये हुए दूध के दो छोटे डिब्बे छोडता गया। सुखदेव ने वह दूध भगवान् को भोग लगाकर बच्चो मे वितरित करना शुरू कर दिया। मालूम होने पर दुखमोचन ने भाई को कितना लताडा था! दुर्गा-पूजा के दिनो मे गाँव के नौजवानो ने नाटक किया था। पीछे हुआ यह कि मुँह मे लगाने का पाउडर काफी बच गया। मधुकान्त का भतीजा अपने लिए उसे छिपा रखना चाहता था। चचेरे भाइयो के डर से यहाँ अप्पो को चुपचाप थमा गया पाजी। टूनू ने चुगली खाई ·· पिता अपर्णा पर बहुत गुस्सा हुए। मामी को भी बाते सुननी पडी ··

तीन-चौथाई खाना खाकर सुखदेव ने पानी-भरा गिलास उठा लिया और ऊपर-ही-ऊपर मुँह मे पानी डालने लगे। काशी के पढे पण्डित थे, गिलास या लोटे मे मुँह लगाकर पानी नही पीते थे।

गट-गट की हल्की आवाज आई तो मामी का ध्यान टूटा। थाली की तरफ देखा तो तरकारी नही थी।

भिगोये हुए अरवा चावल पिसवाकर पीठी तैयार करवाई थी और उसमे लपेटकर कचनार के फलो के पकौडे तले थे। दुखमोचन को ये पकौडे बेहद पसन्द थे।

पखी नीचे रखकर मामी उठी, चार पकौडे लाकर थाली मे रख दिये। हाथ धो आईं तो बैठकर फिर पखी झलने लगीं।

मिस्री की बुकनी मिलाकर गाय का गर्म दूध पीते थे, पाव डेढ-एक। रात का खाना खाते ही कटोरा-भर दूध पी जाना उनका दस्तूर था। अप्पी दूध ले आई थोडी देर बाद, ऊपर से मिस्री की बुकनी छिडक गई।

खाना खाकर सुखदेव ने दूध का कटोरा खाली किया। आचमन का पानी लेकर मौन तोडा—मास्टर टेकनाथ दे गया है यह सब· 'क्या-

क्या है, देखा नही खोलकर ?

मामी ने कहा—मै नही जानती, यह आपका काम है ।

कुत्ते के लिए डबल और भात मुट्ठी मे लेकर सुखदेव उठे, खड़ाऊँ पहनकर बाहर गए । महल्ले का परिचित कुत्ता पहले से ही बैठा था, पीछे पीछे गया । हाथ-मुँह धोकर वह अन्दर आए ।

अँगोछे के छोर से हाथ-मुँह पोछकर उन्होने पैकेट खोला । अपनी कडी महक से गन्धक ने मानो उनकी नाक तोड दी । मुँह बनाकर 'ऐ-ऐ' करने लगे । टिकिया और मलहम सूँघे, तो उनसे गन्धक की बू भभक उठी । नारियल के तेल का डिब्बा हथेली पर लेकर वजन का अन्दाज लिया तो आँखे फैल गईं । बोले—दो सेर से कम तो क्या होगा ! क्यो अप्पी ?

अपर्णा कुछ क्षण पहले ही आकर नजदीक खडी थी । मुस्कराकर कहा—हाँ चाचा, दो सेर तो जरूर होगा ।

मामी कुछ नही बोली । अपर्णा ने हाथ आगे बढाया—लाइए देखूँ । कहाँ का है ? कलकत्ता का या बम्बई का ?

सुखदेव ने तेल का डिब्बा अप्पी को थमा दिया । मामी की तरफ मुँह करके कहने लगे—हमारे बबुअन दुनिया-भर के लिए तो सचमुच दुखमोचन है, किन्तु अपने परिवार मे किसे क्या कष्ट है, इसकी उन्हे रत्ती-भर परवाह नहीं ! फुन्सियो के मारे समूचा बदन सड गया है, मेरा भी और बहू का भी । देखती हो न !

मामी अब भी चुप रही ।

वह सफेद फाइन साडी पहने हुए थी, उनका सुर्ख और चौडा किनारा लालटन की मधुर-मद्धिम रोशनी मे खूब ही चमक रहा था । साँवले चेहरे पर उनकी बडी-बडी आँखे भी खूब चमक रही थी ।

साडी की बँधी खूँट खोलकर मामी ने एक इलायची निकाली । सुखदेव ने हाथ बढाकर उसे ले लिया । छिलका छुडाते हुए अपर्णा की ओर देखा और दाने मुँह मे डाल लिये ।

अपर्णा तेल के डिब्बे पर छपा हुआ विवरण बाँच रही थी जो कि चार लिपियों और भाषाओ मे अलग-अलग छपा था। हिन्दी वाला विवरण पढ़कर उसने डिब्बा बरामदे पर रख दिया और बोली—बडा अच्छा तेल है।

सुखदेव ने कहा—अपनी चाची को समझा दो कि इस तेल मे गन्धक मिलाकर लगाएँगी तो चार ही दिन मे खुजली भाग जाएगी। साबुन की टिकिया भी तो है। यह नाम का असली साबुन होगा दो है, एक वे लगाया करेंगी

और दूसरी आप!—चाचा के मुँह की बात छीनकर भतीजी बोल उठी।

साबुन की एक टिकिया और मलहम की एक डिबिया लेकर सुखदेव बाहर बैठकखाने की तरफ जाने लगे तो अप्पी से कहा—बाकी यह सब सँभालकर रखना!

चाचा बाहर निकले तो भतीजी ने छोटी चाची को पुकारा—अरे, आकर देखो भी तो!

मामी ने मुँह बनाकर अपर्णा की तरफ देखा और कहा—बाप को नही पहचानती है? आने तो दे उन्हे

अपर्णा सचमुच ही बाप को नही पहचानती थी। सुखदेव भी भाई को नहीं पहचानते थे। छोटी बहू भी नही पहचानती थी उन्हे। बस मामी ही दुखमोचन के मर्म की बाते जानती थी, और कोई नही जानता था उन्हे।

अपर्णा और बहू खा पीकर सो गई। मामी ने सिर-दर्द का बहाना करके खाना नही खाया। चटाई और तकिया बरामदे मे डालकर लेट रही। बत्ती कम करके लालटेन को अन्दर रख लिया गया था।

दुखमोचन लौटे तो रात डेढ़ पहर ज्यादा हो गई थी। दस बजे वाली ट्रेन उत्तर की तरफ जा चुकी थी। दालान के सामने बाहरी आँगन मे झण्डे के बाँस के करीब वही काली कोतवाल बैठा था। गर्दन ऊँची

करके और पूँछ को बार-बार हिला-डुलाकर उसने उनकी अगवानी की। आगे बढते ही तरुण हारसिंगार की हँसती-खेलती टहनियो ने अपनी ताज़ा खुशबू से उन्हे मस्त कर दिया। भीतरी आँगन के प्रवेश-द्वार पर दाहिनी ओर वह भी पहरेदार की तरह ही लग रहा था।

आहट पाते ही मामी उठी, बत्ती तेज़ करके लालटेन ले आई घर से। दुखमोचन ने जूते खोलकर कुर्त्ता उतारा। कुर्त्ता मामी को थमाकर बनियाइन निकाली। उसे नाक के करीब लाकर चटाई पर फेंक दिया और बोले—दिन-भर पसीना निकलता रहा आधा आसिन बीत चला, फिर भी उमस कम नही हुई ·

मामी ने पीढा लाकर रख दिया। दुखमोचन बैठ गए।

दिन-भर की थकान ने चेहरे की ताज़गी चाट ली थी—राहु की छाया जिस तरह चाँद की ताज़गी चट कर जाती है।

मामी पखे से उन्हे हवा करने लगी। कहा—नहाने की जरूरत नही, अँगोछा भिगोकर समूची देह पोछ लेना। बस ·

नही मामी—दुखमोचन ने कहा—नहाऊँगा तो अवश्य।

मामी बोली—मौसम है बुखारो का, कब कैसे किसको बिस्तर पकडना पडे, कोई ठीक नही।

—सब ठीक है मामी !

दुखमोचन सुबह तो नहाते ही थे, रात को भी अक्सर नहाते थे। इस मामले मे मामी की हिदायत का बाँध बीच-बीच मे टूटता रहता था।

दाढी की खूँटियाँ इस कदर उभर आई थी कि मामी की निगाहो मे बुरी तरह गडती थी। मन-ही-मन मामी ने अपने-आपसे कहा—आज भी इन्हे हजामत बनवाने की फुरसत नही मिली · फिर उन्हे हज्जाम पर गुस्सा आया कि हफ्ता-हफ्ता गुज़र जाता है, समय पर कभी नही आता, पाजी कही का ! सेफ्टीरेजर पटा है मुद्दत से, उसको नही छुएँगे। साँप है, डस नही लेगा !

गेहुआँ सूरत के गोल गालो पर काली खूँटियाँ सचमुच भद्दी लग रही

थी। मामी के जी मे आया की आईना लाकर हाथ मे थमा दे। लेकिन इस वक्त उन्होने कुछ नही कहा। चुपचाप हवा करती रही।

पन्द्रह्-बीस मिनट तक जुडा लिये तो दुखमोचन उठकर बाहर आए। धोती, अँगोछा और लोटा लेकर मामी भी पीछे-पीछे आईं।

डोल-डोरी हमेशा कुएँ की जगत के पास ही रखी रहती थी। दो गज़ लम्बा और एक गज़ चौडा पटरा बना था सीमेण्ट का, जिस पर बैठकर लोग नहाते थे, कपडे पछीटते थे।

दुखमोचन बैठ गए पटरे पर, मामी कुएँ से पानी भर-भर के डोल थमाती गईं। दस-बारह डोल पानी बदन पर डालकर नहाना हुआ।

कपडे बदलकर धोती पछीटकर अन्दर आए। खाना खाया।

मामी ने जान-बूझकर अभी उनसे मास्टर टेकनाथ वाली बात नही बताई कि कही नीद मे अडचन न आ जाए।

टुनू रात को आठ बजे ही सो जाती थी और तडके उठती थी। उठकर पिता के बिस्तर पर पहुँचती, आधा घण्टा, पाव घण्टा तक उनसे बात करती और खेलती। जिस रोज़ ऐसा नही होता, उस रोज़ वह दिन-भर उदास रहा करती या चाची और बहन से लडती रहती।

मामी बारह महीने सुबह-सुबह नहा लेती। उसके बाद पिण्डी की शकल मे स्थापित कुलदेवी दुर्गा की पूजा करती। फिर अपनी इष्ट देवी 'काली' का एक अक्षर वाला बीज मन्त्र 'क्ली' जपती थी, हजार बार। आखिर मे एक-एक अध्याय चण्डी और गीता। अपने इस नित्य-कर्म मे एक घण्टा समय उनका जाता था।

अगले दिन वह खूब सवेरे सोकर उठी। नहा-धोकर पूजा-पाठ से निबट चुकी तब भी अभी सूरज नही निकला था।

दुखमोचन टनू से बातचीत कर रहे थे।

लडकी ने कल भालू का नाच देखा था। मामी चुपचाप अन्दर आई तो वह नाच की नकल उतार रही थी···ढब्बर ढब्बर ढब्बर ढब्बर! थइया थइया थइया थइया! ढम-ढमाक्! ढब्बर ढब्बर

ढब्बर

दुखमोचन लेटे-लेटे ही यह सब देख रहे थे। नकल दिखाने वाली टुनू के लिए उन्होंने आधे से अधिक पलग छोड दिया था, खुद एक तरफ हटकर पलग की पटटी से सट गए थे। लडकी ताली पीट पीटकर भालू के नृत्य का अभिनय कर रही थी। पिता की प्रसन्न मुख-मुद्रा से उसका उत्साह दुगुना हो गया था।

मामी को किसी ने नही देखा। वह ठिठककर खडी रह गई। क्षण-भर को उनका भी चेहरा इस दृश्य मे खिल उठा। उन्हे अपना बचपन याद आ गया। वह भी अपने बाप की ऐसी ही लाडली थी कभी, उन्हे भी नाच-गाना, स्वॉग-थिएटर का भारी शौक था।

दो मिनट तक मामी प्रतिमा-सी खडी रही—भीत से सटकर, कि नाच की भाव-भगिमा मे कुलॉच खाकर टुनू ने उन्हे देख लिया। आखे चार होते ही बेचारी शरमा गई। दुखमोचन ने गर्दन फेरकर नजर मारी तो मामी को मुस्कराते पाया। फिर तो दोनो भभाकर हँस पडे।

लाज के मारे लडकी भाग गई।

थोडी देर तक दोनो हँसते रहे।

तब मामी ने रात वाली बात बताई। दुखमोचन का चेहरा बेहद गम्भीर हो उठा।

काफी देर तक उनके मुँह से एक शब्द भी नही निकला तो मामी बोली—आज हजामत कही जरूर बनवा लेना!

ऊँ.—अनमने स्वर मे दुखमोचन ने कहा और कान पर जनेऊ चढाया।

लोटा और कन्धे पर अँगोछा। बाहर निकले, मामी भी घर से बाहर आई। पीछे मुडे बिना ही बोले—सारी चीजे अलमारी मे रख लो! देखना इनका इस्तेमाल न होने पावे!

बाहर कुएँ के नजदीक, सीमेण्ट के पटरे पर बैठकर सुखदेव इमली की टहनी की दातुन से दाँतो को घिस रहे थे। दुखमोचन ने भाई की

ओर देखा तक नही । डोल से पानी ले लिया । सीधे पूरब की तरफ चल पडे ।

आसिन का साफ-सूफ नीला आसमान बडा ही सुहाना लग रहा था क्योकि धूप नही चढी थी अभी । हरी-ताजी दूबो के नुकीले सिरे ओस की बूंदो के बोझ से झुके क्या थे, एक-एक मोती को कैद किये हुए इठला रहे थे ।

दूर तक धान के खेत फैले थे । खिलती मजरियाँ हरियाली एकरसता को खत्म कर रही थी । ओस से भीगे पत्ते यहाँ तेजी से चमक रहे थे । मेडो पर से दुखमोचन आगे बढते गए ।

खेत खत्म हुए तो बाँसो का जगल आया, फिर अमराई ।

अमराई मे घुसे तो नदी के किनारे जा निकले । काँस के सफेद फूलो की अनोखी बाढ देखकर तबीयत मानो धुल ही गई ।

यह जीवछ की शाखा-नदी थी, अपना कोई स्वतन्त्र नाम नही था । चौमासे मे फूल उठती थी, बाकी ऋतुओ मे तो नहाने लायक भी पानी नही होता था । किनारे के गाँवो मे किसान जगह-जगह इसकी धारा को बाँध लेते थे और सूखा के दिनो मे करीन या कूंड लगाकर पानी उठाते थे ।

दुखमोचन ने दिशा-फरागत से निबटकर नदी के पानी मे हाथ-मुँह धोए, जामुन की टहनी से दातुन किया और लौट आए ।

नहा-धोकर नाश्ता किया । धुली बनियाइन और कोकटी रग का कुर्त्ता डालकर निकल पडे ।

नित्याबाबू गाँव के सबसे धनी व्यक्ति थे । उम्र पचपन और साठ के अन्दर थी । आधुनिक ढग का पक्का दुमजिला मकान पहले-पहल उन्होने तैयार करवाया था । सोलह जगले, आठ दरवाजे ! बडे-बडे चार कमरे ! लोहा और सीमेण्ट का खुलकर उपयोग हुआ था । शोहरत थी, दस हजार रुपये नकद लगे थे । लोगो ने ग्रामोफोन पहले उन्ही के दालान पर सुना था, पिछले वर्ष से रेडियो भी बज रहा था । पोता

विलायत गया था बैरिस्टर बनने। छोटे लडके की शादी हुई तो बाईस हज़ार का तिलक चढा। पोती का ब्याह हुआ तो पन्द्रह हजार गिने थे।

दुखमोचन पहुँचे तो नित्याबाबू मुलायम चटाई पर पेट के बल लेटे हुए थे। नौकर मालिश कर रहा था। लाल और पीले तेलो की दो शीशियाँ रखी थी। नाश्ता की तश्तरी और चाय की जूठी प्याली पर मक्खियो के झुण्ड जमा थे। अग्रेज़ी दैनिक के पेज अलग-अलग पडे थे।

आओ दुखमोचन!—नज़र पडते ही नित्याबाबू ने कहा।

दुखमोचन खाली कुरसी पर बैठे और हाल-चाल पूछा।

हाल-चाल सुनकर नित्याबाब ने नौकर को चाय लाने की हिदायत दी और उठ बैठे।

धीमी आवाज़ मे बोले—बुलाया इसलिए कि बहुत दिनो से मुलाकात नही हुई थी तुमसे। आज़कल व्यस्त रहने हो। दुनिया-भर की फिकर तुम्हे सताती है। अरे, कुछ हम बुड्ढो की भी फिकर रखो दुखन ··

दुखमोचन समझ नही पा रहे थे कि बाबू नित्यानन्द ठाकुर के पेट मे क्या है। बिना किसी खास मतलब के तो उन्हे याद नही आई होगी दुखमोचन की।

नित्याबाबू के स्वर एकाएक हमदर्दी मे डूब गए—भले तो तुम कलकत्ता मे थे। ओह, कितना कमाते थे! कैसे सलीके से रहा करते थे। सिल्क का कुर्ता, नफीस धोती और कीमता जूते पहनकर जब तुम गाँव मे निकलते थे तो हमारा सीना तन जाता था अरे, तुम्हे यह क्या सूझा कि नौकरी छोडकर

दुखमोचन को फिज़ूल लगी ये बातें, कहा—अजी छोडिए, इस पुराने पचडे मे अब क्या रखा है? चाचाजी, कोई काम की बात कीजिए।

क्षण-भर के लिए रुककर भी नित्याबाबू ने छोडा नही। हमदर्दी और गहरी हो आई—बेटा अभी तेरी उमर ही क्या है! मैने तो पैतालीस वर्ष की उम्र मे तीसरी शादी की थी। किस चीज़ की कमी है?

भगवान् ने क्या नही दिया है तुझे ? जवानी के जोश मे अभी तो नही अखरेगा मगर बुढापा आने पर ··

दुखमोचन इस बकवास से उकता उठे तो प्रसग बदलना चाहा।

चक्रपाणि गत दो वर्षों से लन्दन मे कानून की पढाई कर रहा था। 'नित्याबाबू को अपने पोते की विदेश-यात्रा का भारी गुमान था और जब कभी कोई इस बात की चर्चा छेड देता तो उनके पोपले गाल खौलते तेल मे पकते गुलगुलो की तरह ऊपर-नीचे होने लगते। वह देर तक चक्रपाणि की खूबियो और सम्भावनाओ पर प्रकाश डालते रहते। दुखमोचन को यह मालूम था।

यो ही दुखमोचन ने कहा—चाचा, लन्दन मे आजकल बडी अशान्ति है। जहाजी मजदूर हजारो की तादाद मे हडताल करने वाले है, समूचा शहर उनका साथ देगा · चक्रपाणि का खत-वत आया है न ?

निनाई बाबू के मन ने झटका खाया। आशका और आश्चर्य मे भरकर बोले—कहाँ ? अखबारो मे इस तरह की एक भी खबर कहाँ आई है दुखमोचन ? तुम्हे यह कैसे मालूम हुआ ?

—मुजफ्फरपुर के एक लडके ने अपने पिता को लिखा है।

—मगर बच्चाबाबू ने तो किसी को कुछ नही लिखा है।

—शायद आने वाले पत्र मे लिखेगा।

—हुँ

अब कुछ देर तक चक्रपाणि की बाते होती रही। इस बीच चाय आई तो दुखमोचन ने प्याले को खाली किया।

आखिर नित्याबाबू अपने मतलब पर पहुँचे। कहा—गेहूँ आने वाला है, कैसे क्या होगा उसका ?

तो यह बात है, दुखमोचन ने सोचा, मुफ्त का गेहूँ चाहिए इनको ! इसलिए हमदर्दी की पिचकारी छोड रहे थे !

पता नही कब तक आएगा—जवाब मे दुखमोचन बोले और

नित्याबाबू की बदलती निगाहो को तोलने लगे।

कहाँ रखा जाएगा उतना गेहूँ ?—अपने-आप बुडबुडाए नित्याबाबू। एकाएक उठकर खडे हुए और दुखमोचन का कन्धा थपथपाया। फुस-फुसाकर कहा—आधा अनाज लोगो मे तत्काल बाँट देना और आधा तुम अपने घर मे रख लेना •

दुखमोचन उठकर खडे हो गए। भौहे तन रही थी, चेहरा सिकुड रहा था।

नित्याबाबू की सधी नज़रो ने यह भावान्तर ताड लिया। हँसकर बोले—पागल कही के ! अमानत के तौर पर सौ-दो-सौ मन गेहूँ अगर तुम्हारे घर मे पडा रहेगा तो क्या बुरा है ? समय-समय पर लोगो को मिलता रहेगा न ?

दुखमोचन खडे-खडे न जाने क्या सोचते रहे। पता नही, नित्याबाबू के हितोपदेशी सूत्र उनके अन्दर धँस रहे थे या नही ! लेकिन उनकी चुप्पी से उत्साहित होकर नित्याबाबू कहने लगे—बाढ और अकाल के सकटो का शिकार, बताओ कौन नही है ? कौन है जिसे गेहूँ नही चाहिए ? कहे तो कोई छाती पर हाथ रखकर

पान की सीठी दबी पडी थी मुँह के अन्दर। उसे थूककर नित्याबाबू ने गला साफ किया। अब उन्हे लगा कि दुखमोचन पर इन बातो का रत्ती-भर भी असर नही पडा। फिर उन्होने आखिरी तीर छोडा—साँवा-कोदो और मकई-मडुवा ही जिनके लिए सबसे अच्छा किस्म का अनाज ठहरा उन्हे गेहूँ देना बेकार होगा। वे ले तो लेगे, लेकिन मिट्टी के भाव सारे दाने बेच डालेगे। घूम-फिरकर सहायता का वह गेहूँ सही जगहो पर आ ही जाएगा। विधाता ने गेहूँ और धान सबके लिए थोडे ही सिरजे है ?

ठीक, बिलकुल ठीक, चाचा !—मन को काबू मे करके दुखमोचन ने कहा और हँस पडे।

नित्याबाबू ने झुककर स्टूल पर से चाँदी की डिब्बा खोली। दो बीडे

पान के निकाले। एक दुखमोचन की तरफ बढाया और दूसरा अपने मुँह मे डालकर जर्दा की छोटी शीशी आगे कर दी, आँखो से इशारा किया—लो !

दुखमोचन ने चुटकी-भर ज़र्दा ले लिया और विदा हुए।

नित्याबाबू ने पीछे से कहा—माघ मे मुन्नी का गौना होगा, पाँच-सात मन गेहूँ चाहिए

अटक गए नित्याबाबू फिर, दुखमोचन खुले नही, न पीछे मुडकर देखा ही।

लेकिन नित्याबाबू से नही रहा गया, ऊँची आवाज मे कहा—तुम्हारा ही भरोसा है दुखमोचन, इस बुड्ढे को भूलना नही बेटा !

दुखमोचन क्षण-भर के लिए ठिठक गए, मुडकर पीछे देखा। उसी तरह ऊँची आवाज मे कहा—मैं भला आपको भूलूँगा ? कभी नही ! कभी नही !

खूसट कही के !—बुडबुडाए दुखमोचन और अभी-अभी जो ज़र्दा-पान मुँह के अन्दर डाला था, उसे थूककर आगे बढ गए।

तीन....

कंचन का छोटा दालान लोगो से ठसाठस भरा था।

यह गाँव का वह हिस्सा था जो बेहद घना था और जहाँ कडी मेहनत-मजदूरी करके गुज़ारा करने वाले लोग रहते थे। ये कई जातियो के थे। अच्छी हैसियत के थोडे ही परिवार थे इनमे। भूमिहीनो की ही तादाद ज्यादा थी।

चार सौ मन गेहूँ आया था। हो तो गई थी देर, फिर भी इस गल्ले की जरूरत थी।

तख्तपोश पर दुखमोचन बैठे थे। वेणीमाधव के सामने कापी थी, पेट के बल झुककर फाउटन पेन से वह कुछ लिख रहा था। मधुकान्त तख्त से सटी भीत से उठँगकर खैनी मल रहा था।

आसपास कचन, चुल्हाई, गोनौड, कन्हाई, राधे, परमेसर, सनीचर आदि बैठे थे। इधर-उधर पचासो जने खडे या बैठे दुखमोचन और वेणीमाधव की ओर देख रहे थे। जुलाहो के टोले-मुहल्ले से रहीम और लतीफ आये हुए थे। चमारो की बिरादरी के बूढे बोधू चाचा मौजूद थे।

दो-ढाई घण्टे की माथापच्ची के बाद फेहरिस्त तैयार हुई थी। वेणीमाधव अब उसे अलग कापी मे उतार रहा था।

फी परिवार आधा मन के हिसाब से दो सौ सत्तर परिवारो को एक सौ पैंतीस मन, दस-दस सेर के हिसाब से नौ सौ परिवारो को दो सौ पच्चीस मन, एक-एक मन के हिसाब से पच्चीस परिवारो को पच्चीस मन, कुल जमा ग्यारह सौ पचानवे परिवारो मे तीन सौ पचीस मन अनाज तकसीम किया जाने वाला था।

पूरी लिस्ट तैयार करके वेणीमाधव ने कापी दुखमोचन को थमा दी। देर से बैठा था, जोरो की पेशाब लग आई थी, दालान से बाहर निकल आया।

दुखमोचन ने पेन्सिल से दो-एक जगह जाने क्या ठीक-ठाक किया। लोगो की तरफ इधर-उधर निगाहे घुमाकर बोला—भाइयो, फेहरिस्त तैयार करना झझट का काम होता है। आप सबकी मदद न मिली होती तो भारी दिक्कत का सामना करना पडता। अब यह तैयार है, सुनिए ·

पूरी लिस्ट बाँचकर दुखमोचन ने सुना दी। इस बीच वेणीमाधव अपनी जगह पर आ चुका था और एक बार फिर मद्धू की बाईं हथेली पर सुरती तैयार हो गई थी।

क्यो, ठीक है न ?—दुखमोचन ने लोगो से पूछा।

बौधू चाचा की आँखे फैल गई। उसने लतीफ की ओर देखा। वह पास ही खडा था।

अपनी उँगली से बौधू की बाँह गोदकर भौहो के इशारे से मालूम करना चाहा—क्या है ?

बिना दाँतो वाले पोपले मुँह के अन्दर बूढे की जीभ चचल हो उठी, मगर होठ यो ही खुले रहे। शब्द एक भी नही निकला।

लतीफ बोला—बोलेगा सो नही होता है, बस अन्दर-ही-अन्दर जीभ नचा रहा है !

बोलो ! बोलो !—एक साथ कई आवाजें उठी।

बौधू दुखमोचन की तरफ गौर से देखने लगा। उन्होंने हाथ के इशारे से बढ़ावा दिया—कहो, क्या कहना है?

सरकार—बौधू ने मानो बडी मुश्किल से कहा—दू ठो नाम छूट गया है सरकार!

वह फिर चुप हो गया। दुखमोचन का ध्यान फेहरिस्त के उस अश पर भागा जहाँ चमार भाइयो के नाम आए थे।

बूढा जरा देर तक चुप रहा तो दुखमोचन ने अपनी आँखो के इशारे से उसे वे नाम बतलाने के लिए उत्साहित किया।

बौधू ने कहा—मालिक, एक ठो नाम बुधनी का छूट गया है, दूसरा नाम छूटा है झिंगुर का·

दुखमोचन मधुकान्त और वेणीमाधव की तरफ देखने लगे, उन दोनो की निगाहे रामसागर पर जा अटकी। रामसागर और कचन पर चमारो की बिरादरी मे से अकाल-पीडितो का पता लगाने की जिम्मेदारी सौपी गई थी। उन्होने पाँच नाम दिये थे।

रामसागर ने डपटकर बौधू से पूछा—कौन बुधनी?

—मोसम्मात है, बीमार रहती है बेचारी! आगे-पीछे कोई नही है उसके··

फिर उसने सोमना से पूछा—क्यो रे, जानता है तू बुधनी को?

चौडे चेहरे का बादामी आँखो वाला एक साँवला नौजवान सामने आकर बोला—परसो तक तो वह थी नही, कही चली गई थी सागर-बाबू···

इस पर बौधू ने कहा—चिलबिल की बेवा हैं हुजूर, भूख के मारे नही रहा जाता है तो हाट-बाजार की तरफ निकल जाती है और चार-चार छ-छ दिन बाद लौटती है।

अच्छा, झिंगुर कौन है?—दुखमोचन ने पूछा।

सोमना ने कहा—नदी के पार लखनौली मे चरवाहे का काम करता है बाबू!

—जी हुजूर, टूगर है। न माँ है उसके, न बाप…

बौधू ने लडखडाती जीभ से समर्थन किया।

पाँच सेर अनाज पाने वालो मे बुधनी का नाम दर्ज कर लिया गया। झिंगुर के लिए इसकी कोई आवश्यकता नही समझी गई।

दुखमोचन ने पूछा लोगो से—अब तो ठीक है न ?

ठीक है, ठीक है !—एक साथ ही बहुत-सी आवाजे उठी।

दालान मे भीत की खूँटी से मृदग टँगा था। एक छोकरे ने देर की चुप्पी और स्थिरता से ऊबकर उसे थपथपा दिया तो दुखमोचन भभाकर हँस पडे। मधुकान्त, वेणीमाधव और रामसागर ने भी साथ दिया। फिर तो करीब-करीब सारे ही हँस पडे।

कंचन की बहन बाल्टी मे गुड का शरबत ले आई। पहला लोटा भरकर उसने दुखमोचन को थमाया।

दो घूँट पीकर वह बोले—शाबाश चमकी ! क्या बढिया शरबत बनाया है ! काली मिर्च और सौफ पीसकर डाल दिए है ! वाह री बहिनिया !

अपने शरबत की प्रशसा सुनकर चमकी का चेहरा खिल उठा। मुस्कराकर बोली—तुम्हे खिलाने-पिलाने को भला क्या है हमारे पास भइया ? पानी भी तो पराया ही लाई हूँ !

सचमुच कुआँ काफी दूर था। इधर के दो सौ परिवारो के बीच दो छोरो पर दो कुएँ पडते थे। पिछले चालीस-पचास वर्षों मे आबादी काफी बढी थी। दो कुएँ और होते तो ठीक थे।

दुखमोचन ने दूसरा लोटा नही लिया। मद्धू, वेणी और रामसागर ने भी बारी-बारी से शरबत पिया।

फिर एक-एक टूक सुपारी मिली चारो को।

दुखमोचन दालान से निकल आए और ऐलान किया—दोपहर बाद अपना-अपना अनाज ले जाना !

सभी के चेहरे खुशी मे दमकने लगे।

कचन बोला—मैं बारजा जा रहा हूँ।

चमकी तो रहेगी न ? वेणीमाधव ने पूछा।

माथा हिलाकर आहिस्ते से उसने जवाब दिया—हुँ !

अगले ही क्षण कचन का दालान सूना पड गया। लोग अपने-अपने घर की ओर चले गए थे।

मधुकान्त और रामसागर कुछ दूर तक साथ आकर दुखमोचन और वेणीमाधव से अलग हो गए।

ये दोनो एक तरफ के रहने वाले थे।

चलते-चलते दुखमोचन ने पूछा—तुम्हारी खुजली का क्या हाल है, वेणी !

—अब ठीक है दुखन भैया !

दुखमोचन ने पीछे घूमकर देखा। सचमुच चकत्ते सूख गए थे और वेणी का बदन चिकना हो गया था। बस, सूखी खाल के हल्के छिलके भुस की तरह यहाँ-वहाँ दिखाई दे रहे थे।

बोले—भैया की भी खारिश छूट चली है, जोगी की अम्मा को भी आराम है।

सबको आराम है दुखन भैया !—वेणी ने कहा—गन्धक का मलहम बैदजी ने इतना अच्छा तैयार किया है कि कुछ न पूछो ! गन्धक और नारियल का तेल तुम्हारी कृपा से आ ही गया था, ऊपर से बैदजी ने भी अपनी तरफ से उसमे कोई बूटी डाल दी थी।

दुखमोचन बोले—वह कोई मामूली बैद थोडे है ? आयुर्वेद की आचार्य-परीक्षा मे अव्वल आया था। सोने के दो तमगे मिले थे। चीरफाड की डाक्टरी ट्रेनिंग भी ले रखी है। छोटा नागपुर इलाके की किसी बडी डिस्पेन्सरी का इन्चार्ज है। पता है कितना पाता है ?

वेणी ने इन्कारी मुद्रा मे सिर हिला दिया।

—दो सौ !

—मगर उसके अपने गाँव मे लोगो की अच्छी राय नही है उसके

बारे मे, यह क्या बात है दुखन भैया ?

दुखमोचन को हँसी आ गई। मुँह से निकला—घर की मुर्गी दाल बराबर।

आगे वेणीमाधव का छोटा भाई मिला। उसने दुखमोचन को बताया कि लोगो मे अजीब-अजीब अफवाहे फैल रही है।

दुखमोचन क्षण-भर के लिए रुक गए, पूछा—एक-आध बता भी दो जयमाधव !

जयमाधव बीस-बाईस का नौजवान था, एक आँख का भेंगा। मुँह से लफ्ज़ जल्दी-जल्दी निकलते थे। तैश मे आकर बोलता तो लगता कि भाड मे मक्के डाल दिए है और अब खीलो का फूटना फटाफट शुरू हो गया है।

उसने बताया—पहली अफवाह है कि यह गेहूँ ऐसे हैं कि मशीन से इनका सत निचोड लिया गया है, गेहूँ नहीं, गेहूँ की सीठी है यह ! दूसरी अफवाह है कि जो भी कोई गेहूँ लेगा, उसे जबरन कोसी नदी के किनारे ले जाएँगे; अफसर लोग उससे महीनो बिना मजदूरी के काम लेंगे। तीसरी अफवाह है कि अगले साल सरकार चार गुना ज्यादा अनाज वसूल कर लेगी

पतली मूँछो वाले होठ खिल उठे। दुखमोचन की मुस्कराहट बडी प्यारी लगती थी लोगो को। जयमाधव उनकी तरफ देखता रहा कि मुस्कान के पीछे क्या छिपा है।

लेकिन वह मुस्कराकर ही रह गए, बोले एक शब्द भी नही।

वेणीमाधव का मकान करीब था, वे दोनो भाई उधर गलियारे मे मुड गये।

मन-ही-मन नित्याबाबू की इन कमीनी हरकतो को कोसते हुए दुखमोचन घर पहुँचे, तो सूरज ठीक ऊपर आ चुका था।

सुखदेव खा-पीकर लेट चुके थे। यह उनका दैनिक दस्तूर था। वज्र गिरे चाहे आग लगे, धरती पर ओले बिछ जाएँ चाहे बादल टूट

पडें, सुखदेव बाबू दिन का खाना खाकर दो घण्टे सोएँगे ज़रूर !

मामी ने धीरे से कहा—बस, इतनी जल्दी लौट आए ? और काम नही था ?

मुस्कराए दुखमोचन, कहा नही कुछ ।

उत्तर वाले घर के बरामदे पर दो चटाइयाँ बिछी थी । पाँच गज़ लम्बा लाल कपडा उन पर फैला था । अपर्णा और पद्मा कैंची लेकर सफेद कागज़ से बडे-बडे अक्षर तैयार कर रही थी । पास ही कडाही मे लेई रखी थी ।

घर के अन्दर घुसना था दुखमोचन को, पूछ लिया—क्या हो रहा है, अप्पी ?

बडी-बडी आँखें पिता के चेहरे पर जमाकर अपर्णा ने कहा—दुर्गा-पूजा मे अबकी बाहर के मेहमान आने वाले हैं न ! मेहराब बनेगा, उस पर लाल कपडा टाँगा जाएगा बापा !

—अच्छा ऽऽ !

हाँ चाचाजी ! —पद्मा ने सहेली का समर्थन किया ।

दुखमोचन क्षण-भर के लिए घर के अन्दर गए; कुर्ता खोलकर खूँटी पर टाँग आए । ज़ोरो की भूख लगी थी । सबेरे चिउडा-दही और चीनी का नाश्ता करके निकले थे, अब पाँच घण्टे बाद पेट बिलकुल खाली था ।

रसोईघर के बरामदे पर खाने बैठे । मामी पखी लेकर हवा करने लगी । दस-बारह कौर खाकर आधा गिलास पानी पिया और सामने वाले दूसरे बरामदे पर पद्मा की तरफ देखा ।

पद्मा का बडा भाई मिहिरकुमार कॉलेज मे पढता था । नाटक मे अभिनय करने का तो शौक था ही, कविता और कहानी लिखने का भी शऊर था उसमे । शशिकान्त, नवकुमार, अमलेंद्र, प्रज्ञाकर, रविनाथ, मिहिरकुमार ··यही चार-छ नौजवान तो थे जो कॉलेजो मे पढ रहे थे । गरमी और दुर्गा-पूजा की लम्बी छुट्टियो मे जब ये लोग आ जुटते तो

कुछ-न-कुछ इनका अपना प्रोग्राम चला करता।

अभी-अभी अपर्णा ने कहा था, बाहर के मेहमान आ रहे हैं। दुखमोचन की समझ मे नही आ रहा था कि यह कैसा खेल लडके रचाने वाले है। क्या करेगे मेहमान यहाँ आकर ? इस बार तो नाटक की भी कोई तैयारी नही नजर आ रही थी। ··उन्होने चाहा कि चुपचाप खाना खा ले और घण्टा-आधा घण्टा पलग पर पीठ टिकाकर आराम करे। लेकिन नही, नही रहा गया।

खाते-खाते बार-बार अपर्णा और पद्मा की ओर देखने लगे। मामी ने बडे जतन से ममाला भरकर करेले तले थे। आज दुखमोचन ने न तो करेलो की प्रशसा की, न दुवारा माँगा ही। उनका ध्यान ही नही था इस ओर। मामी को ताडते देर नही लगी। छोकरियो पर गुस्सा चढ रहा था कि जाने क्या कह दिया है इनसे। पखी वाला हाथ ठुड्डी से अडाकर पूछा—करेले अच्छे नही बने बबुअन ?

बहुत अच्छे है मामी !—दुखमोचन जैसे-तैसे बोले तो आत्मा ने कहा, क्यो ठगने हो बेचारी को ! साफ-साफ बतला दो कि नही मालूम, कैसे बने है करेले और कैसी बनी है दाल ·

और ला देती हूँ—मामी करेले लाने गईं।

दुखमोचन ने पद्मा से पूछा—कौन-कौन आने वाले हैं बाहर से बेटा ?

—भैया से मालूम करके बतलाऊँगी।

—तुम्हे पता है अप्पी ?

—नही पिताजी ! हम तो सिर्फ भोलण्टियर है इन लोगो के। काम बेशक लाद दे, बात एक भी नही बतलाएँगे।

—हाँ चाचाजी, हमसे काम-ही-काम लेते है

दोनो हँसने लगी। दुखमोचन भी मुस्कराए।

थाली मे दो करेले और कटोरे मे दाल डाल दी मामी ने। कहा—कौन आने वाले है ? कौन आने वाले है ? अरे, तुम्हारे दादा-परदादा

तो नही आने वाले हैं न ? क्यो इतना परेशान होते हो छोटी-छोटी बात पर ? लाख समझाती हूँ कि कम-से-कम खाते समय तो मन को फिकर और फतूर से अलग रखा करो दाल आज तुम्हारी ही पसन्द की पकाई थी, बतलाओ क्या है ?

दुखमोचन ने चट से कहा—वाह, खूब सोधी है ! भाड मे भुने हुए मूँग की दाल जैसी तुम खिलाती हो वैसी और कही नही नसीब होती मामी !

मामी का चेहरा खिल उठा। दुखमोचन के शब्दो ने अब के अन्दर पहुँचकर दिल के वे तार छू लिये थे जो कि आस्था, अभिमान और अनुराग मे से कढे होते हैं।

हाथ धोकर फिर से पखी झलने बैठ गई थी मामी। सहज सावधानी से दुखमोचन खाना खा रहे थे और मामी की निगाहे उनके चेहरे पर जमी थी। • काले और मुलायम बाल तरतीब से छँटे थे। पतली-छोटी मूँछें साफ दाढी वाले गोल चेहरे पर खूब फब रही थी। नाक पर तिल का निशान था, मामी का ध्यान उस पर आकर अटक गया।

खाना खत्म हुआ तो बोली—गाय ने दूध देना बन्द कर दिया है, कई दिनो से बिना दही का खा रहे हो।

अजी, सब चलता है घर मे—दुखमोचन बोले और आखिरी दो कौर भात मुट्ठी मे लेकर उठ गए। कुत्ता जाने कब का बैठा था, वह भी उठा।

लडकियाँ अपने काम मे मशगूल रही। टुनू कही बाहर गई हुई थी खेलने। बहू उडद का बेसन लपेटकर अरुई के पत्तो से 'अरकोछ' बना रही थी। दुखमोचन हाथ धो आए, मामी से पान-जर्दा लिया और अन्दर जाकर पलग पर लेट गए।

अखबार देखते देखते, पता नही कब आँखें झिप गई।

मधुकान्त ने आकर जगाया तो ढाई बज रहे थे।

बाहर दालान पर और अँगनई मे भारी भीड इकट्ठी थी। वेणीमाधव

किसी पर गरज रहा था। बीच-बीच मे सुखदेव और मधुकान्त की आवाज सुनाई पडती थी।

मामी ने पानी लाकर थमाया। दुखमोचन ने कुल्ली की, आँखो को पोछा। एक बीडा पान और चुटकी-भर जर्दा मुँह के हवाले करके दालान की ओर निकल आए।

दालान के बरामदे मे गेहूँ की बोरियाँ अटी पडी थी—फिलहाल दस बोरियो का अनाज निकाला गया था। तराजू और पनसेरी लेकर रामसागर तोलने के लिए मुस्तैद था। उसकी मदद मे राधे, कन्हाई और मद्ध आदि थे। वेणीमाधव चटाई पर बैठकर मास्टर टेकनाथ को झाड रहा था।

दुखमोचन आकर वेणीमाधव के पास बैठ गए। कहा—नाहक लोगो को बैठा रखा है, घोचू हो तुम भी.एक नम्बर के !·· रामसागर, मुँह क्या देखते हो मेरा। शुरू करो न !

वेणीमाधव के हाथ मे कापी थी। दुखमोचन लेने लगे तो रोककर उसने कहा—नही दुखन, इस बात का निपटारा कर दो ! वह काम तो खैर होगा ही ··

आँखो-भौंहो के इशारे से पूछा दुखमोचन ने—कैसी बात और कैसा निपटारा ?

वेणीमाधव ने कहना शुरू किया—मास्टर टेकनाथ की राय मे ऊँची जात वालो के प्रति हमने अन्याय किया है। अनाज का ज्यादा हिस्सा छोटी जात वालो को मिला है। दूसरा एतराज मास्टर को यह भी है कि आँखे मूँदकर सभी को गेहूँ देना समझदारी का काम नही है···

बीच मे ही मधुकान्त ने टोका—समझदारी का काम होगा नित्या-बाबू जैसे बडे लोगो को मालपुए खाने के लिए दस-दस मन गेहूँ यो ही दे देना !

क्यो किसी का नाम लेते हो ?—दुखमोचन बोले।

तब उन्होने टेकनाथ से पूछा—भूख की भी कोई जात होती है ?

मास्टर बगलें झाँकने लगा। वेणीमाधव ने लोगो से कहा—भाइयो, यह टेकनाथ मास्टर अपने स्कूल मे लडको को भी छोटी जात-बडी जात वाली यही बाते पढाते होगे। गाधीजी जीत होत तो आकर अपने हाथो से इनको इनाम देत ।

इस पर नौजवानो ने ठहाका लगाया। मास्टर का चेहरा सूखी लौकी की तरह सफेद पड गया।

छोड दो!—दुखमोचन न इशारे से लोगो को चुप कराया और उधर अनाज तुलने लगा।

वेणीमाधव नाम पुकारता था, रामसागर तोलकर दे रहा था। लोग टोकरी या कपडे मे ले रह थे।

दस-पन्द्रह जने ले चुके तो दुखमोचन ने वेणीमाधव से रुकने को कहा। रामसागर भी रुक गए; कन्हाई और गाधे भी रुक गए।

दुखमोचन उठकर पहले पान की सीठी थूक आए, तब कहा—भाइयो, इस अनाज को खैरात न समझना और न गुलामी का चारा-चोगा ही समझना इसको। यह तो एक किस्म की अगाऊ मजदूरी है जिसके लिए आप सभी को अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार कभी-न-कभी काम करना होगा। आगे हम बाँध तैयार करेंगे, पोखरो की मरम्मत करेंगे, कुओ की खुदाई होगी, गाँव की तरक्की के दसो काम होगे। एकजुट होकर हमे यह सब करना होगा। जिसके पास अनाज है और पैसा भी है, उन्हे हमने एक भी दाना देना वाजिब नही समझा। उन्ह तो उलटे अपने दुखी भाइयो की मदद करनी चाहिए थी, मगर उनकी नीयत मैं समझ नही पा रहा हाँ, एक बात और • मुझे मालूम हुआ है कि गाँव के दो-चार स्वार्थी अब आपको फुसलाएँग और बहकाएग, सस्ती कीमत पर वे आपसे गेहूँ लेना चाहेगे, भाइयो, उनसे होशियार रहना। इस अनाज को बेचने की तो बात ही नही, हाँ, बदलना हो किसी को तो हम आकर बताए। बस, यही मुझे कहना था

सभी गम्भीर होकर दुखमोचन की बाते सुन रहे थे। अब फिर

नामो की पुकार होने लगी और अनाज तुलने लगा।

शाम तक ढाई सौ मन अनाज बाँट दिया गया। बाकी बँटवारा अगले दिन के लिए मुल्तवी रखकर वेणीमाधव, रामसागर वगैरह उठ खडे हुए।

राधे और कन्हाई ने दालान वाले बाहरी कमरे मे बाकी अनाज सहेज दिया। कुल एक सौ साठ बोरियाँ थी, अब पचपन रह गई थी और पाँच बोरियो का अनाज नीचे ढेर लगा था।

कमरे मे ताला लगाकर चाबी रामसागर मामी को दे आया।

चमकी ने झाड-बुहारकर दालान साफ कर दिया और बोली—जाती हूँ भैया, कल फिर आऊँगी।

अपर्णा ने आकर कहा—चमकी बुआ, तुम्हे मामी बुला रही हे।

अभी आई बिटिया!—चमकी बोली। कुए पर जाकर उसने पानी निकाला, हाथ-मुँह धोए। आँचल से चेहरा पोछती हुई अन्दर आँगन की तरफ बढी मामी से मिलने।

सूरज कब का डूब चुका था। आसिन का गाढा-नीला आसमान मानो आँखो का दुख-दर्द खीचने को ही फैला हुआ था।

दुखमोचन और वेणीमाधव उत्तर-पूरब की तरफ बढकर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की सडक पर घूमने निकले।

सडक नदी के किनारे-किनारे जाकर आगे पच्छिम को मुड गई थी। दोनो तरफ नीम, आम, जामुन, पाकड और पीपल के पेडो की कतारे बडी प्यारी लगती थी। हाल ही मे रोडे जमाकर ऊपर-ऊपर कोलतार बिछाया गया था। टायर के पहियो वाली गाडियाँ, इक्के, टम-टम, रिक्शे और पैदल चलने वाले ही इस पर से आते-जाते थे। मामूली बैलगाडियो के लिए सडक से सटकर लेकिन अलग लीके थी।

नदी और सडक के दरम्यान खेत-ही-खेत नही थे, अमराई भी थी और बाँसो के जगल भी थे। उस पर खिले हुए काँस और सरकण्डे शाम के इस झुटपुटे मे चमक रहे थे। दूर,पूरब मे मशहूर पाडे परिवारो के

पक्के मकान शान से खडे थे, लखनौली के खानदानी ज़मीदारो की नई-पुरानी हवेलियाँ थी ।

जहाँ सडक पच्छिम को मुडती थी, वही बाई तरफ लडको के लिए खेलने का मैदान था ।

दस-पन्द्रह नौजवान गेद खेल रहे थे । अँधेरे मे चेहरा साफ-साफ नही दीखा किसी का ।

दुखमोचन सडक छोडकर नीचे मैदान मे उतर आए । वेणीमाधव से कहा—मिहिर को पुकारो ।

बुलाने पर मिहिर कुमार आकर सामने खडा हो गया—लम्बा-छरहरा गोरा नौजवान ! अँधेरे मे भी चमक रहा था । कन्धे पर हाथ रखकर दुखमोचन ने पूछा—दुर्गा पूजा मे तुम लोग इस बार नाटक-वाटक नही दिखलाओगे ?

नाटक तो नही हो सका इस वर्ष—मिहिर बोला और चुप हो गया । दुखमोचन हँसने लगे, हँसते-हँसते वेणीमाधव का हाथ दबा लिया । वह इस सकेत का मतलब नही भाँप सका ।

सुना, बाहर से कुछ लोग आएँगे—दुखमोचन ने कहा ।

—किसने कहा आपसे ?

—मै भी इसी गाँव का रहने वाला हूँ बच्चा ! हूँ कि नही ?

मिहिर पशोपेश मे पड गया । हो न हो, इन्हे हमारा प्रोग्राम मालूम हो गया है । फिर खुलासा बता ही क्यो न दें

बोला—कुछ कवियो को हमने राजी कर लिया है काका ! दो प्रोफेसर भी आ रहे हैं । लोग हिन्दी और मैथिली की कविताएँ सुनेगे··· अच्छा रहेगा न ?

बाछे खिल गई दुखमोचन की । बेताबी से पीठ ठोकने लगे लडके की, और कई बार मुँह से निकला—शाबाश बेटे ! शाबाश !

—कुल कितने रुपये लगेंगे इसमे ?

—हद-से-हद चालीस । खाना और नाश्ता अलग···

—कोई बात नही, दस रुपये कल मुझसे ले लेना।

—अच्छी बात है काका, आऊँगा कल।

—अब जाओ खेलो!

मिहिर कुमार को किसी से बातें करते देखकर दो-तीन लडके और आ गए थे। दुखमोचन ने इशारो से सभी को खेल पर वापस भेज दिया और खुद भी लौट चले।

वेणीमाधव अपने घर गया, दुखमोचन भी सीधे अपने यहाँ आए।

सुखदेव शाम की पूजा खत्म करके किसी से मिलने निकले थे। गाय बाहर बँधी थी, डाँस और मच्छर बेचारी को परेशान किये हुए थे। पुरानी फूस और कण्डो के टुकडे जलाकर धुआँ देने का इन्तजाम किया गया, लेकिन आग बीच मे ही ठण्डी पड गई थी।

अपर्णा को बुलाकर दुखमोचन ने आग मँगवाई। अँगोछे से हवा करके घूरे को फिर से सुलगा दिया। धुँआ लगने पर डाँस-मच्छर भागे, तो गाय की बेचैनी कम हुई और अब वह इत्मीनान से सानी-भूसी खाने लगी।

हाथ-पैर धोकर दुखमोचन चारपाई पर बैठे ही थे कि एक औरत सामने आकर खडी हो गई—माथे पर गठरी लिए हुए; छोटी-सी लडकी थी बगल मे।

—कौन है?

—मै हूँ सरकार, हरखू की माँ अनाज वापस लाई हूँ ··

इशारा पाकर लडकी ने गठरी बरामदे पर दुखमोचन के सामने रख दी। उन्होने पूछा—क्या बात है?

बुढिया बोली—सरकार, पचीस रुपया मनिआडर आया है आज ·· अब मैं हाट-बाजार से अनाज खरीद लाऊँगी। यह गेहूँ किसी दूसरे को दीजिएगा मालिक!

हरखू की माँ का यह ईमान देखकर दुखमोचन दग रह गए। भीत से पीठ टिकाकर बैठे थे, लेकिन अब कमर सीधी कर ली। अँधेरे मे

बुढिया या लडकी किसी का चेहरा सूझ नहीं रहा था। कपडे दोनों के ही मैले थे। दुखमोचन की निगाहों मे इस मजदूर-परिवार की एक-मात्र झोपडी घूम गई। हरखू तीन महीन पहले फारबिसगज गया था। दस रुपये पहले और पचीस अब भेजे थे, बस लेकिन चार मुँहों वाले परिवार के लिए तीस-पैंतीस की यह मामूली-सी रकम काफी हुई। जल्दी-जल्दी मे दुखमोचन ने इस पर अपना दिमाग लडाया, मगर किसी नतीजे पर नहीं पहुँच पाए। आखिर बुढिया ने कहा—नाम तो अब दर्ज हो चुका है, कौन वापस लेगा? ले जा अपना अनाज तू

हरखू की माँ आगे बढ आई। बरामदे से सटकर खडी हुई और चाहा कि दुखमोचन के पैर पकड ले। नहीं पहुँच सके उनके पैरों तक बेचारी के हाथ तो गिडगिडाकर प्रार्थना की—दुहाई मालिक की! दुहाई सरकार की! यह अनाज वापस रख लीजिए। यह मामूली गेहूँ नहीं है कि आसानी से हजम होगा। धरम का अनाज है मालिक! अब इस वक्त मै झूठ कैसे कहूँ कि हमारे घर मे कुछ नही है। पचीस रुपैया है हाथ पर, दो-पौने दो मन गेहूँ हुआ सरकार! तो झूठ-मूठ मै कैसे कहूँ कि छटाँक-भर भी दाना नही है घर मे!

दुखमोचन समझ गए कि बुढिया अब किसी भी हालत मे यह अनाज नही उठाएगी। उन्होने अपर्णा को बुलाया। वह टोकरी ले आई।

टोकरी मे गेहूँ डालकर बुढिया ने गठरी वाला कपडा साथ लाई लडकी को थमा दिया और उल्टे आसीस देती हुई लौट पडी।

पाँच सेर गेहूँ थे। अपर्णा टोकरी अन्दर ले आई।

दालान पर अभी बाहरी आदमी एक भी नही था। मामी ने झाँक-कर देखा और सामने आकर खडी हुई।

अनाज की वापसी का हाल मालूम करके बोली—इसी ईमान पर तो दुनिया-जहान टिका है बबुअन!

दोनो थोडी देर चुप रहे, जाने क्या-क्या-सोचते रहे दोनो!

फिर मामी ने कहा—चलो, खाना खा लो।

..चार

अगहन शुक्ल पंचमी को जनकपुर-धाम मे हर साल धूम-धाम से रामजी का ब्याह होता है। भारी जुटान होती है। दूर-दूर से लोग पहुँचते है दर्शन करने। सन्तो की पल्टन भी अपनी छावनी डाल देती है। अयोध्या, चित्रकूट, काशी की बोली और भेख सुनने-देखने को मिलते है।

रामसागर की माँ ने कभी मनौती मानी थी और इसके मुताबिक वह प्रतिवर्ष अगहन मे जनकपुर-धाम पहुँचता था। पाँव-पैदल जाता और पाँव-पैदल आता। अक्सर जान-पहचान के साथी मिल जाते या टोले मुहल्ले की औरते चावल-चिउडा की गठरी लेकर विदा होती साथ-साथ।

हमजोली इसी वजह से रामसागर को कभी-कभी 'औरतो का लीडर' कह देते और यह बेचारे को बुरा लगता

इस बार मुंशी पुलकितदास का भतीजा और टेकनाथ का छोटा भाई साथ हो गए। एक का नाम था नवलकिशोर, दूसरे का रमानाथ।

सबकी राय हुई कि जायेंगे पैदल, आयेंगे रेल से। जयनगर मे सिनेमा देखा जाएगा और

'और' पर आकर नवल रुक गया, रमानाथ की तरफ देख रहा था। बाईं आँख दबाकर उसने कुछ इशारा किया।

—क्या बात है ?

—कुछ नही सागर भाई !

—उहुँ !

—नही सागर भाई, अपनी कसम !

रमानाथ ने जोर देकर कहा तो सागर को तसल्ली हो गई, कोई खास बात नही थी। मगर कोई बात थी तो जरूर।

रामसागर ने अब के नवल से पूछा—क्या बात थी, तुम बताओ।

मै बता दूँ सागर भाई ?—रमानाथ ने कहा—कहेंगे तो नही किसी से ?

—उहुँ ?

—शादी से पहले ही अपनी बीवी को देखना चाहता है नवल।

रामसागर भभाकर हँसा और बोला—अब यह नई चाल चला रहे हो तुम लोग ? पहले तो कभी नही सुना गया ऐसा

तो अब सुन लीजिए !—नवल ने कहा और मुस्करा दिया। पल-भर रुककर बोला—और रामजी ने क्या किया था ?

—शादी से पहले ही सीता को कई बार देख लिया था—रमानाथ का जवाब था।

—वह आदमी नही, देवता थे। रामसागर के मुँह से निकला।

नवल ने उँगली चटखाई और कहा—आदमी होते तो एक-आध नजर देखकर ही सन्तोष कर लेते ..

सभी हँसे इस पर।

रमानाथ ने कहा—जयनगर हाईस्कूल मे नवल का भावी ससुर मास्टरी करता है, परिवार के लोग साथ रहते है। लडकी मिडल पास

कर चुकी है सागर भाई ! क्या बुरा है, देख आएगा ।

रामसागर को भला क्या एतराज था ! हाँ जयनगर और मधुबनी-दरभगा घूमते हुए घर पहुँचने मे खर्चा जरूर ज्यादा पडेगा इसकी जिम्मेदारी नवल और रमानाथ ने अपने ऊपर ले ली ।

रमानाथ और टेकनाथ का बाप जिन्दगी-भर बगाल मे ढाका के नजदीक नारायणगज या कही और रसोइया का काम करता रहा । खूब गाँजा पीता था । छोटे लडके को कई साल तक साथ रखे रहा । लुक-छिपकर इस रमानाथ ने भी चिलम से नाता जोड लिया था। रामसागर ने पिपरा बाजार मे एक सेठ की नौकरी की थी, चार वर्ष की बाजारू रहन-सहन से उसे गाँजे का चस्का लग चुका था। तरुण मुन्शी नवल-किशोर इन मामलो मे रमानाथ का चेला था ।

अँधेरे मे गाँव के बाहर नदी-किनारे या दुर्गाजी के मन्दिर के नजदीक शिवजी की मठिया मे इन गँजेडियो के अनहद नाद गूँजा करते । नवल की चाची और रामसागर की माँ ने अपने घरो को धुआँखोरी के अड्डे नही बनने दिया, मगर रमानाथ की भाभी उन्हे काफी छूट देती थी और वह भी तब जबकि टेकनाथ घर से बाहर होता । पीछे बेचारी गुग्गुल की धूप-धूनी देकर गाँजे की गन्ध दबाया करती ।

जनकपुर-धाम से तीनो जने लौटे तो पाव-भर नेपाली गाँजा साथ था। कागज़ की कई तहो मे लपेटकर पुडिया बना ली गई थी । ऊपर से जो कपडा डाला था, उस पर अच्छी तरह चन्दन का लेप चढाया था। फिर ऊपर से एक पडा। रामसागर ने उसे चावल की अपनी गठरी के अन्दर दबा लिया तो भी दिल धडक रहा था।

नवल और रमानाथ आगे-आगे थे । रामसागर के बाएँ कन्धे पर गठरी थी, दाहिने हाथ से लोटा थामे हुए था । गरीब और गुनहगार निगाहो से वह बार-बार साथियो को देख लेता था ।

जयनगर इस तरफ हिन्दुस्तानी सीमा पर पूर्वोत्तर रेलवे का आखिरी स्टेशन है। आबकारी विभाग के अधिकारियो की चौकस निगरानी से

बचकर निकलना आसान नही था। देहात का एक मामूली चालक उनकी आँखो मे धूल झोककर यो निकल जाए, हो नही सकता।

ट्रेन छूटने को थी, ह्विसल हो गया था। गाडी की रवानगी का वक्त नोट कराकर स्टेशन मास्टर गार्ड के दस्तखत ले चुका था।

यह ट्रेन सीधे पहले जयघाट जाने वाली थी। बीच मे कही भी बिना उतरे-चढे एक ही गाडी पर सवार होकर पटना जाने वालो के लिए इधर से एकमात्र यही गाडी थी। पिछले कुछ अरसे से ब्राच लाइन की इस शाखा मे भी नई किस्म के खूबसूरत डिब्बे दिखाई पडने लगे थे। और, शाम को खुलने वाली यह थ्रू ट्रेन तो बिलकुल नये डिब्बो की बनी थी· फर्स्ट क्लास के कम्पार्टमेण्ट मे से एक नेपाली लडकी बाहर खडे हमवतनी नौजवानो से बातें कर रही थी।

पतली नली से ढेर-सी दबी भाप छोडकर इजन ने हल्का-सा धक्का दिया, पीछे खिसका, फिर आगे की ओर बढा। नेपाली लडका प्लेट-फार्म पर दो कदम पीछे हट गया।

कि एकाएक गार्ड ने लाल झण्डी दिखाई, इजन रुक गया।

गार्ड के पास सादे लिबास मे दो आदमी खडे हो गए थे, साफ था कि उन्ही के कहने से गाडी रुकी है।

गार्ड के पास जो दो आदमी खडे थे, उनमे से एक सीधे रामसागर के सामने आ गया। वह प्लेटफार्म की तरफ मुँह करके खिडकी से लगा बैठा था, हथेली पर सुरती थी।

प्लेटफार्म पर खडे-खडे ही उस आदमी ने खिडकी से अन्दर झाँका। बेत की छडी से रामसागर की गठरी छूकर पूछा—किसकी है ?

कोई कुछ नही बोला। दुबारा उसने डपटकर पूछा—किसकी है यह ?

रामसागर अब भी गुम रहा, लेकिन साथ बैठे बूढे ने उसकी बाँह पकडकर कहा—बतलाते क्यो नही हो ?

रामसागर ने बडी कोशिश की कि चेहरे का रग न उडे, बोली-

वाणी से कमजोरी न प्रकट हो, लेकिन इसमे वह असफल रहा। नवल पीछे ही रह गया था, बाजार मे। रमानाथ दूसरे डिब्बे मे एक दोस्त से बाते कर रहा था।

उतरो! उतरो!—आबकारी दारोगा ने हाथ पकडकर रामसागर को खीचा। गठरी तो पहले ही उसके कब्ज़े मे आ गई थी।

रामसागर अछता-पछताकर ट्रेन से नीचे उतरा।

गार्ड ने सीटी दी और इजन खिसका।

सरकती गाडी से झाँक-झाँककर मुसाफिर राममागर को देख रहे थे और आवाज़े उठ रही थी गाँजा है! गाँजा है!

रमानाथ अन्दर-ही-अन्दर परेशान हो उठा। ट्रेन मधुबनी रुकी तो उतर गया। अकेले गाँव पहुँचने की उसकी हिम्मत नही हुई।

अगले रोज ही रामसागर को पुलिसवालो ने मधुबनी जेल की हाजत मे पहुँचा दिया। छोटी अदालत ने दो दिन के अन्दर ही तुरत-फुरत तीन हफ्ते सादी कैद की सजा का फैसला सुना दिया। वह तो खैर हुई कि ऐन मौके पर दुखमोचन को खबर मिल गई और उसने जमकर पैरवी की, वरना तीन महीने जेल की खिचडी खानी पडती। यो रामसागर रमानाथ को भी उसी दम ट्रेन मे पकडवा देता, मगर उसके नेक दिल ने कहा—क्या है, अकेले भुगत लूँगा। जान-बूझकर किसी ने मुझे थोडे फँसाया है?

पीछे दुखमोचन ने जासूसी छानबीन की तो पता लगा कि नित्या-बाबू का ही यह सारा प्रपच था। रमानाथ और नवलकिशोर को उन्होने पट्टी पढाई थी कि नेपाली गाँजा लेकर जनकपुर-धाम से साथ-साथ लौटो और किसी तरह रामसागर को आबकारी विभाग वालो के हवाले कर दो।

दुखमोचन दूसरी बार जेल मे मिलने गये तो उसने बताया—ट्रेन मे मुझे बैठाकर रमानाथ प्लेटफार्म पर देर तक घूमता रहा, कई बार स्टेशन के अन्दर-बाहर गया-आया। तुम्हारा शक वाजिब है दुखन भैया, उसी ने आबकारी इन्सपेक्टर को सूचना दी होगी। पाजी कहीं का!

—नवल कहाँ रह गया था ?

—होने वाले ससुर के यहाँ बैठा था ।

—अच्छा, एक बात तो बताओ, तुम गैर-कानूनी गाँजे के इस झमेले मे पडे ही क्यो ? भारी गधे हो ! खुद तो बदनाम हुए ही, गाँव की हमारी सारी जमात को तुमने बदनाम किया । लोग कहते हैं, आपका साथी गाँजा-केस मे सजा पाकर जेल की खिचडी खा रहा है !

—अब कान पकडता हूँ अपने कि

—मुझे नही मालूम था कि तुम गाँजा के ऐसे गुलाम हो···

काफी फजीहत हुई रामसागर की, मगर वह मुँह लटकाए सब-कुछ बरदाश्त कर गया ।

पत्नी, दो बच्चे। बस, घर मे और कोई नही था। रामसागर भूमिहर खानदान का गरीब किसान था । खेत थोडे थे, खींच-खाँचकर किसी तरह गुज़ारा होता था । बीवी शीलवन्त और सयानी थी, किफायत में निभा लेती थी ।

रामसागर लहेरियासराय की जिला-जेल से रिहा हुआ तो फाटक पर ही उसे वेणीमाधव और मधुकान्त मिले । वे अपने मित्र को लेने ही वहाँ पहुँचे थे ।

वेणीमाधव ने मज़ाक किया—घबराओ नही, तुम्हारा माल ले आया हूँ ।

अचकचाकर रामसागर ने कहा—कैसा माल भाई ?

मद्धू ने चिलम पीने की मुद्रा बनाई, दोनो हाथ नाक-मुँह से लगे थे···

रामसागर दबी आवाज मे बोला—भूल किससे नही होती भाई ? मद्धू ने उसके कान मे कहा—भैया, नाराज़ मत होना, मैंने भी कभी ··

—चुप पाजी—मुस्कराकर वेणीमाधव ने मद्धू को मीठी फटकार बताई ।

तीनो हँसते-हँसते बडी सडक पर आये ।

रात को तीनो ने होटल मे साथ-साथ खाना खाया, फिर सिनेमा देखने गये । एक बजे की ट्रेन पर सवार होकर तीन बजे पिपरा बाज़ार स्टेशन पर उतरे और सुबह-सुबह घर पहुँचे ।

घर पहुँचते ही पहला काम रामसागर ने यह किया कि गाँजा पीने की दोनो चिलमे जाँता पर पटक-पटककर टूक-टूक कर डाली और उन ठीकरो को बटोरकर बाँस के जगल मे फेंक आया । फिर नदी मे नहाने गया ।

वेणीमाधव के दालान पर बैठकर रात के वक्त रामसागर ने जेल के अपने अनुभव कई रोज़ सुनाए । दिन का वक्त आजकल खेत-खलिहानो मे बीतता था । जिनकी खेती ज़्यादा थी, वे तो और भी व्यस्त रहते ।

बाढ ने आसपास के इलाको मे धान की खेती को बरबाद कर दिया था इस वर्ष, लेकिन बाँधो की रोक-थाम के कारण टमका-कोइली गाँव के किसानो को छाती नही पीटनी पडी । पचास प्रतिशत सफलता मिल ही गई ।

इन दिनो दुखमोचन भी धान की अपनी फसलें कटवाने और उगहवाने मे, खलिहान की निगरानी करने मे जी-जान से लगे हुए थे । कातिक के अन्त मे सुखदेव को कई दिन तक बुखार आता रहा । वह अब भी कमजोर थे, इससे दुखमोचन की परेशानी बढ गई थी ।

पडोस के गाँव सिमरौन मे एक किसान की खडी फसल खेत मे ही जला दी गई थी । इसी तरह मौजे पुनाई चक मे किसी की फसल रात-ही-रात मे कटकर कहाँ चली गई, पता तक नही चला गाँव वालो को ।

इन पाँच गाँवो की एक ही पचायत थी जिसमे दस नामज़द मेम्बर थे । टमका-कोइली से पुलकितदास और दुखमोचन पच थे । अपने गाँव की पचायत पिछले दो-तीन वर्षों से सोई-सी थी । कही कुछ झगडा-टटा उठ खडा होता तो पाँच गाँवों की यह पचायत जुटती और जो कुछ फैसला होता उसकी रिपोर्ट अचलाधिकारी साहब तक पहुँचानी पडती ।

धान की खडी फसलो के जलाने और चोरी-चोरी काट लेने की ये जो शिकायते पचायत के सामने आई, उन्हे दूर करने के बारे मे पचो ने कई उपाय सोचे—थाना से सशस्त्र सिपाहियो की मदद, चौकीदारो की तादाद बढाना, ग्रामरक्षा-समिति का सगठन, फसलो की निगरानी के लिए काफी तनख़ाह देकर पहरेदारो की बहाली आदि।

दुखमोचन ने रक्षा-समितियो के सगठन पर ही ज्यादा जोर डाला और काफी बहस के बाद पचो ने इस उपाय को ही एकमात्र कारगर तरीका घोषित किया।

तय हुआ कि एक हज़ार आबादी वाले गॉव मे जो रक्षा-समिति होगी, कम-से-कम पॉच रक्षको से बनी होगी, टमका-कोइली जैसे बड़े गॉव की रक्षा-समिति का सगठन कम-से-कम बीस रक्षको का होगा। रक्षको की उम्र बीस से चालीस साल तक रहेगी। उन्हे भाला या गँडासा लेकर रात के वक्त फसलो की निगरानी करनी होगी, अनुशासन उन पर पचायत का रहेगा। दो-दो रक्षक साथ निकला करेंगे और चार-चार घण्टे तक पहरा देगे।

इन फैसलो को अमली जामा पहनाने मे दुखमोचन के तीन रोज़ लग गए। सिमरौन और पुनाई चक के बाशिन्दो ने पुलकितदास को तो छोड दिया, मगर दुखमोचन को नही छोडा। दोनो बस्तियो मे रक्षा-समितियो का बाकायदा सगठन करके उन्होने रक्षको को सारी बातें समझा-बुझा दी, अचलाधिकारी साहब से बाते कर आये, दारोगा और हेडकान्स्टेबल के कानो मे सारा मामला डाल दिया। राजनीतिक पार्टियो के जो भी दो-चार प्रमुख नेता थे थाने के अन्दर सबकी स्वस्ति ले ली। बस अखबारो मे समाचार भेजना-भर बाकी रह गया था।

इस बीच गिरस्ती के काम जैसे-तैसे सुखदेव ने सँभाले। अन्दर की सारी जिम्मेदारी मामी पर थी ही। बाहर खलिहान मे फसलो का ढेर लगा था। खेत सारे कट चुके थे। दँवरी चल रही थी।

अपनी बस्ती मे भी रक्षा-समिति का सगठन करना था, लेकिन कोई

जल्दी नही थी । पिछले वर्ष एक-आध बार तैयार फसलो की बरबादी का प्रयत्न हुआ था, किन्तु अपराधी का पता लगा लिया । पचास रुपये का जुरमाना वसूल करके उसे पचो ने छोड दिया था । और भी कई मामलो मे गुनाहगारो से जुरमाने की बडी-बडी रकमे वसूल की गई थी। इसी सबका नतीजा था कि बदमाश अपनी हरकतो से बाज आ गए थे।

दोपहर का खाना खाकर दुखमोचन अखबारो मे भेजने के लिए खबरें लिख रहे थे, वही रक्षा-समिति के निर्माण की बाते ! टुनू को नानी ने पुतला भेजा था, वह उसी से खेल रही थी और बीच-बीच मे पिता की तरफ एक-आध नजर देख लिया करती थी ।

गेहुँआँ रग की ऊन के लच्छे और बुनाई की सलाइयाँ लेकर मामी घर के अन्दर आई ।

दुखमोचन का कुरता और बनियाइन खूँटियो पर टँगी थी । कुरता साफ था, बनियाइन मैली थी ।

मामी ने कहा—बनियाइन और सिलवा लो । यह तो हमेशा बदन से लगी रहती है । एक नही, दो चाहिएँ कम-से-कम ··

नजर उठाए बिना ही दुखमोचन बोले—नही मामी, कम-से-कम आधा दर्जन चाहिएँ ।

मामी हँसी, खिलखिला उठी । मेज़ के नीचे से स्टूल ले लिया, बैठ गई । स्वेटर की दूसरी बाँह अभी बिनी जाने वाली थी, सलाइयो को आडे-तिरछे रखकर उनमे धागे उलझाते हुए बोली—तुम्हारी इस बस्ती मे जिनके पास साधन है भी वे सलीके से रहना नही जानते । कमर से नीचे मैली-चीकट मरदानी धोती, कन्धे पर चारखाना गमछा, सरसो के तेल मे भीगे हुए बाल ! आप कौन है ? बाबू त्रिजुगी नारायण चौधरी है । साठ हजार रुपये नकद जमा कर रखे है और कसम खा रखी है कि धोबी से कपडे नही धुलाएँगे । आप कौन है ? रामरखराय है ! तीन हजार मन धान हर साल आपकी खेती आपको सौपती है, लेकिन शक्ल-सूरत बना रखी है कि हफ्तो से हाजत मे बन्द मुजरिम भी क्या होगा !

दुखमोचन ने गरदन उठाकर कहा—नही मामी, नही ! यह तुम इकतरफा बातें कर रही हो ! अरे, दूसरा रुख भी तो देख लिया करो। उन्ही परिवारो के नौजवान कैसे बन-ठन के रहते है।

हुँ !—मामी ने आँखे मटका ली। चुपचाप बिनाई करने लगी। दुखमोचन लिखे हुए कागज़ लिफाफो मे बन्द कर चुके तो उठे और अलमारी के अन्दर टिकट खोजने लगे। डायरी की गत्ती मे देखा, इस किताब की जिल्द मे ढूँढा, उस किताब की जिल्द मे खोजा, एक भी टिकट कही नही मिला। हारकर मामी से कहा—सुनती हो ? तुम्हे याद है कहाँ रखे थे टिकट मैने ?

—मैं क्या जानूँ !—मामी ने कहा।

टिकटो की जरूरत आज बहुत दिनो बाद पडी थी। कुछ रुककर मामी बोली—किसी को दे आए होगे, याद नही होगा · डाकखाने से ले लेना, परेशानी काहे की ?

दुखमोचन बैठ गए तो टुनू गोद मे आ गई।

मूँछ के बाल सहलाती-सहलाती लडकी बोली—परसो जो लेमनचूस तुम लाए थे, अच्छे नही थे।

—अब जो लाऊँगा वे अच्छे होगे—पिता ने कहा। उनकी उँगलियाँ उसके बालो मे उलझी हुई थी।

टुनू पुतले को सज़ा दे रही थी, टाँग पकडकर उसे उलटा झुलाने लगी। बाप से कहा—बापा, यह बडा शैतान हो गया है, पढता है न लिखता है, दिन-भर मटरगश्ती करता है इसे मै घर से निकाल बाहर करूँगी · मगर आप मुझे रगीन तस्वीरो वाली किताब कब ला देंगे ?

मामी ने उधर से कहा—टुनू पढेगी तो खेलेगी कौन ?

दुखमोचन ने मचलती हुई बेटी को छाती से लगा लिया और बोला—भारी शौक है टुनू को पढने का, लिखने का, तुम तो बस यो ही कुछ कहती रहती हो।

लाइन पूरी हो गई थी, बिनाई की सलाइयाँ पलटकर मामी दूसरी

लाइन बिनने लगी तो कहा—यो ही कुछ कहती रहती हूँ मै ? दवात मे उँगली डालकर भीत पर टेढी-मेढी लकीरे खीचने मे ही जिसका जी लगता हो, उसे भला क्या कहा जाए। स्कूल से रानीजी भाग-भाग आती है

—हाँ रे ?—दुखमोचन ने भौहे जरा कडी करके टुनू से पूछा।

लडकी ने निगाहे नीची कर ली तो मामी ने कहा—जा टुनू, तेरी चाची तुझे बुला रही है, जा !

अपना पुतला वही पलग पर छोडकर टुनू बाहर निकली।

लेकिन फौरन ही वापस आ गई और बोली—बापा, चाची पूछ रही है, हजारीबाग से जो कपडे आए है उनका क्या-क्या बनेगा ?

दुखमोचन मामी की तरफ देखने लगे। मामी का ध्यान अभी बिनाई पर था। छोटी बहू दुखमोचन से परदा करती थी, बरामदे मे आड लेकर खडी थी।

—मामी, क्या-क्या कपडा है ?

—तीन तो साडियाँ थी, ब्लाउज के लिए चार गज़ सादी छीटे थी। बच्चो के लिए फ्राक, सलवार, पाजामा और कमीज के कपडे थे। पण्डितजी के लिए पाँच गज मलमल था·

मामी ने बिनाई रोककर तफसील मे कपडो का हाल बता दिया।

छोटी बहू का लडका जोगेन्द्र नानी के साथ रहता था। अब दस पाँच दिन के अन्दर ही आने वाला था। परिवार मे लडकियाँ तो दो थी, लडका बस यही था। वहाँ नानी-नाना के भी और कोई नही। इसीसे सुखदेव—दुखमोचन भतीजे को छूट दिए थे कि चाहे जहाँ रहे।

दुखमोचन ने मामी से कहा—अप्पी है, तुम हो, जोगेन्द्र की माँ है

—और मै हूँ !—टुनू बीच मे ही बात काटकर बोल उठी और पिता से सटकर बैठ गई।

मामी को हँसी आई और दुखमोचन को भी। बाहर-भीतर की ओट

मे खडी छोटी बहू भी खिलखिला पडी ।

मामी ने टुनू से ही पूछा—अच्छा, तू क्या क्या सिलवाएगी ?

—कान मे कहूँगी—शरमाकर लडकी बोली ।

पिता ने कान उसके मुँह से लगा दिया ।

टुनू ने बाप के कान मे कहा—फ्राक तो ठीक है, मगर सलवार नही सिलवाऊगी मै ··

—तो क्या करेगी अपने कपडे का ?—मामी ने मुँह बनाकर पूछा।

—तुम पर रज है, तुम्हे कुछ नही बताएगी ।

—मुझको क्या पडा है, जिसकी बेटी है उसे तो बता द !

दुखमोचन ने फुसलाकर चुपचाप टुनू से पूछा तो उसने बतलाया

—मुझे पाजामा चाहिए बापा ।

—पाजामा पर फ्राक कैसी लगेगी ?

—अच्छी लगेगी ।

मामी ने कहा—जिद्दी हो गई है छोकरी ! पीठ पर सास के झाडू बरसेगे इसके तो ·

—बाप रे बाप ! —दुखमोचन ने लडकी को सीने से चिपका लिया । बोले—खाल न उधेड लूँगा उस सास की !

इस पर छोटी बहू की खिलखिलाहट फिर कानो मे आई ।

मामी ने मुस्कराते हुए कहा—जोगेन्द्र आएगा तो इसकी मरम्मत किया करेगा !

च्च च्च · च्च ! —ओट से छोटी बहू ने प्रतिवाद किया ।

दुखमोचन टुनू की पीठ पर हाथ फेरते रहे, बोले—हो नही सकता। जोगेन्द्र तो इतना ज्यादा प्यार करता है इसे कि दूसरा कोई क्या करेगा ! वह छिपा-छिपाकर इसको मिठाइयाँ देता था कँटीली झाडियो के अन्दर घुसकर पीले पके बेर तोड लाता था इसके लिए ··उसी ने टुनू को पानी मे तैरना सिखाया था नही टुनू ?

माथा हिलाकर लडकी ने कहा—हाँ, भैया ने मुझे कभी नहीं पीटा ।

कोई कितना भी चुगली खाए, वह मुझ पर रंज नही होते। अब की मै भी भैया को मिठाई खिलाऊँगी।

एकाएक टुनू ने मामी की तरफ देखा और बेताबी से पूछा—अच्छा, तुम्हारे पास मेरा कितना जमा है ?

कुछ नही।—मामी ने जवाब दिया—धेला भी नही।

टुनू रुआँसी होकर बोली—गगा मैया की तरफ मुँह करके कहो तो सन्तोष कर लूँगी।

मामी खिलखिला पडी।

जाने कहाँ से आकर अपर्णा चाची के पास खडी थी और टुनू की बातें सुन रही थी। अब सामने आ गई।

टुनू ने बहन से पूछा—मामी के पास डेढ रुपैया नही है जमा मेरा ? तुम्हारे सामने ही तो दिया था, एक रुपैया एक बार और अठन्नी दूसरी बार ·

अपर्णा को हँसी आ गई। बोली—क्यो आप लोग टुनू को परेशान कर रहे हैं ?

दुखमोचन ने कहा—डेढ रुपये की तो बात है, इसके लिए टुनू मामी से कसम लेना चाहती है।

अपर्णा बोली—आप सयानो के लिए डेढ-दो रुपया कोई चीज नही, मगर हम बच्चो के लिए यह रकम डेढ-दो हजार रुपये के बराबर है बापा ! मै गवाह हूँ, मामी को टुनू ने डेढ रुपया रखने को दिया था

टुनू की आँखो मे चमक वापस आ गई, चेहरा खिल उठा।

मामी मुस्कराती हुई उठी, स्टूल खिसकाकर फिर मेज के नीचे रख दिया। ऊन के लच्छे, सलाइयाँ और बुना हुआ टुकडा अपर्णा के हवाले किया। दुखमोचन की तरफ रुख करके बोली—तुम तो अब डाकखाना जाओगे, मुझे भी बैठना नही है। देखते हो न, समूचे आँगन मे धान सूख रहे है, उन्हे समेट लेना है। तिल सक्राति का त्यौहार करीब

आ पहुँचा, उसके लिए अलग चूल्हा आज ही बनाऊँगी। अप्पी की माँ की बरखी के दस-बारह रोज़ रह गए है, सिवाय चावल और दाल के और कुछ भी तो नही है घर के अन्दर· ·

अपर्णा की माँ का प्रसग आया तो दुखमोचन के मन ने एक अजीब-सा दर्द महसूस किया। वह चटपट उठ खडे हुए।

··· पाँच

गाँव के पच्छिम मुन्शी पुलकितदास का मकान था। उन्ही के दालान वाले कमरे की दीवार से 'डाकखाना' की तख्ती लटकी हुई थी। लाल-सुर्ख ज़मीन पर सफेद हर्फ। खम्भे से लेटर-बॉक्स लगा था।

बाहर तख्तपोश पर मुन्शीजी छोटा-हल्का हुक्का गुडगुडा रहे थे। आबनूसी सूरत, गोल चेहरा। बाल पक चुके थे। हजामत बनवाये हुए चमकीले गाल। पतली मूँछें। गोल गले की नफीस बनियाइन पहन रखी थी। आँखो के कोए छोटे मगर पीले। कद्द नाटा। हाथो और पैरो की उँगलियाँ सीधी-सपाट।

दालान के सामने गेंदा के पचासो पौधे थे, फूलो की बहार देखने लायक थी।

दुखमोचन आये तो मुन्शीजी ने हुक्का-समेत उठकर स्वागत किया और बैठाया।

छप्पर की पाढ के पीछे पुराने-नये अखबार और कागज़ खुँसे थे। हवा की कृपा से उनका रग उड़ गया था और सिकुडन आ गई थी।

मामूली कुशल-समाचार पूछकर दुखमोचन ने उन अखबारो की तरफ देखा।

मुन्शी ने हुक्का गुडगुडाते हुए पूछा—क्या देख रहे हे ?

दुखमोचन ने कहा—पिछले वर्ष बाढ के जमाने मे कोशी अचल के निवासियो ने सम्पादको के नाम काफी पत्र लिखे थे, अधिकाश छपे भी थे। पिपरा बाजार के मेरे एक मित्र वैसे पत्रो की कटिंग इकट्ठी कर रहे है • आपके यहाँ अखबार एक-न-एक आता ही रहता है।

मुन्शीजी ने माथा हिलाकर स्वीकार किया और तृप्तिपूर्वक हुक्का पीते रहे। कुछ देर बाद नरेले से होठ हटाए और पूछा—डाकखाने का भी काम है कुछ ?

—जी हाँ! चार इकन्नी टिकट और दो पोस्टकार्ड चाहिए।

—हुँ • और अखबारो की कटिंग के बारे मे नवल से ही कहियेगा, वही जानता है, कौन और कब का अखबार कहाँ पडा है।

—अच्छी बात है, पूछ लूँगा नवल से!

इतने मे चार साल का एक लडका अन्दर से निकला—दरवाजे तक दुलकी चाल से आया था, लेकिन बाहर आते ही अजनबी चेहरा देखा तो भय और कौतूहल से एकाएक ठमक-सा गया। मुन्शीजी ने नजरो के इशारे से बार-बार बढावा दिया, तब वह शकित पैरो से नजदीक आया। अचम्भा-भरी निगाहो से एक बार दुखमोचन की तरफ और अभय-प्रार्थी निगाहो से एक बार मुन्शीजी की तरफ देख रहा था।

बिलकुल करीब आ गया तो मुन्शीजी ने बच्चे को अक मे भर लिया और चूमकर कहा—यह तेरे चाचा है, चाचा!

दादा की गोद मे आने से सुरक्षित महसूस करके बच्चा पूछ बैठा—बाबूजी के भाई होगे यह ?

हुँ उँ उँ उँ उँ—मुन्शीजी ने स्वर को लम्बा करते हुए नाटकीय ढग से माथा हिलाया।

फिर कुछ देर तक मुन्शीजी अपने इस होनहार पोते की प्रशसा करते

रहे और दुखमोचन ने उसमे गहरी दिलचस्पी ली ।

—अच्चा, चाबियो का गुच्छा तो ले आ !

बच्छा मुन्शीजी की गोद से उतरा और अन्दर हवेली की तरफ भागा ।

हुक्के को दीवार से टिकाकर मुन्शीजी लघुशका से निबटने गये—दस मिनट का वक्त लगता था इस काम मे उनको ।

दुखमोचन की आँख पच्छिम के खेतो की तरफ इतने मे सैर कर आई · बीच मे सरसो के फूले खेत अपनी खास छटा दिखला रहे थे ; इन खेतो के आगे धान के खेतो का विशाल मैदान था जिनमे कटी फसलो की खूँटियाँ-ही-खूँटियाँ, थी—साफ-सूफ और सीठी-सी खूटियाँ' धौरी-भूरी मटियाली खूँटियाँ, तरल और स्निग्ध निगाहो के अन्दर पलभर मे ही रूखापन भरने वाली खूँटियाँ ! उनके दरमियान जहाँ-तहाँ दूबो वाली मेडे हल्की हरी लकीरो-सी लग रही थी । लेकिन, नज़दीक इधर वाले खेतो मे सरसो के फूल लहरा रहे थे । बस, आँखे प्रकृति की पीली ओढनियो मे ही उलझ-उलझकर मस्त हो उठी · दुखमोचन को क्षणभर के लिए गौने के समय का अपनी पत्नी का रूप याद आ गया—पीली रेशमी साडी, पीला रेशमी ब्लाउज़, चाँद-सा मुखडा और चन्दन-सी सूरत ! पीले कपडो से ढकी हुई पालकी

बच्चा अन्दर से चाबियो का गुच्छा ला चुका था और मुन्शीजी ने डाकखाना खोल लिया था ।

दुखमोचन कमरे के भीतर आ गए ।

साठ साल के मुन्शी पुलकितदास पोस्टमास्टर की अपनी कुरसी पर बैठे । दुखमोचन के लिए स्टूल था ।

मेज़ पर कागज बे-तरतीब पडे थे । मुहरो के ठप्पे गन्दे दिखाई दे रहे थे । डाक के दो-तीन खाकी थैले । लकडी की एक छोटी-सी अलमारी । लोहे का छोटा सेफ । नोटिस बोर्ड भी अन्दर ही था । 'नेशनल सेविंग्स' के दो छोटे-छोटे पोस्टर दीवार से चिपके थे । कोने मे ढिबरी और सील

करने के लिए चपड़े की टिकिया पडी थी ।

बडा पोस्ट-ऑफिस था पिपरा बाज़ार मे । यह निहायत मामूली डाकघर था । डाकिये का भी काम पोस्टमाटर को ही करना होता था । मुन्शीजी ने अपने दूसरे भतीजे को डाक बाँटने की ड्यूटी पर तैनात कर रखा था । पहले मनीआर्डर की रकमे महीना-महीना डेढ-डेढ महीना रोक ली जाती थी । लोगो को भारी कष्ट था । दुखमोचन ने यो भी और अखबारो मे भी काफी लिखा-पढी की, हल्ला-गुल्ला मचाया । अब ठीक वक्त पर रुपये मिल जाते थे ।

मुन्शीजी ने टिकट और पोस्टकार्ड दिये और पैसे लिये । दुखमोचन उठने लगे तो कहा—दस बोरा सीमेन्ट की जरूरत थी ।

शहर जाकर एस० डी० ओ० (सब-डिविजनल ऑफिसर) से मिलिए दासजी !—जवाब मिला ।

अन्दर हवेली से तश्तरी मे सुपारी के टुकडे और सौफ आ गए थे । मुन्शीजी बोले—अरे, सुपारी नही लीजिएगा ! सुनते है ? मेरा मतलब था कि एस० डी० ओ० साहब इधर-उधर तहकीकात करेंगे और आखिर आपसे पूछा जा सकता है···समझे न ?

—मगर इतना सीमेट क्या कीजिएगा ? बडी किल्लत है सीमेट की ।

—तुलसी का चबूतरा बनवाना है, लक्ष्मी-नारायण के लिए वेदी बनवानी है । चहारदीवारी मे भी काफी सीमेण्ट लग जाएगा । दस हजार ईंटे पडी हैं, बैठकबाज़ी के लिए एक पक्का अड्डा तैयार करना है···

—यह काम तो ढाई-तीन मन सीमेण्ट से हो जाएगा ।

—अरे, समझे नही ? अच्छी चीज यो भी घर मे पडी रहे तो क्या हर्ज है ?

—अच्छा ऽऽऽऽ !

दुखमोचन कमरे से बाहर निकले और टिकटें लगाकर लिफाफो का

लेटर बॉक्स के हवाले किया। मुन्शीजी बरामदे तक आकर उन्हे छोड गए।

चार बजे होगे। जाड के दिन थे। सूरज काफी नीचे आ गया था। पाली धूप बदन को खुशगवार लग रही थी। निगाहो मे बार-बार खेतो की वह पीली छटा आ जाती और ध्यान बार-बार पत्नी की सूरत पर अटक जाता। • लगातार चार वर्षों तक टी० बी० की मरीज रही बेचारी मरने लगी तो वह उसे देख भी नही सके। माँ ने भाई को मना कर दिया—नही, बुलाने की ज़रूरत नही है। आकर क्या कर लेगा बबुअन ?• थाइसिस से अप्पी की माँ का गोरा-गेहुँआ रग एक-दम पीला पडा गया था • सरसो के फूले खेतो का पीला-पीला मैदान दिशाओ के छोर छूने लगा तो गहन के अँधेरे मे दिखाई पडने वाला चाँद का फीका ढाँचा क्षय-ग्रस्त पत्नी का प्रभाहीन मुखमण्डल बनकर चक्कर काटने लगा

दुखमोचन आते-आते वेणी माधव के दालान के करीब आ गए। यह जगह रास्ते के बिलकुल किनारे थी।

दालान के आगे सेहन मे छोकरो-छोकरियो और औरतो की भीड जमा थी। बीच मे दो पजाबी फेरीवाले चटकीले सामान फैलाकर एक-एक की दस-दस खूबियाँ गिना रहे थे और कह रहे थे—ऐसा माल पटणे मे भी नही मिलणा भैणजी, लै लो! जो मर्जी तुसी दे देणा • आ बलाउज़ देखो, चीन की लाजवाब सिलक मँगवाई थी हमारे मालिक ने! वो पेटीकोट तो छूकर देखणा, कैसा सोहणा है! ज़रा उसकी लैस तो देखो भैणजी •

दुखमोचन पर नजर पडते ही औरते हवेली की तरफ आड मे चली गई। इशारे से फेरीवालो को भी बुला लिया तो भीड भीतर चली गई।

दुखमोचन दालान मे आ गए।

एक नफीस तख्तपोश बिछा था। अलग एक बडी चारपाई को भी खडा करके रख दिया गया था।

तख्तपोश पर लेट गए दुखमोचन। एक लडका दरी और तकिया

ले आया। यह उनका पुराना दस्तूर था कि जब कभी थके-थकाए आए तो वेणी माधव के दालान मे इसी तरह लेट रहे। वेणी माधव या जय-माधव मौजूद हो चाहे नही हो, दुखमोचन बे-झिझक घण्टा-आधा घण्टा आराम करते। फिर अपने-आप उठकर चल देते ··

परसो अप्पी की माँ की बरसी हुई थी—पाँचवी बरसी। जात-बिरादरी के लोगो का ज्योनार था। मामी, छोटी बहू, मधुकान्त की माँ और सुग्गी बुआ परसो दिन-भर तरकारियाँ तलती-पकाती रही। सिद्धी और माँगन ने पीतल के बडे-बडे हण्डो मे भात-दाल पकाए थे। कन्हाई और राधे पानी भरने, लकडी जुटाने और मसाला पीसने पर थे। रामपट्टी का महापात्र आया, वार्षिक श्राद्ध के क्रिया-कर्म दुखमोचन से उसी ने करवाए थे।

अप्पी की माँ इन दिनों बेहद याद आ रही थी। दूसरे कामो मे दुखमोचन का जी नही लग रहा था। इस वक्त भी उन्हें बार-बार वही मुखडा याद आ रहा था। तबीयत करती थी उसी के बारे मे सोचते-सोचते दो-एक झपकियाँ ले ले।

अन्दर हवेली से औरतो और फेरीवालो की मिली-जुली आवाज़ आ रही थी।

—बच्ची की सलवार के लिए यह खाटन ले लो भैंणजी !

—लडके की कमीज़ के लिए यह नीला पापुलीन ··

—अपनी कुर्ती के वास्ते बैंगलोर की सिलक·

—नही, सादी छीटे दिखलाओ !

—हमे तो उनके लिए मलमल चाहिए।

इस पर हल्की हँसी सुनाई पडी और फिर—लओ जी ! हमारे मुल्क मे ऐसा महीन मलमल ओढनी के लिए पसन्द करते है, ठीक है भैंणजी ?

—छीटें ?

—छीटे अब और नही हैं ·

ब्लाउज़ के लिए सादी छीटे तुम्हे भी तो पसन्द थी गुञ्जन !—दुखमोचन लेटे-ही-लेटे बुदबुदाए—कलकत्ता मे एक गुजराती मित्र से मैने कहा था, अहमदाबाद से छीट की दो साडियाँ और ब्लाउज के कपडे मुझे अपनी पत्नी के लिए ला देना वह तो ले आया, लेकिन तुमने उन कपडो को नही पहना। गुञ्जन, मै उन्हे तुम तक पहुँचा ही कहाँ पाया ! आखिर तुम्हारा नाम लेकर मैने वे कपडे गगा मे डाल दिए थे। अप्पी को भी छीट के कपडे उतने ही पसन्द है गुञ्जन!

गुजेश्वरी अपर्णा की मा का नाम था। दुखमोचन प्यार मे उसे गु जन कहा करते थे। मायके वालो के लिए वह गुज्जी थी। चौदह की थी तो ब्याह हुआ, चौबीस की हुई तो हमेशा के लिए आँखे मूँद ली। सास की सख्ती से ढकी हुई दूब की तरह पीली हो गई थी बेचारी। सुखदेव को बहू की तन्दुरुस्ती से न कुछ लेना था न देना। नारायण तो और भी भारी लापरवाह ठहरा। दुखमोचन शील-सकोच के मारे उन दिनो पत्नी के बारे मे ज़बान तक नही खोलते थे। तो फिर वही हुआ जो होना था।

वेणीमाधव के दालान पर देर तक दुखमोचन पत्नी की स्मृतियो मे डूबते-उतराते रहे। उन्हे पता नही, कब तक हवेली मे मोल-भाव और खरीद-फरोख्त की उथल-पुथल मुखरित होती रही। उन्हे यह भी पता नही कि कब फेरी वाले निकलकर दूसरे घरो की तरफ चले गए थे।

दुखमोचन को नींद आ गई तो डेढ घण्टा तक सोते रहे।

वेणी माधव की ऊँची आवाज़ सुनकर दुखमोचन ने पलके खोली। सूरज डूब चुका था। नीले आसमान की ठण्ड और भारी सूनापन अधकार की विराट् भूमिका बनाने जा रहा था।

दालान से ज़रा हटकर खलियान था। धान के ढेर कई रोज़ पहले ही हवेली के अन्दर पहुँच चुके थे। अब पुआलो की टाले ही बाहर रह गई थी। चार बैल एक ओर लम्बी नाँद मे मुँह डाले सानी-भूसी खा रहे थे। उनसे थोडी दूर पर दो भैस बँधी थीं, हरी घास का एक-एक

ढेर उनके सामने था।

डोल रस्सी-सहित कुएँ मे गिर गया था। आज तीन रोज़ से पानी भरने वाली मज़दूरिन का पता नही था। घर की औरतो को चालीस-चालीस डोल पानी खींचने की आदत नही थी। आठ घडे सुबह, आठ घडे शाम, रोज़-रोज़ कौन इतना पानी भरे! उस पर भी डोल नदारद!

वेणी माधव बाहर से लौटा था! डोल नही था कि हाथ-पैर-मुँह धोकर ताजा हो लेता, फिर इतमीनान से बैठता। छोटे भाई जय माधव पर गुस्सा आ रहा था कि बहन ने सामने आकर डोल के न निकाले जाने की शिकायत की। गुस्सा और भडक उठा— कही से झग्गड मँगवाकर डोल निकाल लिया होता सो नहीं, मेरा माथा खाने आई है! लाट साहब क्या करते रहते है सारा वक्त ?

बहन सहमकर चुप हो गई, मगर इस ऊँची आवाज ने दुखमोचन को जगा दिया। करवट बदलकर उन्होने पूछा—नाहक क्यो गरम होते हो ? हमारे घर से झग्गड ले आओ चलकर, बस बात खत्म हुई!

वेणी माधव व्यग्य की हँसी-हँसा और बोला—हो गई खत्म बात! बस, झग्गड कुएँ मे डालकर डोल निकाल लो कि हुई छुट्टी! अरे, मैं तुमसे पूछता हूँ कि हरामज़ादी ने पानी भरना क्यो छोड दिया? तबीयत करती है साली को पकड लाऊँ और गिनकर सौ जूते लगाऊँ

दुखमोचन उठ बैठे। अँगडाइयाँ ली और बोले—गाली-गलौज और मार-पीट से तो मामला बिगडेगा ही। आखिर बात क्या थी? क्यो छोड दिया है पानी भरना उसने ?

वेणी माधव की बीस-साला विधवा बहन दालान की खम्भेली से लगकर खडी थी। उसने कहा—देवर के बहकाने से हमारी पनभरनी का माथा फिर गया है। वह कलकत्ता रहता है, दस दिन के लिए आया है। यो तो छुट्टी का बखत कटेगा नही, आठो पहर भौजाई से गप्पें लडाता रहता है ••

क्या कहती थी ? काम छोडने का कोई तो कारण बताया होगा ?

—कहती थी, कलकत्ता मे इतना पानी भरने वाली पन्द्रह रुपैया महीना लेती है। दो बालटी नलके का पानी यहाँ से उठाकर चार कदम पर वहाँ रख दिया, तो फी महीना पाँच ठो रुपैया धरा है

तो अब हम उसका तलवा चाटे ? —वेणी माधव के अन्दर की उफान बाहर आई। उसका जी कर रहा था कि मजदूरिन का नाम लेकर ढेर-सी गालियाँ बक जाए, लेकिन दुखमोचन के लिहाज़ से जीभ को काबू मे रखना पडा।

दालान के आले मे ढिबरी पडी थी। एक लडकी आयी, उठा ले गए। वेणी माधव उठकर खलियान की तरफ गया, कुआँ उधर ही था। दुखमोचन ने पुकारकर कहा—पानी मेरे लिए भी लेते आना।

बहन के अगले दो दाँत निकले हुए थे। सूरत साँवली थी। आँख-नाक-होठ ठिकाने के थे। स्वास्थ्य अच्छा था। बोली मे मिठास थी।

दुखमोचन ने पूछा—अब वह किस शर्त पर काम करेगी, तुमने मालूम नही किया माया ? या फिर दूसरी मज़दूरिन को रख लो •

माया बोली—माँ ने उसकी सास से पूछा था। उसने बताया कि बहू किसी का कहा नही मानती। सास तो उसे फूटी आँखो भी नही सुहाती·· भाभी ने और भी कई मज़दूरिनो से कहा था, लेकिन कोई तैयार नही होती। पता नही क्या बात है भैया !

दुखमोचन चुप रहे। सोचा, मामी से पुछवाकर असल भेद का पता लगाएँगे।

साबे घास की इकहरी डोरी लोटे के गले मे फँसाकर वेणी माधव ने कुएँ से पानी निकाला, हाथ-पैर धोए, मुँह-कपाल को पानी के छीटे दे-देकर तर किया। एक लोटा पानी लाकर दुखमोचन के भी सामने रखा।

दुखमोचन ने भी हाथ-मुँह धोया।

काँसे की थालियो मे भुने हुए चिवडे और मछली के तले टुकडे आये तो दोनो ने नाश्ता किया।

लडकी ढिबरी जलाकर रख गई। दुखमोचन ने अभी तीन रोज़ पहले सिर मुँडाया था, घुटी हुई चाँद इस मामूली रोशनी मे भी चमक उठी। सुपारी के टुकडे लेकर माया फिर आ गई, बोली—बालो के बिना दुखन भैया का चेहरा उदास लगता है सुपारी लीजिए भैया • क्या ही अच्छा होता, रात-ही-रात मे आपके बाल दो अगुल बढ जाते दुखन भैया!

इस पर दुखमोचन और वेणी माधव हँसने लगे।

फिर दोनो उठकर दालान से नीचे उतरे।

छोटे-छोटे दो बच्चे आकर वेणी माधव की टाँगो से लिपट गए। उनमे भी जो ज्यादा छोटा था, वेणी ने उसे उठाकर कन्धे पर बिठा लिया। इतने मे दूसरा टाँगो के बीच अपनी गरदन फँसाकर इधर-से-उधर, उधर-से-इधर आने-जाने लगा।

दुखमोचन ने हँसकर कहा—कहाँ थे अब तक ये बन्दर ?

वेणी माधव बोला—दोनो चुग रहे होगे अन्दर!

फिर दोनो ने कहकहे लगाए और बच्चो से पीछा छुडाकर रास्ते पर आ गए।

नित्याबाबू का बैठकखाना गुलज़ार था। पोती का दूल्हा आया हुआ था, दो-तीन मेहमान और भी थे। रेडियो पर चौपाल के अन्तर्गत 'लोहासिंह' नाटक चल रहा था। पाँच-सात पडोसी भी आकर बैठ गए थे। नित्याबाबू खुद नही थे लेकिन उनकी नफीस छडी दीवार से लगी खडी थी।

दुखमोचन और वेणी माधव अपनी राह पकडे सीधे चले आए।

सुखदेव आसन पर बैठकर दाहिने हाथ की उँगलियो से नाक दबाये प्राणायाम कर रहे थे। आहट पाकर उन्होने एक नजर आगन्तुको पर डाली और तसल्ली हो गई तो फिर आँखें मूँद ली।

काला कुत्ता दुम हिलाता हुआ सामने आया।

दुखमोचन अन्दर चले गए, वेणी माधव दालान मे जाकर तख्तपोश

पर बैठा । सामने वाला खलियान खाली था ।

दो ही तीन मिनट बाद दुखमोचन बाहर निकल आए । झग्गड वेणी माधव को थमाकर बोले—काम हो जाए तो तुरन्त भिजवा देना ।

झग्गड लेकर वेणी माधव लौट गया ।

दुखमोचन गाय-बैलो के नजदीक जरा देर के लिए बैठे ।

गाय आजकल दूध नही दे रही थी, बछडा भी अब पी नही सकता था । कभी थन से थूथन लगा देता तो हडक उठती । अभी बछडा अलग बँधा घास खा रहा था । गाय और बैलो के सामने सानी-भूसी थी—एक नाँद गाय के लिए और दूसरी दोनो बैलो के लिए ।

बैल बस दो थे—तन्दुरुस्त और नाटे कद के । सूरत उनकी सँवलिया थी । हल खीचने मे दोनो बहादुर थे । जिन खेतो मे धान उपजते हैं, बैसाख-जेठ की पहली जुताई के समय उनकी मिट्टी बेहद कडी होती है । जवान हलवाहा हो मजबूत बैल हो, तेज और नुकीली फार हो, तभी खेत जोते जा सकते है । क्वार-कातिक या माघ-फागुन मे हल्की-भुर-भुरी मिट्टी वाले खेतो मे तो बूढे बैल भी हल खीच ले जाते हैं । ये मामूली नही, परगना-बछौर के तेज-तर्रार बैल थे । पाँच सौ पचास रुपये गिनकर सीतामढी के मवेशी-हाट से दुखमोचन और वेणी माधव इन्हे लाए थे । यहाँ इनका यह तीसरा वर्ष था ।

गाय दो बार ब्याई थी अब तक । दुखमोचन को ससुराल से एक गाय मिली थी, यह उसी की सन्तान थी । पत्नी की याद दिलाने वाली जो भी कुछ वस्तुएँ रह गई थी, उनमे यह गाय भी एक थी ।

बैलो के नजदीक पाँच मिनट बैठकर वह गाय के करीब आ गए । पूस की धुँधली चाँदनी मे उसके मुठिया सीग चमक रहे थे । गले मे कोडियो की तीन लडो वाली माला थी । रग काला-सफेद मिलाकर चितकबरा था । कद नाटा ।

जीभ निकालकर उसने दुखमोचन को चाटना चाहा । उन्होने अपने बाएँ हाथ की कलाई आगे कर दी । गरम-गरम खुरदरे स्पर्श से गुदगुदी

लगी तो हाथ हटा लिया।

इतने मे दस-ग्यारह साल का एक लडका अन्दर से आया और बोला — काका, मामी ने बुलाया है।

क्या है—दुखमोचन ने पूछा—अच्छा जोगी, चल तू ! मैं अभी आया ••

जोगी वापस चला गया। यह छोटे भाई नारायण का इकलौता लडका था योगेन्द्र। प्यार से लोग जोगेन्दर या जोगी कहते थे। पतला-छरहरा, गोरी सूरत। चेहरा चौडा और भरा-भरा-सा था।

दुखमोचन दो मिनट बाद हवेली के अन्दर गये।

सुखदेव खाना खा रहे थे। अपर्णा और योगेन्द्र पढने-लिखने मे लगे थे। टुनू के सामने भी कोई किताब थी।

मामी ने कहा—तुम देर से खाना खाओगे ?

—हॉ मामी, अभी नही !

—अच्छी बात है।

फिर मामी ने धीरे से कहा—अभी-अभी तुम झग्गड लेने आये थे तो कह गए थे एक बात पूछनी है • भला क्या बात थी ?

दुखमोचन ने आहिस्ते से कहा—भैया को खाना खाकर उठने दो, वह बाहर जाएँ तो बताऊँगा जल्दी क्या है ?

मामी को तसल्ली हुई तो माथा हिलने लगा।

दुखमोचन ने कुरता निकाल लिया और इशारे से अपर्णा को नजदीक बुलाया। बनियान पहने रहे, लेकिन कुरता लडकी को थमा दिया और बाहर निकल आए।

पूरब की तरफ आसमान मे दशमी का चॉद काफी ऊपर उठ आया था। कोहरे ने चॉदनी को फीका कर रखा था। फीका आसमान और फीके तारे !

सर्द हवा के झोके लगे तो दुखमोचन ने गाय और बैलो की तरफ देखा। आज चरवाहा तमाशा देखने निकल गया था। नदी के पार

लखनौली गाँव मे एक कोइरी-भगत पर हर मगलवार की रात को बरहम-देवता चढता था। पास-पडोस के इलाको से लोग देवता से सवाल पूछने पहुँचते थे। भारी मेला जुटता था।

दालान की दाहिनी ओर मवेशियो के लिए छोटा-सा घर था, गाय और बैलो को दुखमोचन उसके अन्दर बाँध आए। फिर अलाव के पास बैठे हाथ सेकते रहे।

मौका पाकर मामी से उन्होने पानी भरने वाली मज़दूरिन का ज़िक्र छेड़ा जिसने वेणी माधव के यहाँ काम छोड दिया था।

मामी ध्यान से सारी बाते सुनती रही `फर बोली—पिछले महीने मे और भी कई घरो मे मज़दूरिनो ने झगडा-झझट खडा किया है। कई-कई रोज़ तक पानी भरना छोड देती है ये, तो भले घरो की औरतो का बुरा हाल हो जाता है। हमारी महरी भी एक बार कुनमुनाई थी, मैंने उसे अपनी नई धोती देकर मना लिया। अब वे छ आने माहवारी पर काम नही करना चाहती। जमाना तेजी से बदल रहा है बबुअन! और है भी तो यह पुराना रेट·

बच्चे खाना खाकर उधर गप-शप कर रहे थे। टुनू सो चुकी थी। मामी मलसी सामने रखके उसमे तकली नचा रही थी, जनेऊ के लिए रूई हमेशा से वह खुद ही कातती आई थी। एक तरफ डाली मे कते सूतो के लच्छे और रूई की पूनियाँ पडी थी मलसी के अन्दर नाचती हुई तकली 'किर्र-किर्र' की लगातार आवाजो से रात की चुप्पी को खरोच रही थी।

दुखमोचन पीढे पर बैठे थे। उनकी निगाहे तकली की तरफ थी, लेकिन कान कुछ और सुनने की प्रतीक्षा मे सजग थे।

मामी ने तकली की रफ्तार कम कर दी। नयी पूनी के रेशो को तार के छोर से छुआकर उन्होने एक बार दुखमोचन की तरफ पूरी निगाहो से देख लिया। बाल न होने से दुखमोचन का सिर छोटा और उदास मालूम पडा। वह फिर तकली पर नजर जमाकर सूत कातने

लगी। कुछ क्षण बाद बोली—तुम्ही से तो सुना है कई बार कि कारखाने कई-कई महीने बन्द रह जाते है। पचो के बीच बचाव से या माँगें मनवा लेने के बाद ही मजदूर काम पर वापस आते है। अब यहाँ भी समझ लो कि महरियो ने हडताल कर दी है, जब तक उनका वेतन नही बढेगा वे काम पर वापस नही आएँगी।

दुखमोचन को हँसी आ गई, बोले—खूब उडाती हो तुम भी मामी! भला यहाँ टमका-कोइली गाँव मे कौनसा कारखाना है कि कोई हडताल करेगा? घरो मे पानी भरने वाली मजदूरिनो की क्या तादाद होगी, बताओ तो?

—अब यह तो तुम्हारा काम है कि उनका पता लगाकर सही तादाद मालूम करो, मै क्या बताऊँ?

—तुम्हारी राय मे कितनी तनख्वाह महरियो को मिलनी चाहिए?

—सिर्फ पानी भरने पर एक रुपया और बरतन-बासन माँजने, झाडू-बुहारी करने पर अठन्नी और बबुअन, शहर का हाल तो तुम्हे ही मालूम है, मगर देहात मे भी अब चीज़-बस्त के दर-भाव खूब ऊँचे चढ गए हैं। पुराने जमाने की महरियाँ नही हैं ये कि चार-छः आने महिनवारो पर तुम लोगो के तलवे सहलाती रहेंगी नारियल का खुशबूदार तेल और प्लास्टिक की लम्बी कघी इनके घरो मे भी पहुँच चुकी है बबुअन! इनके घरो के भी मर्द रेल और स्टीमर पर सवार होकर कलकत्ता हो आते है। इन्होने भी अपनी मेहनत का रेट बढाने का इरादा कर लिया है।

दुखमोचन चुपचाप मामी की बातें सुनते रहे। उन्हे वेणी माधव की झल्लाहट याद आ रही थी। माया से जो-कुछ सुना वह सब याद आ रहा था। पाँच-सात साल पहले देहाती मजदूरो के भाई-बन्दो ने अपनी पचायत मे फैसला किया था कि ऊँची जात वालो के यहाँ अब वे अपमानजनक तरीको से न कोई काम ही करेंगे, न कुछ इनाम-इकराम ही लेंगे, जूठन मे चाहे अमृत ही क्यो न रह गया हो, उसे कोई नही

उठाएगा · बडे लोगो मे इससे खलबली मची थी, लेकिन दुखमोचन को यह सब अच्छा लगा था।

वह कुछ देर तक गुमसुम बैठे रहे, मामी तकली पर महीन सूत कातती रही। बीच-बीच मे अपर्णा की दबी हँसी सुनाई पडती थी।

मामी ने कहा—बस एक पूनी और बच गई है, चलो, पीछे कात लूँगी। भात ठण्डा हो जाएगा, खाना खा ही लो !

नही, इसे भी तुम कात ही डालो—दुखमोचन उठते हुए बोले—मैं अभी आया।

छः....

माया विधवा थी और कपिल विधुर था। दोनो की उम्र मे चार-पाँच वर्ष का अन्तर था।

पिछले साल-डेढ साल के अन्दर दोनो का स्नेह-सम्पर्क बेहद गाढा हो गया था। दोनो की नीयत थी कि पति-पत्नी की तरह साथ रहे और स्वस्थ जीवन बिताए, लेकिन यह आसान नही थी। एक तो विधवा-विवाह ही इस गाँव के लिए अनहोनी घटना थी, दूसरे, कपिल राजपूत था।

जय माधव और कपिल स्कूल के साथी थे। दोनो ने साथ-साथ मैट्रिक की परीक्षा दी थी। कपिल पास कर गया था, जय माधव फेल। अगले वर्ष जय माधव की शादी हुई और पढ़ना छूट गया। कपिल बनारस रहकर बी० ए० तक पढ़ा। पिता मर गए, ज़ोरो की बाढ़ आई और पीछे सूखा पडा, कपिल आखिर बी० ए० की परीक्षा दोबारा नही ही दे पाया।

परिवार की आर्थिक स्थिति अब विषम नही थी। भाई और भाभी

खूब मानते थे और वामपन्थी राजनीति को तरफ अभिरुचि थी। घरवालो ने कभी नही कहा था कि नौकरी करो। यह भी नही कहा कि आगे की पढाई फिर से शुरू करो। शादी के छ महीने बाद ही कपिल की पत्नी प्लेग मे मर गई तो जात-बिरादरी के लडकी वाले इर्द-गिर्द मँडराने लगे। मोटी रकमो के दसियो प्रलोभन थे, मगर बडे भाई अखिल की लार नही टपकी। उसने कपिल को इस मामले मे भी स्वतत्र छोड दिया था।

कपिल की समझ मे नही आता था कि क्या करे। मनोरथ की पूर्ति का सीधा रास्ता था माया को भगा ले जाना और बाहर-ही बाहर कही शादी कर लेना। मगर कपिल की प्रबुद्ध चेतना वैसा करना दुराचार और अविवेक मानती थी। या तो माया को पत्नी बनाने का खयाल ही छोड दे, या फिर उसके अभिभावको का समर्थन हासिल करे। तीसरा कोई विकल्प वह सोच ही नही सकता था।

माया अपनी माँ और भाभियो की दुलारी थी। भाई तीन थे, मगर बहन तो यह एक ही थी उनकी। जिससे शादी हुई थी वह कुलीन लेकिन दरिद्र परिवार का लडका था। बाढ मे उफनती हुई 'बूढी गडक' पार कर रहा था, भँवर मे पडकर नाव उलट गई तो वह भी डूब गया। लाश का पता नही चला। जब से विधवा हुई थी, तब से माया ससुराल नही गई। बूढी सास थी, आवारा देवर था। खेत-वेत थोडे थे, निर्वाह बडी मुश्किल से होता था। माँ और बडी भाभी के आग्रह से माया मायके मे ही जम गई थी।

मझले भाई जय माधव की पत्नी उसकी हम-उम्र थी और दोनो मे खूब हेल-मेल था। वे एक-दूसरे का नाम नही लेती थी, 'प्रान' 'प्रान' कहकर पुकारती थी। आपस मे शायद ही कोई बात छिपाती रही हो। और, यही हाल जय माधव और कपिल का था। वे एक-दूसरे को 'मीत' कहते थे। यह मित्रता बचपन से ही चली आई थी।

दोनो भाई बाहर गये हुए थे। छोटा भाई नील माधव मैट्रिक की

तैयारी के सिलसिले मे पिपरा बाजार हाई स्कूल की बोर्डिंग मे रहता था। बडी भाभी पडोस मे गप्पे लडाने गयी थी और माँ उसना चावल तैयार करने के लिए कनस्तरो मे धान उबाल रही थी।

माया स्वेटर बुन रही थी। कपिल आहिस्ते से आया और खडा हो गया। माया की माँ ने देखा तो मुस्करायी। इशारे से कपिल ने बताया कि वह कुछ बोले नही

हमेशा इसी तरह कपिल आता था और माया को चौका देता था। फिर दोनो हँस पडते थे। माँ भी साथ देती थी हँसने मे।

कुछ क्षण खडा रहकर कपिल और भी करीब आ गया। पाकेट से पेन निकालकर माया की पीठ मे भिडा दी तो वह चिहुँक उठी। पीछे गरदन घुमाकर देखा—

—ओह, तुम हो ! मैं तो डर गई ·

—इसमे डरने की क्या बात थी ?

—एकाएक पीठ से ऊँगली-सी कोई चीज़ छू जाए तो तुम भी इसी तरह डरोगे

कुछ क्षण तक दोनो हँसते रहे, उधर माँ भी मुस्कराती रही।

माँ को यह पता था कि दोनो एक-दूसरे से प्यार करते है। पिछले साल गरमियो मे माया की गरदन पर एक भारी फोडा निकला। टीस बढ़ती गई, दिन गुज़रते गए। मगर फोडा पककर फूटा नही। जय माधव और कपिल उसे लहेरिया सराय के बडे अस्पताल ले गये। चीर-फाड तो मामूली ही हुई थी, लेकिन घाव भरते-भरते दस रोज लग गए। जय माधव बीच-बीच मे गाँव आ जाता था। तीमारदारी का पूरा भार कपिल ने ही उठाया था।

माँ ने हुलसकर कहा—कई दिनो के बाद आये हो, कहाँ गये थे बेटा ?

कपिल बोला—कही नही गया था चाची, यही था···

—तो आये क्यो नही ?

—माया नाहक उस रोज़ मुझसे झगड पडी थी•••

—नही माँ, झूठ ? बिलकुल झूठ ! !

माँ हँसने लगी। हँसती-हँसती घर के अन्दर चली गई।

छोटी बहू भाई के गौने के सिलसिले मे मायके गयी हुई थी। कपिल ने पूछा—छोटी भाभी कब तक लौटेगी माया ?

ऊन का लच्छा और सलाइयाँ एक ओर रखकर माया पीढा ले आई। कपिल बैठा।

बिनाई चालू करते हुए माया ने कहा—छोटी भाभी के बारे मे पूछा था न ? वह होली के बाद ही लौटेगी अब •

कुछ क्षणो की चुप्पी के बाद धीमी आवाज मे कपिल बोला—तो तुम तैयार हो न माया ?

माया ने इधर-उधर देखा, कोई नही था। फिर भी वह चुप रही। चेहरे पर गम्भीरता छा गई थी। बिनाई के काम मे मन को जमाए रखना मुश्किल पडने लगा।

—बोलती नही हो कुछ ? क्या बात है माया ?

—मेरी तैयारी से क्या होगा ?

—वाह ! बाकी सब कुछ ठीक हो और तुम्ही तैयार न रहो तो सारा मामला बिगड जाएगा • नही माया, गलत कहता हूँ ?

—तुम भला गलत कहोगे ?

—मेरी बातो का मखौल न उडाओ माया ?

नाराज हो गए ?

कपिल चुप था। उसका चौडा और गोरा मुखमण्डल बडी-बडी आँखो की तरल उदासी को खुलकर उभरने नही दे रहा था। छोटी मूँछे, पतले होंठ, उभरी हुई ठुड्डी ••

माया ने गौर से कपिल की तरफ देखा।

वह अब भी मौन था।

माया शान्त और गम्भीर स्वर मे बोली—उस रोज कह गए थे कि

दुखमोचन भाई को यह सारी बात खुलासा करके लिखोगे और प्रार्थना करोगे कि मेरे भइया को समझा-बुझाकर राजी कर ले मुझे तो बस उन्ही का भरोसा है। तीन साल पहले की बात है, लखनौली की एक लडकी जनकपुर के मेले मे गायब हो गई थी। ढाई महीने बाद पटना के अनाथ महिलाश्रम से उसका पता चला। समाज के डर से घर वाले उसे वापस लेने का विचार छोड चुके थे। दुखमोचन भाई ने कई दिनो तक लखनौली वालो को समझाया-बुझाया, लोग आखिर राजी हो गए और लडकी घर लौट आई। पीछे खादी भण्डार के एक कार्यकर्ता से दुखमोचन भाई ने उसकी शादी करवा दी थी ··

कपिल ने कहा—सुना तो मैंने भी था। अखबारो मे खबर छपी थी 'मैथिल विधवा की भूमिहार युवक से शादी · '

—फिर नही छप सकती है इस तरह की खबर ?

—नित्याबाबू-जैसे दकियानूस यह काम होने भी तो दें !

माया ने छूटते ही कहा—क्या कर लेंगे नित्याबाबू ? दुखमोचन भाई अगर हमारी पीठ पर अपना हाथ रख दें तो किसी की नही चलेगी। नित्याबाबू को अब पूछता ही कौन है ? अच्छा, यह तो बताओ कि दुखमोचन भाई तक अपनी बाते तुमने पहुँचा दी न ?

पहुँचा दी थी—कपिल बोला, मगर आवाज़ बिलकुल फीकी थी—ऐसी कि माया को यकीन ही नही हुआ इस बात पर। वह बुडबुडाई—नही, तुम झूठ बोल रहे हो कपिल !

कपिल अपने झूठ पर अड नही सका, आखिर चुप रह गया। निगाहें नीचे की ओर धरती पर जमी थी। सकोच ने साहस को पछाड दिया था, माया अच्छी तरह समझ रही थी।

वह बोली—कोई बात नही, अब मैं कोशिश करूँगी···

कपिल की पीठ पर मानो चाबुक पडी हो। वह तनकर बैठा। निगाहें माया के चेहरे पर अटक गईं। हडबडी मे कह गया—तुम ? दुखमोचन भाई से तुम कहने जाओगी यह सब ? नही, यह हो नही

सकता, माया, कभी नही ! वह मुझे कैसा घोचू समझेगे ? तुम दो दिन की मुहलत मुझे और दो •

माया के मुँह से एक शब्द भी नही निकला। आँखे उँगलियो, सलाइयो और ऊन के लच्छे पर थी । आज ही उसने डेढ़-साला भतीजे के लिए पूरी बाँहो का स्वेटर बिनना शुरू किया था, बाँहवाली एक पट्टी बिनी जा चुकी थी और उधर माघ का सूरज डूबने वाला था ।

माँ ने आवाज दी—कपिल को नाश्ता नही कराएगी ?

माया ने जवाब मे कहा—छोटी भाभी मायके से आएँगी तो उन्ही के हाथो से तैयार नाश्ता इनको मिलेगा

माँ खिलखिलाकर हँसी—तो बाकी लोग इस परिवार मे कपिल के दुश्मन है । कैसी बात करती है तू भी !

नही चाची—कपिल ने सँभलकर कहा—नाश्ता आज मैं करके चला था ।

—तू तो भारी लजकोटर है कपिल !

—और यही बात मैं कहूँ तो मुँह फुला लेगे बाबू साहब !

माया ने गाल फुला लिए और कपिल की ओर शरमाते हुए देखा। कपिल भीतर-ही-भीतर कटकर रह गया। अभी कुछ ही क्षण पहले माया ने उसकी यह कमजोरी पकडी थी । अकारण और अनावश्यक लज्जा सकोच वाली अपनी यह भारी दुर्बलता खुद को ही खलने लगी • नाश्ता नही किया था फिर भी कह रहा था, करके आया है !

वस्तुत. यह कपिल की पुरानी कमजोरी थी ।

माया ने कहा—भैया आते ही होगे, उनके लिए चिउडा तलने जा रही हूँ। तुम यह न समझ लेना कि सिर्फ तुम्हारे लिए नाश्ता तैयार होगा •

अब कपिल कुछ नही बोला।

माया उठी और रसोईघर मे घुस गई, लेकिन कपिल पीढे पर उसी तरह बैठा रहा ।

आज रात को वह जरूर दुखमोचन तक अपनी बाते पहुचा देगा। प्रार्थना करेगा कि शीघ्र-से-शीघ्र यह काम हो जाय और अगर ˙

कपिल के चिन्तन की चरखी घूमने लगी—और अगर दुखमोचन भाई को यह सन्बन्ध अनुचित जँचे, अनर्गल मालूम हो यह रिश्ता तो साफ बतला दे ˙ मगर क्यो दुखमोचन भाई को कोई हिचक होगी? क्यो नही वह 'स्वस्ति' कहेगे˙˙ मेरे भइया तो मान ही जाएँगे, असल कठिनाई है माया के बडे भाई वेणी माधव को रास्ते पर ले आना ˙ और यह कठिनाई दुखमोचन भाई हल कर ही लेगे ˙

नज़दीक आकर माया की माँ ने कपिल के कधे पर बायाँ हाथ रख दिया। सवेरे से धान उबाल रही थी, चूल्हे मे भूसी और सूखे पत्ते झोकते-झोकते दाहिना हाथ काला पड गया था।

—किस फिकर मे पडे हो बेटा?

—नही चाची, किसी फिक्र मे नही पडा हूँ।

मशीन की तरह कपिल के मुँह ने शब्द उगल दिए। वह सूनी निगाहो से वृद्धा की तरफ देखने लगा।

—नही बेटा, कोई बात होगी!

—उहुँ!

माया ने उधर रसोईघर से कपिल के पक्ष को सँभाला, बोली—इनको सोचने का रोग लग गया है माँ!

कपिल ने मुस्कराने की कोशिश की तो माया की माँ ने आँख-भौंह चमकाकर कहा—कठहँसी से मुझे तुम ठग नही सकोगे, मैं सब समझती हूँ बेटा! ˙˙˙

बडी बहू पडोस के घरो का फेरा लगाकर वापस आ गई। उसने भी शिकायत की कि कपिल अब कई-कई रोज़ बाद क्यो आता है˙˙˙

भीतर की दुनिया को छोडकर कपिल को अब बाहर आना पडा। बडी भाभी की बातो मे दिलचस्पी लेना आवश्यक था न!

घी मे तले हुए चिउडे और ; और परवल का अचार—काँसे की

छिपिया मे नाश्ता आया, पीतल के गिलास मे पानी।

जैसे-तैसे नाश्ता करके कपिल बाहर निकल आया।

अपने घर पहुँचकर उसने दुखमोचन के नाम एक पत्र लिखा और उसे लिफाफे के अन्दर डाल दिया। अपने सकल्प के अनुसार आज ही सब-कुछ वह दुखमोचन के दरबार मे पेश करने चला। चलते समय अपनी भाभी से इतना-भर कहता आया कि रात को वह कुछ देर से लौटेगा।

गाँव मे राजपूतो के आठ-दस परिवार ही थे। उनके पास काफी तो नही मगर कामचलाऊ जमीन-जायदाद थी और साधारण तौर पर वे सुखी थे। सिसोदिया खानदान का एक राजपूत सरदार ढाई-तीन सदी पहले पच्छिम से आकर नेपाल-तराई मे बागमती के किनारे आबाद हो गया था। उसके सात बेटे और ग्यारह पोते थे। उन्ही मे से एक आकर यहाँ टमका-कोइली मे बस गया था। गाँव से पश्चिम पाँच हजार बीघा ज़मीन का एक बडा चक उसे राजा रत्नेश्वरी नन्दनसिंह के पूर्वजो से पारितोषिक मिला था। आधी से अधिक ज़मीन दूसरो की हो गई थी, फिर भी उन आठ-दस परिवारो के लिए उतनी ज़ायदाद काफी थी। अखिलेश्वर और कपिलदेव के पिता का नाम था बाबू परमेश्वरसिंह। पाँच सौ बीघा ज़मीन के मालिक थे। शाहखर्ची उनमे कूट-कूटकर भरी थी। मरे तो पन्द्रह हजार का कर्ज छोड गए थे। अब भी ढाई-तीन सौ बीघा ज़मीन अखिल और कपिल के अधिकार मे थी अवश्य, लेकिन उपज का हाल अच्छा नही था। कभी बाढ, कभी सूखा! दूसरे काश्तकारो की तरह ये लोग भी तबाह थे, इनकी भी पुश्तैनी जायदाद साल-दर-साल छीजती जा रही थी।

राजपूतो का यह टोला गाँव के पश्चिम-दक्षिण कोने मे आबाद था। इनके घरो की दीवारें पक्की ईंटो की थी। दूर से ही इनके मकान चमकते थे।

कपिल दुखमोचन से मिलने चला तो शाम अच्छी तरह उतर आई

थी। माघ की अमावस थी शायद आज। कई दिनो से पछिया हवा चल रही थी। जाडो की कनकनी हाड-हाड को छू रही थी मानो! खद्दर की कमीज पर भागलपुरी अण्डी डालकर कपिल घर से निकला था, कोट लेने की सुध ही नही रही थी।

गाँव के दक्षिणी छोर पर पहुँचकर उत्तर की तरफ मुडा ही था कि मिहिरकुमार और अमलेन्द्र मिल गए। उनसे पता चला कि दुखमोचन इलाके के एम० एल० ए० बाबू शुभकर राय के लडके की शादी मे बरात के साथ सहरसा गये हैं, परसो-तरसो लौटेगे। थोडी देर कपिल नौजवानो से बातें करता रहा फिर वापस आ गया। एक बार इच्छा हुई कि पत्र मामी को दे आए, फिर सोचा कि कही खोलकर वह पढ न लें।

ये दो-तीन दिन उसके बडी बेचैनी से कटे, किन्तु मन सकल्प से डिगा नही। हाँ, इतना ज़रूर हुआ कि लिफाफा फाडकर पत्र का मजमून बार-बार देखा। उसमे एक-आध लाइन घटायी और बढायी। फिर लगा कि यह आवेग मे लिखा गया था, शान्त और स्थिर चित्त से पत्र दोबारा लिखा जाना चाहिए। खैर, दूसरी दफा लिखा गया पत्र।

तीसरे रोज कपिल से रहा नही गया। दोपहर का खाना खाकर वह पिपरा बाजार चला आया। प्रजा-समाजवादी पार्टी की थाना-कमेटी के दफ्तर मे साथी सिहासनराय से बाते करता रहा और शाम को पाँच बजे ट्रेन-टाइम पर स्टेशन पहुँचा।

गाडी तो वक्त पर आयी, लेकिन दुखमोचन नही आये। साथी सिहासन की राय हुई कि एकान्त मे मिल लेना आवश्यक है, रात की ट्रेन से आ ही जाएँगे दुखमोचन।

कपिल शाम को गॉव नही लौटा, बाज़ार मे ही रह गया। बहुत दिनो के बाद दो साथी मिले थे। जमकर बातचीत चली। समान अवस्था वाले दो दिलो की अटूट मैत्री थी। लगता था कि रात बीत जाएगी लेकिन गप्पो का सिलसिला खत्म नही होगा···आधी रात को एक बजे दक्षिण से ट्रेन आती थी। दोनो मित्र स्टेशन पहुँचे। पान और

बीडी और गप्प डेढ घण्टे की इन्तजारी के बाद ट्रेन आयी, बेहद लेट थी। गनीमत यही थी कि दुखमोचन दिखाई दे गए।

सिंहासन ने झोला थामते हुए कहा—अब इत्ती रात को कहाँ जाएँगे दुखमोचन भाई ? चलिए, पार्टी-ऑफिस मे सो लीजिएगा। क्यो कपिल ?

दुखमोचन ने हँसकर कहा—बडे आराम से आया हूँ भाई, सैकेन्ड-क्लास का सफर था न !

सिंहासन बोला—माले मुफ्त दिले बेरहम ! आखिर आप भी सही रास्ते पर आ रहे हैं अब। है न दुखमोचन भाई ?

इस पर तीनो खुलकर हँसे।

स्टेशन के फाटक से निकलते-निकलते दुखमोचन ने सिंहासन से कहा—शुभकर बाबू सर्वोदयी आदर्शो पर चलने वाले कांग्रेसी ठहरे। लडका तो बाप से भी दो कदम आगे निकला। उसका हठ था कि तिलक या दहेज के तौर पर एक पैसा भी नकद रकम ली जाएगी तो वह विद्रोह कर बैठेगा। आखिर वही बात हुई। लेन-देन की चर्चा तक नही सुनी गई। हाँ, बरातियो के स्वागत-सत्कार मे कन्यापक्ष वालो ने काफी-कुछ खर्चा कर डाला है। देखो न, तीस जने हम जोगिवाडा से सहरसा गये थे, आना-जाना सेकेन्ड क्लास मे ही हुआ है

साथी सिंहासन मुस्कराता रहा पहले, अब भभाकर हँस पडा। बोला—भारी मालदार होगे शुभकर बाबू के समधी। हमारे सर्वोदयी विधायक महोदय ने अपने समधी की इस शाहखर्ची पर अकुश नही डाला ? अजी दुखमोचन भाई, देखते चलिए। बहू जब शुभकर बाबू की हवेली के अन्दर पैर रखेगी तो हजारो का सोना उसके बदन पर होगा…

—सो तो होगा रायजी !

—फिर कैसे आपने कहा, लडका बाप से दो कदम आगे निकला ? दुखमोचन चुपचाप चलते रहे।

कपिल ने आहिस्ता से छोटा-सा बन्द लिफाफा उन्हे थमा दिया।

अकचकाकर दुखमोचन ने पूछा—क्या है ?

—पीछे इतमीनान से देख लीजिएगा ।

अँधेरे मे लिफाफे की सफेदी तो नजर आ रही थी, लेकिन अक्षर बिलकुल अस्पष्ट थे । लिखावट पतली-नीली रोशनाई की थी, इससे वह अक्षरो का मामूली आभास-मात्र दे रही थी ।

दुखमोचन ने लिफाफे को सँभालकर पॉकेट मे रख लिया । कुछ क्षण बाद साथी सिंहासन से पूछा—दफ्तर मे लालटेन तो होगी न ?

—है दुखमोचन भाई, मगर आप चलिए भी तो !

—चल ही तो रहा हूँ अब और कहाँ मिलेगी लालटेन ?

पार्टी-ऑफिस मे आकर दुखमोचन ने बेताबी से लिफाफा खोला और चिट्ठी पढ डाली ।

कपिल का दिल धडक रहा था । वह सोच रहा था पत्र पढकर दुखमोचन भाई का चेहरा बेहद गम्भीर हो उठेगा, वह चुपचाप लेट जाएँगे और देर तक उन्हे नीद नहीं आएगी ··वह किसी से कुछ बोलेंगे नही ।

लेकिन यह सब कुछ नही हुआ ।

दुखमोचन ने आदि से अन्त तक वह पत्र दो बार पढा और फिर उसे सँभालकर उसी तरह पॉकेट के हवाले किया ।

साथी सिंहासन राय ने पूछा—क्या था भाई साहब ?

स्वाभाविक लहजे मे दुखमोचन ने जवाब दिया—कुछ नही राय-जी, गाँव-गँवई का हमारा अपना मामला है···

इस सक्षिप्त समाधान से साथी सिंहासन राय को तो तसल्ली हो गई, लेकिन कपिल का हृदय आश्वस्त नही हुआ ।

सिंहासन राय और दुखमोचन देर तक बातें करते रहे, मगर कपिल का थका मस्तिष्क शून्य-सा हो गया था, तो उसे नीद आ गई ।

... सात

नित्याबाबू बारहो महीने अन्दर ही सोते थे और यह तो भला जाडे का मौसम था।

उजली पचमी का तिहाई चाँद कब का डूब चुका था। बैठक वाले पक्के मकान के बरामदे मे लालटेन की धीमी रोशनी ऊँघ रही थी। सीढियो के दोनो ओर रात-रानी की घनी झाडे थी, उनसे उलझ-उलझकर मद्धिम प्रकाश आँगन की सफेद मिट्टी पर चितकबरी परछाईं बना रहा था।

मास्टर टेकनाथ आया तो खम्भ की ओट से कुत्ता गुर्रा उठा। उसे चुमकारकर मास्टर ने शान्त किया तो अन्दर से आवाज आई—क्या है टेकनाथ ?

बाहर नही निकलियेगा ?—मास्टर ने कहा और सूखे गले को थूक से तर कर लिया।

बोलने मे कलेजे पर ज़ोर पडा तो खाँसने लगे नित्याबाबू। खाँसती आवाज़ मे ही नौकर को पुकारा—घुटरा ! घुटरा रे ! घुटरा !

उधर कहीं से निद्रामग्न व्यक्ति की अलस-अस्फुट ध्वनि आयी जो कि गले से ही नहीं बल्कि नाक से भी निकली थी—ऊँ ऊँ—!

फिर नित्याबाबू ने एक वजनदार गाली दी और तब घूटर ने अन्दर से किवाड खोला आकर।

टेकनाथ कमरे के अन्दर आया तो घूटर लालटेन उठा लाया बाहर से अब उसकी नींद अच्छी तरह टूट चुकी थी, बातें सुनने की नीयत से पलंग के करीब ही बैठ गया।

टेकनाथ कुरसी पर बैठा तो नित्याबाबू ने रेशमी लिहाफ वाली मोटी रज़ाई में से माथा बाहर निकाला। गले से ऊपर काश्मीरी शाल की दुहरी लपेट थी होठ, नाक और कपार-भर दिखाई दे रहे थे।

थकी बूढी आवाज़ में नित्याबाबू ने पूछा—क्या बात है टेकनाथ ?

—गाँव की नाक कट रही है नित्याभाई · वेणी माधव की बहन का ब्याह हो रहा है फिर से।

—कब ? कल कि परसों ?

—कल-परसों नहीं नित्याभाई, अभी और इसी वक्त ! दूल्हा कहीं बाहर से नहीं आया है अखिलेश्वर सिंह के छोटे भाई कपिलदेव को शायद आप नहीं जानते हैं, उसी के साथ वेणी माधव अपनी बिधवा बहन की शादी कर रहा है। मुजफ्फरपुर से आर्यसमाजी पुरोहित बुलवाया गया है ·

नित्याबाबू का दिमाग एकाएक ऐसी अनहोनियाँ सुनकर फटने लगा, बोले—ठहरो टेकनाथ, ठहरो ! मैं समझ नहीं पाया, क्या हो रहा है · वेणी माधव की बहन का ब्याह ? अरे उसकी शादी तो कई साल पहले ही हुई थी, गौना भी हो गया था। विधवा हो गई थी।··

टेकनाथ समझ गया कि आज अफीम की मात्रा ज्यादा ले ली होगी। वह बोला—नित्याभाई, यह दुखमोचन जो न करे ! सारी खुराफात अकेले उसी के दिमाग की उपज है नित्याभाई ! आप और मुन्शीजी अगर चाहें तो अब भी इस कुकर्म का प्रतिकार हो सकता है···

दुखमोचन का नाम सुनते ही नित्याबाबू की चेतना ने झटका खाया। वह उठे और पलग की सिरहाने वाली ऊँची पट्टी से पीठ टिकाकर बैठ गए। खाँसते-खाँसते पूछा—अब खुलासा बतलाओ, दुखमोचन ने क्या किया है ? वेणी माधव की विधवा बहन का ब्याह करवा रहा है ?... 'शिव शिव शिव शिव ! अब यह गाँव भले आदमी के रहने लायक नही रह गया टेकनाथ !

नौकर से कहा—गरम पानी तो ले आ घुटरा, कुल्ली करूँगा। मुँह का स्वाद खराब हो गया है

फिर टेकनाथ को लक्ष्य करके बोले—मै तो बूढा हूँ, मगर तुम लोग क्यो नही दुखमोचन की नाक मे नकेल डालते हो ? उसे न किसी का लिहाज रह गया है, न डर। समूचा गाँव उसकी मुट्ठी मे है।

—तो इसमे मेरा क्या कसूर है नित्याभाई ?

तो मेरा कसूर है ?—खिसियाकर नित्याबाबू ने कहा—क्या करते रहते हो ? इतना भी नही होता कि चौकस रहकर पास-पडोस की गतिविधि का अन्दाज रखो ! अब क्या कर लोगे ? जाओ, रतजगा करने से फायदा ?

सूती कुरते पर खद्दर की चादर ओढ रखी थी टेकनाथ ने। नीचे पतली धोती और पैरो मे कपडे के जूते थे। गगा-जमनी बालो की खूँटिया माथे पर चमक रही थी। चौडे चेहरे पर नुकीली नाक तो और भी चमक रही थी।

धोती की खूँट से नाक पोछकर वह बोला—मुन्शीजी के यहाँ भी मैं गया था। उन्होने कहा, यह तुम लोगो का अपना बभनौली मामला है, दूसरी जात के लोग इसमे क्या करेंगे ?

—रमाकान्त से नही कहा ?

—वहाँ भी गया था, मगर दुखमोचन का नाम सुनकर वह भी चुप मार गए नित्याभाई !

—राजकुमार से नही मिले ?

—मिहिर ने बतलाया, पिताजी निर्मली गये है बस, अब और मै किसी के यहाँ नही जाऊँगा। जब भगवान् की यही मरजी है तो हम-आप क्या कर लेंगे नित्याभाई ?

—हूँ

शाल गरदन के नीचे खिसक आया था। नित्याबाबू की गजी चाँद लालटेन की मद्धिम रोशनी मे चमक रही थी, यद्यपि बीमारी और बुढापे ने साँवले चेहरे को लगभग काला कर दिया था।

कुछ क्षण चुप रहकर नित्याबाबू अपने-आप बोलने लगे—हे रावणेश्वर बम्भोलेनाथ, यह कैसा जमाना आया है ! जात पात और धर्म-कर्म पर सकट-ही-सकट लदता चला जा रहा है · कल के छोकरे हम बूढो की नाक मे कोडी बाँध रहे हैं। चालीस-पैतालीस की उमर के बाद सिर्फ बाल ही पकने लग जाते हो ऐसी बात नही, बल्कि अपमान और तिरस्कार भी शुरू हो जाता है। घर के लडके तक बात नही मानते हैं अच्छा हो कि दुखमोचन हमारा गला घोट दें ·

फिर एकाएक टेकनाथ से पूछ बैठे—तुम्हारी क्या उमर होगी टेकनाथ ? चालीस ! पैतालीस !

—छियालीस नित्याभाई, और आपकी ?

—सडसठ खत्म हो गई, अब चैत से अडसठ चढेगी। घूटर ने गरम पानी का गिलास लाकर दिया और पीकदानी उठाकर मुँह के नजदीक रखी। नित्याबाबू ने मुँह मे पानी लेकर दो-तीन बार कुल्ली फेकी।

—पान खाओगे टेकनाथ ?

—लाइए !

पान देकर बोले—अच्छा, अभी जाकर सोओ अब ! हाँ, इतना मैं जरूर कहूँगा कि बडे बुरे दिन आ रहे है · हम तो खैर दो रोज और हैं, मगर तुम जैसो के लिए जीवन पहाड हो जाएगा टेकनाथ ! दुखमोचन तो खाली नही बैठेगा, एक-न-एक खट-पट लगाए ही रहेगा और तुम लोग चुपचाप बरदास्त करते जाओ सब-कुछ···

टेकनाथ चुपचाप सुरती तैयार कर रहा था । निगाहे नित्याबाबू के चेहरे पर लगी थी । बोला—मगर आपने भी तो आमने-सामने दुख-मोचन को कभी रोका-टोका नही ! जो आदमी बहकने लगे, उसका इलाज शुरू मे ही अच्छा रहता है नित्याभाई, कि नही ?

पान की पीक उगालदान मे फेककर उन्होने कहा—यह पाँच वर्ष तक कलकत्ता रहा, फिर जाने क्या सूझा कि जमा-जमाया काम छोड़-कर गाँव आ गया । उन दिनो अगर मुझे पता होता कि आगे चलकर दुखमोचन खुराफाती धूम्रकेतु निकलेगा तो मै तभी इसे हमेशा के लिए सुला देता, मगर ·

नित्याबाबू ने कपार ठोक लिया । अपनी पिछली अदूरदर्शिता जिस तरह इस वक्त दुखमोचन के सिलसिले मे उन्हे खली उस तरह कभी किसी प्रसग मे नही खली थी ।

अभी आप आराम कीजिए नित्याभाई !—टेकनाथ ने कहा—मै उधर चलकर देखता हूँ, कल आकर फिर बताऊँगा···

—ज़रूर ! जरूर ! टेकनाथ ज़रूर ! तुम्ही तो बुड्ढे की आँख-कान हो भाइया · वरना बुढापे की इस नजरबन्दी मे मेरे जैसे अपग को दुनिया-जहान का कुछ भी पता चलता ? ऊँहु, बिलकुल नही !

सुरती फाँककर वह उठा और चुपचाप बाहर निकल आया । उसे लगा कि नित्याबाबू अकेले आगे नही होना चाहते । गाँव मे और कोई नही था जो नित्याबाबू की तरह पुरानी-परम्परा का प्रबल समर्थक हो और जिस पर टेकनाथ की आस्था हो ।

—कल शाम को अवश्य आना टेकनाथ, सोच-विचारकर सही नतीजे पर पहुँच जायेंगे···

नित्याबाबू ने अन्दर से ही कहा और टेकनाथ का सक्षिप्त जवाब सुनाई पडा—आऊँगा !

रात आधी से अधिक बीत गई थी । धुन्ध ने नक्षत्रो की सहज-कान्ति कम कर रखी थी । टेकनाथ वेणी माधव के दालान पर आ

बैठा। वहाँ छप्पर की पाढ से साफ शीशे वाली एक नई लालटेन टँगी थी, मद्धिम और मीठी रोशनी मे समूचा दालान आलोकित था। कचन और कन्हाई अलग बैठे बातें कर रहे थे।

हवेली के अन्दर से आवाजे आ रही थी, कभी जोरदार और कभी हल्की।

टेकनाथ ने फुसफुसाकर पूछा—कहो कचन, दुखमोचन अन्दर हैं कि अपने घर चले गए ?

कचन ने शकित दृष्टि से मास्टर को देखा, कन्हाई तो पूछ ही बैठा—क्या काम है तुमको दुखमोचन बाबू से ?

—काम ? हे हे हे हे क · आ ··आ···आम ? हे हे, काम तो उनसे कोई नही है हे हे हे हे ··

—तो फिर ?

—माया का ब्याह हो रहा है, सोचा, आशीर्वाद दे आऊ ··दूब अच्छत छीट आऊँ माथे पर ·

अन्तिम वाक्य दोहराता हुआ जब माधव निकल आया उधर से—दूब-अच्छत छीट आऊँ माथे पर · दूब-अच्छत ! नही-नही, मास्टर, आपके आशीर्वाद की कोई जरूरत नही है यहाँ ! आशीर्वाद देने के लिए नही, आप तो भेद लेने के लिए पधारे हैं यहाँ· ·क्या मैं झूठ कहता हूँ मास्टर ?

टेकनाथ सिटपिटा गया। कचन और कन्हाई चुप थे, मगर जय-माधव के मुँह की भाप कम नही हो रही थी। वह अभी और कुछ कहता, मगर एकाएक दुखमोचन सामने आ गए तो मानो जबान ही सिकुड गई।

क्यो मास्टर को परेशान करते हो—दुखमोचन ने जय माधव से कहा—ऐसा मत सोचो कि हमेशा अपने होठो पर कलई किये रहता है···अरे, बातें सबकी सुना करो जय माधव !

फिर दुखमोचन मास्टर की तरफ रुख करके बोले—कहो टेकनाथ

कैसा चल रहा है आजकल ?

तुमसे तो कभी मुलाकात ही नहीं हो पाती दुखमोचन !—मास्टर ने आश्वस्त स्वर में कहा और ऊपरी हँसी हँसता रहा।

मगर दुखमोचन ने यह नहीं पूछा कि उसे इस शादी की खबर किसने दी। अगले ही क्षण जय माधव की पीठ पर हाथ रखकर बोले—अरे, मास्टर को पान-वान नहीं दिया लाकर ?

—आ जाएगा, कोई जल्दी थोड़े है ? काज-परोजन के मौके पर अबेर-सबेर हो ही जाती है भइया ? और यह तो अपना ही घर ठहरा न ?

टेकनाथ ने ये शब्द चाटुकारी लहजे में कहे तो दुखमोचन की तबीयत हुई कि चुभने-चिकोटने वाली चार बातें कहकर उसके दिल पर रंदा फेर दे और घायल शिकार को छटपटाता छोड़कर वापस हवेली के अन्दर चला जाए। लेकिन नहीं दुखमोचन ने ऐसा नहीं किया। उसे अपने-आप पर काबू पाने का गुर हासिल हो चुका था।

टेकनाथ की इच्छा थी कि किसी तरह अन्दर हवेली में जाने का अवसर मिले और दूल्हा-दुल्हिन की एक-आध झाँकी ले ली जाए और चेहरा-मोहरा देखकर घरवालों का रुख मालूम हो ही जाएगा

जय माधव ने दुखमोचन का संकेत समझ लिया था। वह पान लाकर टेकनाथ के आगे रख चुका था।

लो, मास्टर, पान लो !—दुखमोचन ने व्यस्तता के अन्दाज़ में कहा और दो बीड़े थमा दिये। एक अपने मुँह में डाल लिया, बाकी कंचन और कन्हाई की तरफ तश्तरी खिसका दी। ऊपर से एक-एक चुटकी जर्दा और सुरती।

—तो मास्टर, मुझे फुरसत दो अभी।

—मैं तो आशीर्वाद देने आया था दुखमोचन !

—सब-कुछ हो गया मास्टर, आशीर्वाद की विधि भी पूरी हो चुकी है···यों कैसे भी और कहीं से भी आशीष दोगे, उन तक पहुँच ही जाएगी मास्टर !

अब टेकनाथ मास्टर को उठना ही पडा—अच्छा दुखमोचन, इस शुभ कार्य मे मेरी भी हाजिरी स्वीकार हो ! वेणी माधव से कह देना '

दुखमोचन कुछ बोले नही, मुस्कराए जरूर ।

टेकनाथ दालान के बरामदे से नीचे उतरा और रास्ते की तरफ बढ गया । इधर दुखमोचन भी हवेली के अन्दर आए ।

विवाह की विधियाँ सचमुच सारी-की-सारी पूरी हो गई थीं । आर्य-समाजी पुरोहित अपनी 'सस्कार-विधि', स्रुवा आदि सहेज चुका था । दक्षिणा उसे मिल ही चुकी थी । बस, एक ही झझट था । रात का एक बज रहा था, भूखा होने पर भी वह खाना नही खा रहा था । वेणी माधव और उनकी माँ का आग्रह था कि बिना ब्राह्मण-भोजन के सब-कुछ अधूरा ही रह जाएगा

दुखमोचन ने बार-बार अनुरोध किया तो उसने कटोरा-भर गरम दूध और दो केले ले लिये ।

सुबह की चार बजे वाली ट्रेन से पुरोहित को वापस जाना था । वेणी माधव ने बौधू और परमेसर को साथ कर दिया, वे उसे पिपरा-बाजार स्टेशन तक छोडने गये ।

माया की माँ को इस बात का बडा ही क्षोभ रहा कि विवाह के आरम्भ मे कुलदेवता की पिंडी पर न तो मातृका पूजा हुई और न गणेश को ही किसी ने याद किया । बस, खाली हवन ! खाली मन्त्रपाठ ! माँ को ही नही, भाभियो को भी यह सब बडा ही सूखा-सूखा, फीका-फीका लगा···मगर विवाह की बाकी विधियाँ सकुशल सम्पन्न हुई — माँग मे सिंदूर भी पडा, गाँठ भी बँधी, फेरे भी लगे·· सब-कुछ हुआ

यह पहले ही तय था कि आधी पहर रात शेष रहेगी ता माया विदा होगी और सुबह-सुबह ससुराल मे प्रवेश करेगी । दुखमोचन, वेणी माधव, रामसागर, मधुकान्त, कचन, कन्हाई, मिहिर कुमार, रविनाथ आदि मुस्तैद थे कि माया को कपिल के साथ उसके मकान तक पहुँचा आयेंगे ।

दस-पाँच आदमियो को तो शाम को ही भनक मिल गई थी। बाद को पचीस-पचास कानो तक और फैली यह बात। आश्चर्य और उत्सुकता ही वे मुख्य भाव थे जो कि यह समाचार पाकर चेहरो पर उभरे। हाँ, पुरानी पीढी के लोगो ने कहा, राम-राम ! घोर कलियुग आ गया। जो कही नही हुआ था वह टमका-कोइली गाँव मे हो रहा है • लेकिन यह राय ब्राह्मण बूढो-बूढियो की थी, दूसरी जातियो के ज्यादा उम्र वाले लाग नो और ही कुछ कहते सुने गए। उनकी राय मे यह ठीक ही हुआ था विधवा लडकी ने रँडुआ लडके से सम्बन्ध कर लिया तो क्या बुरा किया ? इधर-उधर भटकती और भरस्ट होती तो गाँव-कुल का नाम डुबाती वह अच्छा होता कि यह अच्छा हुआ ? दस-पाँच दकियानूसो को छोडकर बाकी लोगो का ऐसा ही विचार था।

वेणी माधव की स्त्री ऊची नाकवाले खानदान की लडकी थी। उसे यह सम्बन्ध बिलकुल नही जँचा। प्राचीन सस्कारो मे पली हुई माँ एक ओर थी, दूसरी ओर थी लडकी के जीवन को सुखमय देखने की लालसा मे असवर्ण विवाह तथा पुनर्विवाह का प्रस्ताव कबूल करने वाली माँ एक ही बुढिया के अन्दर दो माताएँ थी ! दोनो मे डटकर सघर्ष हुआ था और आखिर मे यह दूसरी मा ही जीत गई थी। वेणी-माधव खुद काफी समझदार था और जमाने का रुख उससे छिपा नही था। दुखमोचन के मुँह से मगया और कपिल के पुनर्विवाह का प्रस्ताव सुनकर उसके दिमाग ने झटका नही खाया था, जरा भी उत्तेजित या क्षुब्ध नही हुआ था और माँ को तो इन दोनो ने कई तरह से समझाया था, अलग-अलग भी और साथ साथ भी।

वेणी माधव के बूढे ताऊ पण्डित ललितनारायण सस्कृत के अच्छे-खासे विद्वान् थे, बारह साल काशी मे रहकर महामहोपाध्याय शिवकुमार मिश्र से व्याकरण-शास्त्र का अध्ययन किया था। बीकानेर और राजकोट मे तीस वर्ष तक अध्यापक रहकर पिछले पन्द्रह वर्षों से अब बुढापे के विश्राम का उपभोग कर रहे थे। लडका-फडका अपना तो था नहीं,

पत्नी भी बहुत पहले सिधार चुकी थी, यही तीनो भतीजे पण्डितजी के लिए सब-कुछ थे। सेवा-शुश्रूषा मे त्रुटि नही रहती थी। लेकिन आज शाम को दालान पर और अन्दर हवेली मे पण्डितजी को उथल-पुथल नजर आई तो उन्होने बडे भतीजे की छोटी लडकी से अकेले मे पूछा। उसने कान से मुँह सटाकर कहा, बूआ की शादी होगी · बुढऊ ने छोकरी के गाल पर अविश्वास की हल्की चपत लगाई। थोडी देर बाद बडी बहू से पूछा तो उसने खुलासा नही बतलाया। जरा-सी अफीम लेते थे रोज शाम को, आधी रात तक गाढी नीद आती थी।

अभी ढाई बजे के करीब अफीम का असर हटा और नीद टूटी तो पण्डित दालान की तरफ की अपनी बाहरी कोठरी से लोटा और छडी लिये निकले नजदीक वाले पोखर की ओर दिशा-फरागत के लिए बढे ही थे कि कचन की बूढी माँ मिल गई। राह रोककर उसने ललित-पण्डित से पहले तो हाथ चमकाकर पूछा और पीछे ब्याह वाली बात खुद ही बता दी···

पण्डित लौटे तो गुस्से के मारे थर-थर काँप रहे थे। पानी-भरा लोटा दालान के बरामदे मे पटक दिया और छडी सभालकर अन्दर हवेली मे आ गए।

पुरोहित को विदा करके वेणी माधव और दुखमोचन बैठे थे। इधर-उधर की बाते हो रही थी। अभी दस मिनट हुए थे खाना खाया था। माया और कपिल को तो खिला-पिलाकर पहले ही घर के अन्दर कर दिया गया था। बडी बहू और बच्चे सो चुके थे। माँ और छोटी बहू, जय माधव और नील माधव कामो मे लगे थे।

ताऊ तेजी से आए और दुखमोचन पर अन्धाधुन्ध छडी चलाने लगे—चाडाल! पापी! विधर्मी!— मुँह से यही तीन सम्बोधन निकाल रहे थे। दुखमोचन सिर को बचाने की नीयत से बाँहो को आगे करके खडे हो गए और वेणी माधव ने कुर्सी से उठकर ताऊ को बाँहो मे बाँध लिया। उधर से जय माधव दौडा, पण्डित के हाथ से छडी छीनकर

परे फेंक दी। अब विफल क्रोध कण्ठ के रास्ते गालियाँ बनकर बाहर आने लगा•••

छडी बेंत की नही, विन्ध्याचली बाँस की थी। छ-सात प्रहार पीठ पर पडे थे, तीन-चार कन्धो पर, एक चोट दाई ओर कनपटी पर पडी थी। दर्द की जलन पीकर दुखमोचन बोले—बस ताऊजी, बाकी यही बचा था ? आपने आखिर आशीष दे ही डाली ••बुजुर्गों की दुआ के बिना दुनिया का कोई काम आज तक पूरा नही हुआ है • बडा अच्छा किया आपने !

सुबह तक के लिए इन्हे कोठरी के अन्दर बन्द कर रखो वेणी-माधव !—कमाण्ड की टोन मे दुखमोचन ने कहा।

वेणी माधव ने ताऊ को कन्धे पर उठा लिया और नील माधव वाली छोटी कोठरी मे रख आए, किवाड लगाकर बाहर से साँकल चढा दी। भीतर से अब भी पण्डितजी की गालियाँ बाहर आ रही थी।

चोट ज्यादा नही पडी—दुखमोचन ने मुस्कराकर कहा—लेकिन घण्टे-भर की छुट्टी दो मुझे, जरा हो आऊँ !

वेणी माधव तीनो भाई चुपचाप सहमे-से खडे थे। दुखमोचन की बात का मौखिक जवाब तो किसी ने नही दिया, लेकिन वेणी की डबडबाई आँखे मानो कह रही थी—भइया, यह भी तो तुम्हारा अपना घर है न ! ••

और माँ तो सचमुच रो ही पडी। उनकी रुलाई सुनकर अन्दर घर से कपिल भी निकल आया। उसकी पीठ ठोककर दुखमोचन ने कहा—घबडाना नही कपिल, तुम तो राजपूत हो ! फिर आगे बढकर अपनी अण्डी की चादर की खूँट मे माया की माँ के आँसू पोछ दिये और बाहर निकल आया।

मामी इन्तजार मे सो नही सकी, अब तक जगी थी।

दुखमोचन सब-कुछ बताकर अन्त मे बोला—बनियाइन और कुर्ता न होते तो चमडी छिल जाती। हाँ, कपार मे अलबत्ते चोट लगी है •

लालटेन की बत्ती तेज करके मामी ने दुखमोचन का कपार देखा तो मुँह से चीख निकल गई— ईशी-शी-शी-शि-श् ! · बाप रे ! बाप रे ! बाप रे !

—कुछ हुआ भी तो हो ? नाहक बाप-बाप कर रही हो···

मामी की आँखे छलछला आईं, रुआँसी आवाज मे कहने लगी—तुम्हे मार डालेगे इस गाँव के लोग ! दुनिया-भर की मुसीबते अपने सिर पर ढोए चलते हो· बोटी-भर को मास है ठठरी पर और रावन-अहिरावन से कुश्ती लडेगे ! कैसे कुठाँव पर राच्छस ने मारा है··· राम राम राम राम

दुखमोचन गम्भीर स्वर मे बोले—अरे, कुछ नही हुआ है मामी ! हल्दी-वल्दी लगा दो, ठीक हो जाएगा· अब इस वक्त चीखोगी-चिल्लाओगी तो व्यर्थ का तमाशा खडा होगा। सोने दो, किसी को न जगाओ !

दुखमोचन उधर अपनी कोठरी के अन्दर गये, इधर मामी ने क्षोभ और व्यग्य की आवाज मे कहा—हुँह ! न जगाऊँ किसी को ! सिर फुडवाकर आए है और नसीहत बघार रहे है तबीयत तो यही करती है कि चीख-चीखकर सबको जगा दूँ, लोग इकट्ठे हो तो बताऊँ··· देखो अपने गाँव के बुजुर्ग विद्वान् की काली करतूत ! · वेणी माधव का ताऊ नही है, वह तो भारी ब्रह्मराक्षस है हुँ हुँ हुँ ·

छोटी बहू की नीद टूट चुकी थी। वह जल्दी-जल्दी हल्दी पीस लाई। मामी ने दुखमोचन के कपार पर हल्दी थोपकर ऊपर कपडे की पट्टी बाँध दी।

दुखमोचन पलग पर उतान लेट गए, मामी माथे की मालिश करने लगी।

पलक झिपने लगी तो ऊँघती आवाज मे दुखमोचन बोले—घण्टा-डेढ घण्टा मे मुझे जगा देना मामी, माया को कपिल के घर पहुँचा आना है · फिर दिन-भर आराम ही तो करना है कल !

आठ....

कुएँ के आगे मचान पर सफेद और बैगनी सेम की बेलें लतरी हुई थी। पत्तो, फूलो और फलियो से लता-वितान ढका पडा था। जरा हटकर क्यारियो मे पात-गोभी के बीस-एक मुकुटनुमा पौधे इठला रहे थे। बैंगन के बौने झाडो पर बुढापा उतर आया था। पके-पाढे दानेदार गुच्छो के वज़न से भी सौफ की डठलें झुकी नही थी।

सुखदेव दोपहर का खाना खाकर तीन घण्टे सोए और अब लेटे-ही-लेटे अखबार देख रहे थे।

पाँचवाँ पृष्ठ पढकर छठा पृष्ठ पलटते ही चटकीले ढग से छपे हुए एक भारी विज्ञापन पर उनकी आँखें अटक गईं · प्लेट मे टमाटर, बैंगन और सेम की फलियाँ थी। साफा बाँधकर एक मुस्कराता चेहरा उँगली के इशारे से बता रहा था—इनको तलने और पकाने मे फलाँ घी का इस्तेमाल कीजिए, कई गुना ज्यादा स्वाद मिलेगा ·

वह इश्तहार पण्डित सुखदेव को बडा ही आकर्षक लगा। बाद को जो भी कुछ खबरें देखी, उन पर पण्डित का ध्यान नही जमा।

हारकर उठे और बरामदे मे आकर तख्तपोश पर बैठे। खैनी मलते-मलते छोटी भतीजी को पुकारा तो वह दौडी आई। सटकर खडी हुई और ताऊ की गर्दन सहलाने लगी।

भतीजी के होठो से नाक लगाकर सुखदेव ने साँस खीची और बोले—दूध-भात खाकर आई है ?

ऊँ !—टुनू ने मचलकर कहा।

—अच्छा, मेरा एक काम कर दे ! करेगी ?

—जल्दी बताइए, अपना काम छोडकर आई हूँ ··

सुखदेव ने हँसकर कहा—एह ! बडी काम वाली हुई है ··

तो मै झूठ कहती हूँ ?—मचलकर बोली टुनू—चलिए अन्दर दिखलाती हूँ अपना काम आपको !

—अच्छा ! अच्छा ! ! ! !

फिर पलकें झपककर सकेत से जानना चाहा कि क्या काम कर रही है। ताऊ के कान से होठ लगाकर टुनू फुसफुसाई—गुड्डे का कोट बनवा रही हूँ, बहन और पद्मा नाप लेकर कपडे कतर रही हैं · मशीन तो अपने यहाँ है नहीं, पद्मा की भाभी के पास है। सिलाई वही होगी···

काका की हल्की चपत से उत्साहित होकर उसने कहा—चाची तो हाथ से भी सी लेती है, लेकिन कोट मशीन पर ही अच्छा सिलता है··· नही ताऊजी ?

सुखदेव की आँखे फैल गई, विनोद मे कहा—बाप रे ! सीने-पिरोने की सारी विद्या मेरी टुनिया जानती है ··

छोकरी ने अपनी प्रशसा मे फूलकर पूछा—क्या काम था आपका ?

—चगेरी लेती आ बेटा !

—बस ! और कुछ नही ?

—नही रे !

टुनू समझ गई कि काका सेम की फलियाँ तोडेंगे। वह दौडकर गई और चंगेरी ले आई।

सुरती फाँककर सुखदेव उठे। टुनू वापस जाने लगी, तो पूछा—मामी कैसी हैं रे?

—बताती थी कि आज थोडा आराम है ··

अन्दर दुखमोचन वाले बरामदे मे चटाई पर सुजनी बिछाकर मामी लेटी पडी थी। चमकी अपनी जाँघ पर उनकी जाँघ लेकर हौले-हौले चाँप रही थी। अपर्णा और पद्मा सामने वाले दूसरे बरामदे मे गुडडे के कोट के लिए कपडे की कतर-ब्योंत कर रही थी। टुनू का ध्यान निगरानी मे था। योगेन्द्र स्कूल गया हुआ था।

छोटी बहू दाल पछोरकर फारिग हुई तो मामी के सिरहाने आ बैठी। उसने मामी का माथा गोद मे ले लिया और हल्के हाथो से दबाने लगी। मामी ने आहिस्ते से कहा—रहने दो छोटी बहू! मैं तो रात-दिन पडी रहती हूँ, आराम-ही-आराम है। काम करते-करते तुम्हारे हाड-गोड चटक रहे होंगे, ज़रा सुस्ता लो न!

सुस्ता तो रही हूँ मामी!—छोटी बहू ने मामी की आँखो मे झाँककर देखा और हँसकर बोली—एक काम से हटकर दूसरे काम मे लग जाना भी सुस्ताना होता है · नही होता है मामी?

मामी चुप रही, मगर चमकी मुस्कराई, कहा—बेजा नही कहती है जोगी की अम्मा, ठीक ही कहती है · मगर आठो पहर हाथ-गोड नाचते रहें तो सुन्न पड जायँ, नही मामी?

समर्थन मे मामी की पलकें झपक गईं।

पिछले दस दिन से बवासीर ने परेशान कर रखा था। खूनी बवासीर थी यह। साँवला-सलोना चेहरा सूख-सिकुडकर काला पड गया था। आँखे निकल आई थी। लेटे रहना ही अच्छा लगता था। खाली मन पिछले जीवन की स्मृतियो के बीहड जगल मे भटका करता था भरे-पूरे परिवार का आनन्दमय सामूहिक ढाँचा · तीन भाई और दो बहनें, बीमार माँ और सनकी बाप, उत्सव-त्योहार-नाच-गान-नाटक-भण्डारा, शादी और गौना, दूल्हा, सास-ससुर, ननद-ननदोई, देवर ··

बस एक ही तो देवर था—लेकिन वह अपना सगा देवर कहाँ था ? नही था सगा देवर ! वह तो पति की फूफी का सौतेला था···

यहाँ आकर मामी के चिन्तन का झरना मानो सौ फुट ऊपर से नीचे गिरना था—निराधार और तिरछा !· उस लाडले लीलाधर ने अपनी इस मामी को गलत समझा, बिलकुल गलत ! नारी-सुलभ सामान्य नेह-छोह ने नही, बल्कि अपने अविवेक ने उसकी मति-गति हर ली ··पितो-झिया की गुठलियो से एक सौ आठ दानो की माला बनाकर वह 'शशि-कला' 'शशिकला' जपने लगा था, पता नही अब कहाँ भटक रहा था !

जब से कपिल और माया के ब्याह की बात सुनी थी तब से अक्सर लीलाधर याद आ रहा था। सास-ससुर पहले ही मर गए थे ! साँप के डसने से पति का देहान्त हुआ था और साल-भर बाद यह शशिकला खुद भी मलेरिया के चगुल मे पड गई। लगातार ढाई-तीन महीना बिस्तर से लगी रही। लीलाधर ने जी-जान से सेवा की थी और···

बाएँ घुटने पर घट्ठा था, जामुन की गुठली के बराबर। चमकी ने चुटकी मे ले लिया उसे, खीचती हुई कहने लगी—मेरी भी माँ के घुटने पर ऐसा निशान था। नदी के उस पार गाय लेकर गई थी। गुलेल चलाने वाले एक नौसिखिए का निशाना बहक गया तो माँ घायल हुई। अन्दर-ही-अन्दर गोश्त सड गया, पिपरा बाजार के सरकारी अस्पताल मे ऑपरेशन हुआ ·और मामी, आपको यह क्या हुआ था ?

जाँघ बदलकर मामी ने कहा—चचेरी बहन ने पोखर मे धकेल दिया था। अन्दर पानी मे दो रोज पहले खटमल-भरा तख्तपोश डाला गया था। मै गिरी तो तख्तपोश का कोना घुटने मे 'खच्च' से चुभा। वही निसान है ··

मै तो समझती रही कि कोई भारी फोडा निकला होगा—छोटी बहू ने घट्ठे की अपनी व्याख्या बताई और अपर्णा से ऊँची आवाज मे कहा—वो तेल तो निकाल लाना बच्ची, अपने बाबूजी की अलमारी मे से !

रहने दो !—मामी ने थके स्वर मे कहा और चमकी की तरफ देख-

कर हाथ से कमर चाँपने का इशारा किया।

अपर्णा लाल तेल की शीशी उठा लाई। छोटी बहू ठेंपी खोलने लगी तो चमकी ने लालसा-भरी निगाहों से उस ओर देखा। हाथ मामी की कमर दबा रहे थे, मगर नजर तेल की तरफ लगी थी।

चमकी की यह टकटकी ताडकर अपर्णा ने उँगली उसकी पीठ मे गडा दी और कहा—कलकतिया तेल है, दो ही बूँद रगडोगी तो माथा हल्का हो जाएगा! खुशबू नही आ रही है?

छोटी बहू की बाईं हथेली पर अब भी थोडा तेल था, दाहिनी हथेली से वह मामी का सिर रगड रही थी। अपर्णा ने तेल छुआकर अपनी उँगली चमकी की एक कलाई से पोछ दी, बोली—सूँघकर तो देखो! ऊपर से चमकी ने कहा—हाँ अप्पी, जुलुम है! अनोखी महक है! आँखें नचाकर अपर्णा सामने वाले बरामदे मे चली गई, मगर चमकी का तो माथा ही घूमने लगा। थोडी देर बाद बोली—मामी, एक बात बताऊँ?

बता?—मामी ने कहा।

—साल-डेढ साल के अन्दर किसिम-किसिम का जितना तेल कपिल ने माया को लाकर दिया होगा, उतना न किसी ने देखा होगा न सुना ही होगा।

मामी चुप थी। छोटी बहू की पलकें तन गईं। बुडबुडाई—तेल लाकर देता था?

—क्या नही देता था लाकर जोगी की अम्मा?

—साडी भी लाता रहा होगा?

—रसगुल्ले आते थे

—रसगुल्ले?

—तो मैं झूठ कहूँगी जोगी की अम्मा?

मामी के लिए अब यह चर्चा असह्य हो उठी। उन्होंने चमकी को डाँटा—चुप करती है कि नही। सतवन्ती की नानी··· पाजी कहीं की!···

वह उठ बैठी और अपनी ताकत के मुताबिक हाथ लगाकर चमकी

को आगे की ओर धकेल देना चाहा।

वह खुद ही थोडा हट गई थी, सहमी आवाज मे बुडबुडाई—सभी तो कहते हैं मामी, अपनी तरफ से एक भी आखर अगर मैने फाजिल कहा तो हे गगा मइया, यह जीभ गल जाय •

गगा को गुहराते वक्त चमकी चट् से दक्षिण की दिशा मे मुड गई, हाथ कानो को छू रहे थे।

अपर्णा, पद्‌मा और टुनू। तीनो लडकियाँ तमाशबीन की ललक लेकर करीब आ गई थी।

—क्या हुआ ?

—क्या हुआ ?

अपर्णा और पद्‌मा को जवाब नही मिला। छोटी बहू ने नजर के इशारे से उन्हे हटा दिया।

सामने वाले बरामदे मे आकर पद्‌मा ने आहिस्ते से पूछा—क्या बात थी अप्पी ?

पता नही !—फुसफुसाकर अपर्णा ने कहा—मामी का मिजाज आजकल चिडचिडा हो गया है न ! बडी दुब्बर हो गई हैं, देखती नही हो ?

अँ हूँ ! कुछ जरूर हुआ होगा। तू मुझसे छिपा रही है।

अपर्णा मुस्कराई—तो बता ही दूँ ?

अगल-बगल और पीठ पीछे नजर मारकर उसने देख लिया कि टुनू नही है। अब फुसफुसाकर कहा—पता नही, मामी को माया ने पिछले जन्म मे कितना घूस दिया था ! क्या मजाल कि कोई इनके सामने रत्ती-भर भी उसकी निन्दा करे ! बस, कच्चा ही चबा जाएँगी मामी·· समझी ?

—मगर अभी क्या हुआ था ?

—चमकी ने कुछ कह दिया होगा।

—मामी माया का पच्छ क्यो लेती हैं आखिर ?

—पता नही पद्मा, सँभलकर रहना लेकिन !

कुछ क्षण बाद ही गुड्डे के कोट का कपडा लेकर पद्मा चली गई, अपर्णा मिट्टी गूँधने लगी, चाचा की शाम वाली पूजा के लिए महादेव बनाना था।

छोटी बहू चुप थी, चमकी का चेहरा उदास था।

मामी की निगाहे सूनी थीं, यद्यपि वह सामने देख रही थी।

थोडी देर बाद चमकी ने मामी के पैर पकड लिये और कहा—फिर कभी इस तरह की बात करूँ तो जीभ खीच लेना मेरी •

अपने पैर छुडाने की कोशिश करते-करते मामी बोली—कहाँ है मुझमे इतनी कूवत ! और जिसे दूसरो की निन्दा का चस्का लग गया हो, उसका कोई इलाज नही जा, अपना काम कर !

चमकी ने मामी का यह रुख देखा तो समझ गई कि गुस्से का दौरा जोरो पर है, अभी चुपचाप खिसक जाना ही अच्छा होगा। मामी के पैर छोडकर वह उठ खडी हुई।

जाते-जाते पूछ लिया—कल कब आऊँ मामी ?

जवाब मे मामी ने मुँह से एक भी शब्द नही निकाला।

छोटी बहू ने कहा—जैसे आज और कल आई थी, उसी तरह आना !

इस पर भी मामी कुछ नही बोली।

चमकी बाहर निकली तो मामी फिर लेट गईं।

टुनू सेम की फलियो से भरी चगेरी लाई और रसोईघर के बरामदे मे उझल दिया, खाली चँगेरी लेकर फिर काका के पास चली गई।

होली करीब थी। छँटे-धुले गेहूँ खजूर के पत्तो की चटाई पर सूख रहे थे। छोटी बहू ने देखा कि दिन काफी ढल चुका है। वह उठकर अन्दर से टोकरी ले आई और बरामदे मे नीचे उतरकर आँगन मे सूखते गेहूँ बटोरने बैठी।

धूप पूरब की तरफ फूस के टाट को छू रही थी, पछुआरिया घर की

छाया उसके पीछे थी। गोबर और चिकनी मिट्टी के घोल से लिपा-पुता आँगन आँखो को बडा ही अच्छा लग रहा था। तुलसी की छोटी वेदी से सटकर छाँह मे बिल्ली लेटी पडी थी।

जोगेन्द्र स्कूल से लौटा और किताबो का बस्ता दक्षिण वाले घर के बरामदे मे पटक दिया।

भूख लगी है माँ!—वह छोटी बहू के गले से झूलकर वही आगन मे बैठ गया।

माँ ने कहा—चल हट भी हाथ-मुँह तो धो आ!

लडके की बाँहे अलग हटाकर छोटी बहू उठ खडी हुई, बोली—तू चटाई उठाता आ, मै गेहूँ ले चलती हूँ।

मुस्कराती हुई अपर्णा यह सब देख रही थी। महादेव की पिण्डी बना चुकी थी। कहने लगी—चाची, तुम भी जुलुम करती हो! भूखा-प्यासा आया है इस्कूल से, चटाई उठाने को कहती हो? ··नही जोगी, रहने दे! मै आती हूँ, उठाके रख दूँगी

उधर से मामी ने कहा—हाथ धोकर पहले पान तो लगा!

—अच्छा!

मेरे लिए भी—जोगेन्द्र ने कहा—आज मै भी पान खाऊँगा बहन!

—लडके पान नही खाते।

—ऊँ खाते है कि!

अपर्णा हँसती-हँसती उठी, बाहर कुएँ पर हाथ धोने गई।

अगले ही क्षण खाना जोगेन्द्र के सामने आ गया और वह खाने लगा।

अपर्णा हाथ धोकर आई तो एक लिफाफा लाई।

मामी को थमाती हुई बोली—बब्बू का नही, तुम्हारा है। अभी-अभी काका को दे गया है डाकिया।

मामी उठ बैठी, लिफाफे का पता-ठिकाना बाँचने लगी। थोड़ा रुककर बोली—बबुअन का है। मुझे कौन चिट्ठी लिखेगा?

स्याही की नही—अपर्णा ने अपने बालो पर हाथ फेरकर कहा — पेन्सिल की लिखावट देखो न ! यह क्या लिखा है मामी को मिले अच्छर लेकिन जनाने ढग के है •

सचमुच दुखमोचन के नाम के नीचे और गाँव के नाम से ऊपर पेन्सिल की फीकी लिखावट मे कुछ लिखा था। कमजोरी की वजह से मामी की नजर अब भी उन अक्षरो को साफ-साफ देख नही पा रही थी।

खोलने पर अन्दर से हल्के नीले रग का कागज निकल आया। काशी से माया ने लिखा था—

"स्वस्ति श्रीमती मामीजी के चरणकमलो मे माया का कोटि-कोटि प्रणाम पहुँचे। यहाँ हम दोनो राजी-खुशी है, आप लोगों को राजी-खुशी चाहिए। गाँव से निकलकर पाँच-छ रोज तो हम पटना रहे, दो रोज गया। घूमते-घामते अब काशी आ गए है। मामी अपना देहात बार-बार याद आता है। मन करता है कि जल्द लौट चलें। छोटे भइया की चिट्ठी से मालूम हुआ कि आप बीमार है। आपकी बीमारी का हाल मालूम करके भारी अपसोच हुआ मामी। वही पुरानी बवासीर उभरा होगा, कि दूसरी बीमारी हे ? हम होली तक यहाँ रहेगे, फिर सीधे गाँव लौट आएँगे। आपने गणेशजी की मूर्ति के लिए कहा था न ? पीतल की एक अच्छी प्रतिमा खरीद ली है। बाबा विश्वनाथ से और मातेश्वरी अन्नपूर्णा से रोज-रोज आपके स्वास्थ्य के लिए बिनती करती हूँ मामी। भाई साहब को प्रणाम और अप्पी को प्यार।"

२५ फरवरी, ५५ की तारीख पडी थी डाकखाने की मुहर पर। मामी ने चिट्ठी पढी, फिर उसे लिफाफे के अन्दर डाल दिया। अपर्णा से कहा—यह आदत अच्छी नही है अप्पी।

मैंने आपकी चिट्ठी पढ़ी ही कहाँ ?—अपर्णा मुँह बनाकर बोली।

मामी ने अविश्वास से माथा हिलाया। उन्हे पता था कि पीछे खडी-खडी खत देख रही थी छोकरी • एक-एक पाँती पी गई होगी। कैसी भोली बन रही है ! मामी ने अपर्णा की ओर देखा और मुस्कराई।

वह नजर नही मिला सकी तो बोली—पान लगा लाऊँ तुम्हारे वास्ते ?

अपर्णा पान लाने गई और मामी ने फिर खत निकाला।

इस वक्त वह महसूस कर रही थी कि माया वेणी माधव की नही, बल्कि उन्ही की छोटी बहन है।···हाय, जो कभी समस्तीपुर से पश्चिम नही गई, अब दूर देश मे उस बेचारी का जी किस तरह लगता होगा ? अपनी भाषा मे बतिआने वाले लोग नही मिलते होगे, जान-पहचान के मुखडे नही दिखाई देते होगे·· लेकिन कपिल, वह जरूर माया को खुश रखता होगा ! बबुअन जिसके गुन गाएँ, उसमे खराबी कहाँ से आएगी !

सोचते-सोचते कपिल का स्थान लीलाधर ने कब किस तरह ले लिया, मामी को पता ही नही चला।

·· लीलाधर ने रात-रात भर जगकर इस शरीर की सेवा की थी। बाकी और सब तो ठीक-ही-ठीक था लीलाधर मे, मगर जल्दबाजी बेहद थी। ले देकर यही एक औगुन था · 'बटगबनी' की लय मे उसने प्यार और मनुहार के कई गीत रचे थे, आखिरी पंक्तियो मे लीलाधर के बदले शशिकला का नाम डालता था !

शशिकला ! शशिकला !! शशिकला !!!

मामी के कानो मे अपना ही नाम बार-बार गूँजने लगा, निगाहो मे लीलाधर की मासूम सूरत नाचने लगी · दिल अपने-आपसे पूछने लगा, लीलाधर कहाँ गया ! उसने एक रोज हुलसकर कहा था, भाभी, चलो तुम्हे कलकत्ता की सैर करा लाऊँ गंगासागर, कामरू-कमच्छा, जगन्नाथ, जहाँ बताओ ले चलूँ भाभी ! शशिकला, तू क्यो न गई लीलाधर के साथ ?

जोगेन्द्र आ गया, पान का बीडा लेकर अपर्णा भी आ गई।

दोनो ने मामी का ध्यान तोड दिया।

अपर्णा के हाथ से पान लेकर मामी ने लडके के मुँह मे डाल दिया। उसने जीत की अकड से बहन की ओर देखा और दाहिने हाथ

का अँगूठा हिला दिया ।

मामी मुस्करा पड़ी ।

—तो चिढ़ाता क्यों है इसे ?

—यह कभी अपने-आप मुझे पान नहीं देती मामी !

झुट्ठा कहीं का !—अपर्णा ने तुनककर कहा—देखूँगी, अब कैसे तू पान खाता है ।

—खा तो रहा हूँ पान, देखो !

जोगेन्द्र ने जीभ दिखा दी, पान और कत्था-चूना अपना सही रंग जमा चुके थे ।

अपर्णा चिढ़ गई, बुरी तरह मुँह बनाकर जोगेन्द्र की ओर एक बार फिर देखा । अगले ही क्षण शिकायती नजर में मामी की तरफ ताकने लगी और बोली—ऐसा तो आपने कभी नहीं किया था मामी ! आज क्या हो गया है आपको ? पान लगवाया, मगर उसे मुँह के अन्दर नहीं डाला !

मामी ने इशारे से अपर्णा को बिलकुल पास बुला लिया ।

करीब आयी तो उसका हाथ अपने हाथ में लेकर बोली—मेरा जी नहीं करता है कि पान-वान मुँह में डालूँ बच्ची ! कहने को कह तो दिया तुझसे कि पान ला, मगर इसी बीच तबीयत फिर खराब हो गई •• नाहक तुझे परेशान किया !

जोगेन्द्र पान का मजा ले चुका था । मामी और बहन को उस तरह घुलते देखा तो जाने क्या सूझा कि चेहरे पर गम्भीरता छा गई, कहा—गेहूँ वाली चटाई मैं रख आता हूँ बहन तुम मामी के पास ही बैठी रहो ।

—तुझे खेलने नहीं जाना है ?

—जाना है कि !

—तो फिर रहने दे ।

मगर जोगेन्द्र नहीं माना, गेहूँ वाली चटाई लपेटकर अन्दर रख आया और खेलने निकला ।

नौ....

गाँव के बीचोबीच जो रास्ता उत्तर से दक्षिण की ओर गया था वह कच्चा था, पक्का नही, गाँव के उत्तर डिस्ट्रिक बोर्ड वाली पक्की सडक से जुडा था और दक्षिण की ओर सात-आठ मील जाकर सहसौला बाजार मे खत्म होता था। बस्ती सहसौला जिला बोर्ड की उस सडक के किनारे आबाद थी जो पश्चिम से आकर सीधे पूरब की तरफ चली गयी थी।

टमका-कोइली से दक्षिण डेढ मील तक यह कच्ची सडक गत वर्ष की बाढ मे चौपट हो गई थी। लोकल बोर्ड और लघु-सिचाई विभाग वालो से लिखा-पढी चल रही थी, मगर और मामलो की तरह यह मामला भी लाल फ़ीतो की गिरफ्त मे था।

ग्राम-पचायत ने जुरमाने के तौर पर पिछले साल सवा दो सौ रुपये वसूल किये थे। रकम मुन्शी पुलकितदास के नाम डाकखाने मे जमा थी। पन्द्रह मन अनाज दुखमोचन के जिम्मे था। लेकिन काम तो कई थे। रास्ते की मरम्मत की ही बात होती तो क्या था? चमारो का कुआँ धँस गया था, कुम्हारो के कुएँ से जैसे-तैसे उन्हें पानी मिल जाता था

कुआँ न सही, एक ट्यूब-वेल का प्रबन्ध तो उनके लिए होना ही था। कन्या-पाठशाला की दीवारे तो दुरुस्त थी, लेकिन छप्पर दो साल से नही छवाए गए थे। इस वैशाख मे अगर बीस-पचीस बोझ खर-फूस उन छप्परो पर नही पडे तो चौमासे मे अन्दर बैठकर पढना-पढाना मुश्किल हो जाएगा, टपकती बूँदे कीचड को सदाबाहर किये रहेगी और उमस की बदौलत फफूँद की फसलो का तमाशा देखते ही बनेगा। तो सौ रुपये लडकियो का यह स्कूल भी खा जाएगा

पुलकितदास को अच्छा नही लगा, लेकिन दुखमोचन ने रास्ते पर मिट्टी डलवाने का काम शुरू कर दिया।

मजदूर आधी मजदूरी पर मिट्टी कोडने और ढोने पर राजी हो गए। खाते-पीते परिवारो से एक-एक आदमी बिना मेहनताना के ही काम करने लगा। सिमरौन और पुनाई चक से ग्रामरक्षा-समिति के जवान मदद के लिए आ पहुँचे। उनके लिए खाना और तमाखू-बीडी का इन्तजाम हुआ।

रास्ते के दोनो ओर खेतो म मिटटी कटने लगी और रास्ता ऊँचा होने लगा। दुखमोचन, वेणी माधव, रामसागर, मधुकान्त, कचन, कन्हाई और राधे सभी डटे रहते थे। मुन्शीजी का भतीजा नवलकिशोर और मास्टर टेकनाथ आदि भी सहयाग का स्वाँग भर रहे थे।

असल काम मजदूर और मामूली ग्रामीण कर रहे थे। मिट्टी रास्ते के पश्चिम नरम और भुरभुरी थी, लेकिन रास्ते के पूरब कडी और चिकनी। सैकडो कुदाले मिट्टी खोदने मे लगी थी। मिटटी की टोकरी उठाकर एक दूसरे को थमाता, खाली टोकरी उससे वापस लेता। दूसरा मजदूर भरी टोकरी तीसरे को थमाता और खाली टोकरी उससे वापस लेता, तीसरा मजदूर मिटटी रास्ते पर डाल देता और खाली टोकरी वापस लाता। श्रम का यह सधा हुआ और व्यवस्थित क्रम दूर से देखने पर बडा ही भव्य प्रतीत होता था। मिट्टी की टोकरी उठाने-धरने का सिलसिला यो तो सारा दिन चलता मगर बीच-बीच मे दो-ढाई घण्टे पर मजदूर दस-पाँच

मनट के लिए दम भी मार लेते।

रामसागर की स्त्री और माया ने भारी जीवट का परिचय दिया। पडोस के गाँव से जितने भी जवान आये थे, उनके लिए एक बार नाश्ता और दोनो जून खाना बनाने का भार उन्ही दोनो ने उठाया। चमकी, अपर्णा और पद्मा आदि भी हाथ बँटाती थी, लेकिन खास जवाबदेही उन्ही दोनो की थी। सुग्गी बूआ होती तो काफी मदद पहुंचाती इन कामो मे, मगर नतनी के लडके का कन-छेदन था, वह मेहमानी मे गयी हुई थी।

ऊँचे उठती उस कच्ची सडक के इर्द-गिर्द चैत का दुपहर आज और मुखर हो उठा जबकि हल्के हरे रग की एक नफीस जीप आकर कैम्प के करीब खडी हो गई और उसमे तीन-चार अधिकारी निकल आए। सब-डिविजनल-ऑफिसर, अचलाधिकारी, दारोगा और हिन्द-हितकारी समाज की ज़िला-शाखा के मन्त्रीजी बस और कोई नही था। पाँचवाँ जो था वह ऑफिसर नही, ड्राइवर था।

कैम्प क्या था, फूस की निहायत मामूली झोपडी थी, अस्थायी किस्म की! बाहर जीप के रुकने की आवाज सुनी तो दुखमोचन अपनी मण्डली-समेत निकल आये। हिसाब-किताब बीच मे ही छोड दिया गया।

नमस्कारा-नमस्कारी हुई। सभी अधिकारी जान-पहचान के थे। उन्हे घेरे मे लेकर सडक का मुआयना करवाने चले।

समाज के मन्त्री खादी के देशी लिबास मे थे। एस० डी० ओ० और अचलाधिकारी पैण्ट-बुशर्ट मे थे। दारोगा अपनी खाकी यूनि-फार्म मे था।

अचलाधिकारी ने दुखमोचन से पूछा—कब तक हो जाएगी तैयार सडक?

—दस रोज़ लगेंगे साहब!

—मज़दूरी का क्या हिसाब है?

—आधी मज़दूरी पर सौ मज़दूर काम कर रहे है। पाँच मन धान

रोज़ उठता है।

हिन्द-हितकारी समाज के मन्त्री उधर वेणी माधव से बातें किये जा रहे थे—तो आप लोगों ने श्रमदान का एक शानदार रिकार्ड कायम कर ही दिया! समूचा गाँव दिलचस्पी ले रहा है न?

जी हाँ—वेणी माधव ने माथा हिलाकर स्वीकार किया। जाने क्यों, श्रमदान के बदले उसे यज्ञ कहना अच्छा लगता था। बोला—यज्ञ ही तो ठहरा हुजूर! सभी लोग दिलचस्पी नहीं लेंगे तो इतना भारी काम अकेले सपरेगा?

—आप दुखमोचन बाबू के कौन होते हैं?

—हम लोग बचपन के साथी हैं, लँगोटिया यार साथ-ही-साथ खेले-कूदे और साथ-ही-साथ बड़े हुए—

—मैं समझा कि भाई-भाई होंगे या कोई रिश्ता होगा?

वेणी माधव हँसने लगा जवाब में। मन्त्रीजी ने आँखें बड़ी-बड़ी करके उसे देखा और पूछा—क्यों, इसमें हँसने की क्या बात थी भाई?

—इस तरह का सवाल पुराने लोग पूछा करते थे हुजूर!

मन्त्रीजी चुप हो गए।

दारोगा मधुकान्त से बातें कर रहा था और एस०डी०ओ० प्रतीक्षा में था कि अंचलाधिकारी की बातों से दुखमोचन को फुरसत मिले तो उनसे बातें करे।

स्वेच्छा से काम करनेवाले गाँववालों ने अधिकारियों को बाँध की तरफ आते देखा तो कौतूहल के मारे उनके हाथ कुछ क्षणों के लिए ढीले पड़ गए। अधिकांश लोग तो कामों पर डटे रहे मगर कुछ-एक आकर अधिकारियों के साथ चलने वाली भीड़ में शामिल हो गए।

मौका पाकर सब-डिविज़नल ऑफिसर दुखमोचन से बातें करने लगा।

बातचीत आगे बढ़ी। दुखमोचन ने शिकायत के स्वर में कहा—साल-

आठ मील का यह चालू रास्ता अब और कितने दिन तक कच्ची हालत मे पडा रहेगा, पता नही। मिट्टी तो हम इस पर काफी डाल रहे हैं, मगर बाढ फिर धो-पोछकर साफ कर देगी हुजूर! कोई ऐसी तरकीब नही निकल सकती जिससे इस सडक का कायाकल्प हो जाए ?

दो-तीन वर्ष पहले अखबारो मे राजस्थान के किन्ही पानी-महाराज का चमत्कार प्रकाशित हुआ। अब कही सडक-महाराज कोई निकल आए तो मै आपको बताऊँगा—एस० डी० ओ० ने चमकती आँखो से कहा और हँसने लगा। सभी को हँसी आ गई।

दुखमोचन आहिस्ते से बोले—अभी तो हम पानी पीट रहे हैं। लगभग हर साल इस रास्ते पर मिट्टी डालते है और बाढ भी अपना काम मुस्तैदी से कर जाती है। लेकिन कितना भी झीखें-चीखें, अपनी शक्ति-भर बचाव का अपना इन्तजाम तो आखिर करना ही होगा, कर ही रहे है • और कोई उपाय भी तो नही नजर आ रहा साहब!..

एस० डी० ओ० साहब शायद ऊँचे खानदान के ब्राह्मण थे, सिगार-सिगरेट नही पीते थे। पैण्ट की पॉकेट से उन्होने चाँदी की नफीस डिबिया निकाली और चुटकी-भर नस नाक के पूडो से सुडक ली। रूमाल से नाक और हाथ पोछा। अब चेहरे पर इतमीनान का भाव निखर आया। गम्भीर स्वर मे कहने लगे—मैं कलक्टर और जिला बोर्ड के चेयरमैन को इस सडक के बारे मे लिखूँगा। दुखमोचन बाबू, आप तो धीरज की खान है। इतने दिन झेलते आए तो दो-एक वर्ष और झेल लीजिए—पिपरा बाजार के व्यापारी भी इस मार्ग का विकास चाहते हैं। मुझे तो विश्वास है कि दो-तीन साल के अन्दर ही आठ मील का यह रास्ता पक्का हो जाएगा।

अचलाधिकारी और दारोगा ने सहमति मे माथा हिलाया।

मन्त्रीजी जरा अलग होकर मजदूरो और ग्रामीणो से कुछ पूछ-ताछ कर रहे थे। वेणी माधव और रामसागर उन महाशयजी के अगल-बगल खडे थे।

भीगे कपड़े से ढकी बाल्टी मे कचन शरबत लेकर पहुँचा। राधे के हाथ मे लोटा और गिलास थे। ऑफिसरो के आने की खबर पिपरा बाज़ार से सुबह ही आयी थी। वे वक्त के मुताबिक आ गए थे।

स्कूल से चार कुरसियाँ और एक टेबल मँगवा लिया गया था।

दुखमोचन ने हाथ जोड़कर कहा—हुजूर, पानी पी लिया जाए चलकर। वहाँ कैम्प के पास लौटना होगा हुजूर !···

—प्यास ? नही, प्यास नही लगी है।

—नही हुजूर, सो कहाँ मानेंगे हम !

एस० डी० ओ० ने अचलाधिकारी और हिन्द-हितकारी समाज के मन्त्री हेमराज शर्मा की तरफ देखा तो जवाब मे उनके सिर हिले। संकेत साफ था कि प्यास नही लगी है। लेकिन दुखमोचन ने बार-बार अनुरोध किया तो वे मान गए।

अधिकारी कैम्प के नज़दीक लौट आए।

टेबल पर काँसे की चार कटोरियाँ रखी हुई थी, घी मे भुने नमकीन तालमखाने भरे थे उनमे।

दुखमोचन ने विनम्र भाव से कहा—यह कुछ नही है हुजूर, तिरहुत इलाके का खास मेवा है

हम तो खा-पीकर चले थे—अचलाधिकारी साहब एक-एक शब्द पर ज़ोर देकर बोले और एस० डी० ओ० की तरफ देखने लगे तो उन्होने कहा—बस, शरबत-मात्र !

—नही श्रीमान, तालमखाने तो आपको लेने ही होगे।

भीड बटुर आई थी। उसने सम्मिलित स्वर मे दुखमोचन का समर्थन किया। मुन्शी पुलकितदास भी तब तक लपके-लपके आ पहुँचे थे। उन्होने हाँफते हाँफते कहा—सरकार, तालमखाना बिलकुल हलका होता है·· सेर-भर भी खा जाइएगा तो मालूम नही होगा कि पेट के अन्दर कोई चीज पडी है · और आप तो पहली दफा आए है हुजूर ! हम कैसे समझेंगे कि 'दुर्योधन घर मेवा त्यागे, साग विदुर घर खाए'।

आखिर तालमखाने की कटोरियाँ खाली हुई और शरबत का दौर चला। एस० डी० ओ० ने एक ही गिलास लिया, बाकी तीनों ने दो-दो बल्कि तीन-तीन गिलास सोट लिया।

जोगेन्द्र पान के बीडे ले आया था, उनकी भी सद्‌गति हुई।

अचलाधिकारी ने अलग ले जाकर दुखमोचन को बतलाया कि सब-डिविजनल ऑफिसर को किसी की गुमनाम चिट्ठी मिली थी। निकट-वर्ती खेतो से भूमि का थोडा-थोडा हिस्सा बाँध मे मिलाया जा रहा है·· किसानो मे इससे भारी असन्तोष है किसी भी क्षण झगडा खडा हो सकता है और दो-एक लाश गिर सकती हैं गुमनाम चिट्‌ठी का मजमून ऐसा ही कुछ था एस० डी० ओ० साहब यो तो सडक का पुनर्निर्माण देखने आये है, मगर असल मन्शा उनका तहकीकात का है।

गुमनाम चिट्‌ठी किसने लिखवाई होगी, दुखमोचन को समझते देर न लगी। राममागर को भेजकर फौरन मुन्शीजी के यहाँ से गाँव का नक्शा मँगवाया गया। अधिकारियो ने कई जगहो पर सडक की नयी चौडाई को नक्शे से मिलाकर देखा, आधा बित्ता भी किसी का खेत कही दबाया नही गया था। उल्टे कई-एक किसानो ने सडक का ही कुछ-कुछ हिस्सा दबा रखा था। सडक पर मिट्टी डलवाते समय शुरू मे ही दुखमोचन ने जरीब से नाप-नापकर इस गलती को दुरुस्त कर लिया था और सम्बन्धित किसानो तक सूचना पहुँचा दी थी।

कपिल आ गया था। उसने अग्रेजी मे सब-डिविजनल ऑफिसर को सारी बातें समझा दी। मोटे फ्रेम वाला काला चश्मा पॉकेट मे रखता हुआ एस० डी० ओ० बोला—आप कहाँ काम करते है ?

कही नही सर !—कपिल ने मुस्कराकर जवाब दिया।

ऑफिसर बोला—घर-गिरस्ती का अपना काम देखते हैं ? यह तो बडा ही अच्छा है। पढ़े-लिखे ग्रामीण युवक यदि अपने को ग्राम-जीवन मे खपा दें तो समूचा देश नयी चेतना के सुफल हासिल कर लेगा।

कपिल ने इस पर कुछ नही कहा, लेकिन दुखमोचन बोले—यह तो

हमारी बस्ती का हीरा है हुजूर, नाम है कपिलदेव सिंह। नौकरी के लालच मे गाँव छोडकर भाग जानेवाला बन्दा नही है यह ·

दुखमोचन ने कपिल के कन्धे पर अपना हाथ रख दिया। अचलाधिकारी ने एस० डी० ओ० से कुछ कहा फुसफुसाकर, तो कुरसी से उठकर उसने कपिल की तरफ हाथ बढा दिया। कपिल ने आगे बढकर हाथ मिला लिया।

बातचीत खतम करके अधिकारी वापस जाने के लिए जीप पर सवार हुए, वह स्टार्ट हुई और ढेर-सी धूल उडाती हुई सरपट भागी।

दोपहर मे खाने के लिए घण्टा-डेढ घण्टा काम बन्द रहता था। आज आधा घण्टा देर हो गई थी इस क्रम मे। माथे पर चैत का सूरज ग्रीष्म के शैशव की प्रखरता बिखेर रहा था।

दुखमोचन हवेली के अन्दर आये तो छोटा भाई नारायण अपर्णा और योगेन्द्र को दामोदर घाटी-योजना की उपलब्धियो के बारे मे बता रहा था। वे ध्यान से उसकी बाते सुन रहे थे।

नारायण पन्द्रह दिन की छुट्टी लेकर दस महीने मे घर आया था। मेहमान की ही तरह रह रहा था। अब आधी छुट्टी बाकी थी। मझले भइया से जमकर बातें करने के लिए तबीयत मचल-मचलकर रह जाती थी, मगर दुखमोचन को अवकाश हो तब न !

खिलाते समय मामी ने उलाहने की आवाज मे कहा—एक जुग के बाद नारायण अपने परिवार के बीच आया है। रोज बीस बार पूछता है भइया कहाँ गये है, कब तक आएँगे ! अरे, घडी-आधी घडी उसके पास बैठोगे तो ससार की नब्ज नही डूब जाएगी बबुअन !

दुखमोचन ने मुँह का कौर चबाकर गले के नीचे उतारा, मामी की ओर देखा और मुस्कराए। आहिस्ते से बोले—अच्छी वकालत झाड रही हो ! अबकी कोई खास तोहफा लाया होगा !

—हाँ, तुम्हारी तरह मुफ्त की वकालत नही करवाता है।

भौंहे चमकाकर हँसी को मामी ने पलको मे ही घोट लिया और

निगाहें फेर ली। दुखमोचन एकाएक गम्भीर हो गए, थाली मे सने हुए दाल-भात पर हाथ रोककर कहने लगे – दुनिया समझती है कि गाँव-वाले बडे भोले-भाले और शराफत के पुतले होते है, लेकिन यहाँ आकर देख जाए कोई · कौनसी बदमाशी छूटी है गाँव वालो से ! लोभ-लालच, छल-प्रपच, झूठ-बेईमानी, ठगी और विश्वासघात · वह कौनसा औगुन है जो यहाँ नही है मामी ? बतला सकती हो ?

मामी समझ नही पा रही थी कि आज इन्हे क्या हो गया है। सुबह भले-भले तो घर से निकले थे, अभी कुछ ही क्षण पहले नारायण की चर्चा छिडी तो मखौल भी किया था। मामी सोचने लगी, उनकी ज़बान से तो कोई ऐसी बात नही निकली जिससे बबुअन का दिल चोट खा गया हो ! बार-बार सोचा मामी ने, बार-बार आत्म-निरीक्षण किया, लेकिन अपनी एक भी वैसी बात पकड मे नही आई।

दुखमोचन की तबीयत खाने से उचट गई, कम-से-कम मामी को तो ऐसा ही लगा।

—हडबडाकर उठ नही जाना बबुअन, दही लाती हूँ। मगर आज क्या हो गया है तुम्हे ? पाँच-सात कौर भात खाकर पीछे यह कौनसी फिकर तुमने बुला ली है ?

—नही मामी, कोई बात नही है। खा ही तो रहा हूँ ·

दुखमोचन जैसे-तैसे खाते रहे। मामी दही ले आई, ऊपर से चुटकी-भर नमक डाल दिया।

खा-पीकर ज़रा देर के लिए आराम करने गये।

पलग के पास स्टूल पर मामी भी बैठी, पान देकर पूछा—मेरी कसम तुम्हे, अगर यह बात तुमने न बतलाई आज बाहर से अफसर लोग आये थे, ऐसे मौको पर तो तुम हमेशा खुश नज़र आते थे बबुअन ! लेकिन आज क्या हुआ तुमको ?

गाँव वालो ने एस० डी० ओ० को गुमनाम चिटठी लिखी है—दुख-मोचन उदास स्वर मे बोले—मेरी शिकायत की है कि मैं किसानो के खेत

बरबाद करके सडक को अधिक-से-अधिक चौडा कर रहा हूँ ··

साँच को आँच क्या ?—मामी ने कहा—नक्शा मिलाकर दिखला नही दिया ?

—सो तो सब-कुछ दिखला दिया मामी, लेकिन मै तो गुमनाम चिट्ठी लिखने वालो के कमीनेपन पर सुलग रहा हूँ। गाँववालो का यही रवैया रहा तो दुखमोचन फिर कलकत्ता चला जाएगा ··

—अरे, समूचे गाँव का इसमे क्या कसूर है ? दो ही चार तो है जो लाल चीटो की तरह तुम्हे छिप-छिपकर डसते रहते है। बाकी लोग तो किसी कीमत पर तुम्हे छोडना नही चाहेगे बबुअन ! झूठ कहती हूँ ?

दुखमोचन ने कुछ नही कहा इस पर। थोडी देर तो पान चबाते रहे, फिर बोले—नारायण से कल रात बाते करूँगा, उसे कह देना।

कह दूँगी—मामी ने कहा और उनके हाथो की तरफ गौर से देखने लगी। बाईं हथेली की खाल दो-तीन जगहो पर सिकुडी-सी स्याह-सी नजर आई तो विस्मय के स्वर मे बोली—लाओ हाथ तो देखूँ !

दुखमोचन के दोनो हाथ आगे फैल गए। मामी ने बाई हथेली को अपने हाथो मे ले लिया, शिकायती निगाहो और स्वरो मे कहा—कुदाल से मिट्टी काटने का शौक चर्राया है ! अच्छा होता कि दस-बीस फफोले निकल आते और तुम घर बैठते ! कुदाल और टोकरी लेकर सैकडो आदमी तो काम मे जुटे रहते है, तुम्हे क्या पडी कुदाल चलाने की ?

—इसकी भी जरूरत पड़ती है मामी ! मैं भी उन्ही सैकडो आदमियो मे से एक हूँ। उनसे अलहदा रहने लगूँ तो दम ही घुट जाए ! वेणी माधव, रामसागर, मधुकान्त·· सबका यही हाल है मामी !

—तुम लोगो से कौन जीतेगा बबुअन !

मामी ने हथेली छोड दी। उठकर अलमारी से धुला कुरता निकाला, सुई और धागा लेकर बटन टाँकने बैठ गई। इस बीच दुखमोचन अखबार देखने लगे थे।

टुनू ने झाँककर देखा। पायलो वाले पैर आहिस्ते से पटककर पिता का ध्यान खीच लेने की अपनी सफलता पर वह आप ही खिलखिला उठी और भाग गई। इस पर मामी और दुखमोचन मुस्करा पडे।

दस

निश्चित अवधि से एक रोज़ पहले ही सडक की मरम्मत का काम पूरा हो गया। इस खुशी मे दुखमोचन और वेणी माधव ने लोगो को दूध-चीनी और भग की पार्टी दी।

अचलाधिकारी साहब ने बाढ सहायता फड से पचीस मन अनाज मज़दूरी के लिए दिया। पन्द्रह मन पहले से जमा था। बाकी मज़दूरी नकद दी गई।

पानी भरनेवाली मज़दूरनियो के बारे मे दुखमोचन की सिफारिश पर पचो ने यह निर्णय किया कि फी घडा आठ आने मिलने चाहिए। यानी यदि कोई मज़दूरनी किसी परिवार को प्रतिदिन चार घडे पानी देती है तो दो रुपये माहवार पाएगी। मज़दूरनियो ने इस फैसले को खुशी-खुशी मान लिया। डेढ महीने तक अनियमित रूप मे चलने के बाद हडताल अपने-आप और पहले ही समाप्त हो चुकी थी।

पर्याप्त सीमेण्ट न मिलने के कारण मुन्शी पुलकितदास भीतर-ही-भीतर दुखमोचन पर नाराज़ थे। नारायण हज़ारीबाग वापस जा चुका

था। मिडल स्कूल की सालाना परीक्षाएँ करीब आ गई थी।

पिछले कई दिनो से पछिया हवा जोरो पर थी। अमराइयो मे टिकोले बुरी तरह झड रहे थे। नित्याबाबू के बाग मे लीचियो के कई झाड थे। उनकी भी कच्ची फलियाँ टूट-टूटकर गिर रही थी।

औरतें अन्दर घर मे खाना पकाती थी, बरामदे के चूल्हे नही सुलगाती थी कि चिनगारी छिटकेगी और हवा के झोके उसे ले उडेंगे।

हरखू की अम्मा शाम को हुक्का पी रही थी। कश खीचने पर तम्बाकू की टिकिया आतिशी फुलझडी की तरह पडपडा उठती थी। आज भी वही हुआ। जैसे ही बुढिया ने तीसरी बार जोर का कश खीचा कि सुलगती टिकिया से चिनगारियाँ भडक उठी।

फूस के दो छोटे-छोटे घर थे हरखू के। छप्पर भीतो पर नही, सरकडो के टट्टरो पर थे। दोनो तरफ जीमड के पतले खम्भे उन्हे सँभाले हुए थे। पलानी काफी नीचे झुकी हुई थी। बुढिया को पता नही चला, कब कैसे चिनगारी पलानी की फूस तक पहुँची और कितनी देर तक अन्दर-ही-अन्दर सुलगती रही।

ओसारे की खम्भेली से हुक्का टिकाकर हरखू की माँ पोते की खोज मे निकली कि पलानी का छप्पर लपटो मे सुलग उठा। बुढिया ने नही देखा, आगे बढ गई थी। हरखू की औरत साझ-सकारे खा-पीकर आज पडोसिनो से गप्पे मारने निकली थी, बडी लडकी भी पीछे-पीछे गयी थी।

दूसरे घर की ओरियानी मे दो बकरियाँ और बछियाँ बँधी थी, धुएँ की घुटन से वे चक्कर काटने और मिमियाने-रँभाने लगी।

मिनट-आधे मिनट मे ही दोनो घरो के ऊपरी छप्पर जल उठे। उडते बगूले हवा के झोको मे पास-पडोस के छप्परो पर पडने लगे। जहाँ-तहाँ घर जलने लगे। 'आग', आग', 'दौडो', 'दोडो' की चीख-पुकार मच गई। जो जहाँ था, वही वे दौड पडा। भागते लोग एक-दूसरे से टकराते और पूछते—"कहाँ, किधर ?"

आज दोपहर मे पछिया हवा ने जो प्रचण्ड रूप धारण किया था,

अब तक उसमे कमी नही आई थी । दस मिनट बीतते-न-बीतते पास-पडोस के पचीसो घर ज्वालाओ के पुज दिखायी देने लगे ।

समूची बस्ती मे खपरैल के मकान बीस-तीस से ज्यादा नही थे । बाकी छप्परो पर फूस-ही-फूस था । फागुन और चैत की पछिया मे सूख-सूखकर फूस फूस नही पलीता हो रहा था । बगूला गिरते ही छप्पर सुलग उठता और अगले ही क्षण ऊँची लपटो का नाच शुरू हो जाता ।

बूढो-बच्चो समेत सारी जनता बाहर निकल आई ।

औरतें हाय-हाय करती हुई अपने-अपने घर के सामान निकालने लगी, बच्चे और बूढे उनका हाथ बटा रहे थे । मर्द फुरती से छप्परो पर चढ गए । अधिकाश आदमी घडे लेकर कुओ और पोखरो की तरफ भागे । हाथो-हाथ पानी-भरे घडे छप्परो पर उँडेले जाने लगे । धूल-भरी टोकरियाँ भी आग की लपटो पर डाली जाने लगी । कही-कही बन्धन काटकर छप्पर नीचे गिराए जा रहे थे । मगर अग्निदेव का कोप अब भी उफान पर ही था ।

दुसाधो, ग्वालो, धानुको और जुलाहो के टोले तो आग की लपेट मे आ ही चुके थे । अब ब्राह्मणो के घर जलने लगे । पहला बगूला मधुकान्त के रसोईवाले घर पर पडा । वह तीन भरे घडे थामकर पहले से ही मुँडेर पर मुस्तैद था, लेकिन बगूला पडा अन्दर वाले घर के छप्पर पर । मधुकान्त का भतीजा शशिकान्त उस पर चढने की कोशिश करने लगा मगर अन्तत असफल रहा ।

दुखमोचन रामसागर के घर की तरफ भागे । वह खुद मेहमान-दारी मे गया हुआ था । परिवार मे स्त्री और दो बच्चो के अलावा और कोई न था ।

थोडी देर तक तो एक या दूसरा घर बचाने के लिए भाग-दौड और कोशिशें चलती रही, लेकिन समूचा गाँव ही जब प्रलयकर लपटो की गिरफ्त मे आ गया तो लोग घरो और अन्दर से न निकाली जा सकी वस्तुओ की तरफ से हताश हो गए ।

पण्डित सुखदेव ने पहला काम यही किया कि शालिग्राम और नर्मदेश्वर वाली पूजा की पिटारी उठाकर कुएँ के आगे कमल बाग मे रख आए। पीछे बच्चो को हटाया। गाय और बैलो को खोलकर नदी की तरफ भगा दिया। फिर घर के अन्दर से कानूनी कागजात वाला बक्सा निकाला। बाद को पोथियो-पत्रो वाले काठ के सन्दूक हटवाए।

छोटी बहू और अपर्णा ने मिलकर गहनो के डब्बे, कपडो के ट्रक, काँसे-पीतल के बरतन- बासन आदि निकाले। मामी न खुरपी लेकर जल्दी-जल्दी कुलदेवता की पिण्डी खोद डाली और उसे थाली मे जमाकर बाहर ले आई। दुखमोचन की अलमारी खाली की जा चुकी थी। पलग पर से बिस्तर वगैरह हटाया जा चुका था। पीछे कचन और कन्हाई भागते आए तो पलग-अलमारी-तख्तपोश-सन्दूक आदि भारी-भारी समान निकले।

सुखदेव, छोटी बहू और अपर्णा फूट-फूटकर रो रहे थे। जोगेन्द्र और टुनू आतक के मारे सज्ञा-शून्य की तरह कुएँ के नजदीक खडे थे। मामी की आँखो से आँसू बह रहे थे, लेकिन होठो पर ताला जडा था। कटोरी मे चिउडा भिगोकर और उसमे दही-चीनी मिलाकर मामी ने सुखदेव को थमा दिया, हाथ के इशारे से बताया कि जलते छप्परो की तरफ अग्निदेव के उद्देश्य से यह छोड दे। सुखदेव ने 'ओ अग्नये स्वाहा' 'ओ अग्नये स्वाहा' कहकर पाँच-सात बार वह अन्न अग्नि की तरफ फेका और कटोरी खाली कर दी।

हजारो का हाहाकार वातावरण को भयानक बना रहा था। ऊपर की तरफ लपकती लपटो से चैत की काली रात का वह पहला पहर कोसो तक जगमगा रहा था। आसपास विशाल बरगदो, पीपलो और पाकड़ो की टहनियो मे लटकने वाले सैकडो घोसले खाली हो गए थे, भयभीत पक्षियो का झुण्ड आकाश मे चक्कर काट रहा था, मर्मवेधक कोलाहल दिशाओ मे टकरा-टकराकर और कई गुना अधिक होकर वापस आ रहा था। आतकित मवेशी रह-रहकर रँभा उठते थे तो यह विभीषिका

और भी घनी हो उठती थी ।

आधा घण्टा बाद दुखमोचन अपने परिवार की सुध लेने आए तो सबको दहशत मे डूबा पाया । टुनू पिता से चिपट गई और रोने लगी । मामी ने रुआँसी आवाज मे कहा—अब इस वक्त तुम्हे और कही नही जाने दूँगी । चुपचाप बैठे रहो बबुअन ! भगवान् की यही मरजी थी ·· लगता है, अग्नि महाराज बहुत भूखे थे ।

बिटिया के बदन पर हाथ फेरते-फेरते दुखमोचन बोले—भूखे तो क्या रहेगे अग्नि महाराज ! दुनिया की बात छोड दो, साल-साल इसी इलाके मे बीसियो गाँव जलाकर खाक कर देते है । सन्तोष तो अग्नि-देव को न कभी हुआ, न होने का । इन्हे तो काबू मे करना होगा मामी !

उधर मे सुखदेव ने उदास स्वर मे कहा—अग्नि को कभी काबू मे नही किया जा सकेगा, यह कोई मामूली देवता हैं बबुअन ?

वाद-विवाद का यह वक्त नही था । दुखमोचन चुप रहे । टुनू के बदन पर उसी तरह हाथ फेरते रहे । मामी ने डबडबाई आँखो से जलते घरो की ओर देखा, माथा झुकाकर और दोनो हाथ जोडकर कहने लगी—दुहाई महाराज की ! घर-गृहस्थी तो लोगो की स्वाहा कर ही डाली आपने, जान न लेना किसी की ! कुत्ते की भी नही, बिल्ली की भी नही ! मेरी इत्ती-सी प्रार्थना मजूर करना ! देखना अग्नि महाराज ! ··

दुखमोचन बोले—हाँ मामी, मुझे भी बस अब एक ही बात की फिक्र है कि इस अग्निकाण्ड मे झुलसकर कोई प्राण न गँवा बैठे प्यास लगी है मामी !

मामी डोल लेकर कुएँ से पानी निकालने गयी । उतनी दूर पर भी आँच की गरमी लग रही थी ।

कुएँ से सैकडो घडे पानी निकाला गया था, अभी-अभी । पानी गँदला हो गया था, पीने के काबिल नही था । लेकिन प्यास जोर की लगी थी, दुखमोचन लोटाभर पानी गट-गट पी गए । टुनू को गोद से उतारकर बोले—मामी मेरा इस वक्त यो बैठ जाना ठीक नही । जाने

दो, जल्दी ही लौट आऊँगा · घबराओ मत ! पडोसी गाँव से रक्षा-समिति वाले आ गए हे और अपने आदमी भी तो है ·

मामी का चेहरा और भी फीका पड गया, बोली—बीच-बीच मे किसी को भेजकर हमारी खोज-खबर लेते रहना।

—यह भी कहने की बात है भला !

सुखदेव ने कहा—मै भी साथ चलूँ बबुअन ?

—नही-नही, भइया ! आप कही नही जाइए ! बस, आप अपने परिवार की देख-रेख कीजिए ! चीज़-वस्त की भी निगरानी रखिएगा··· कचन और कन्हाई आपकी खोज-खबर लेते रहेगे ··

दुखमोचन दस पन्द्रह कदम गये होगे कि मामी ने ऊँची आवाज़ मे कहा—जूते नही लिये ? पैर झुलस जाएँगे ··

अपर्णा पिता को जूते दे आई।

जहाँ-जहाँ रास्ते के दोनो ओर घर जल रहे थे, उधर से चलना भट्टियो की दो कतारो के दरमियान होकर गुज़रने-जैसा लगता था। सभी परिवारो का एक-जैसा हाल था। सब हताश थे, सभी रो रहे थे। सामान घरो से बाहर मैदानो मे, खेतो मे, बागो मे, बीच-बीच की खुली जगहो मे जमा कर दिया गया था। बच्चे और औरतें अपने-अपने सामान के इर्द-गिर्द रोती-बिसुरती दिखाई दे रही थी। गायो, बैलो, भसो और बकरियो को गाँव के बाहर भगा दिया गया था।

यह आग पहले कहाँ से उठी और कैसे फैली, इस बात का पता लगाने की न किसी को सुध थी, और न अभी इसका पता लगाना आवश्यक ही प्रतीत हो रहा था। लेकिन इतना अच्छी तरह मालूम हो गया था कि दुसाधो का ही पुरवा पहले सुलगा था। हो न हो, समूचे गाँव की इस बरबादी का असल कारण वही लोग थे ··इस तरह की बातें दुखमोचन के कानो मे पडने लगी, तो उन्होने फौरन प्रतिवाद किया। कहा कि इस बरबादी का असल कारण है हमारे घरो को फूस से छवाया जाना। समूची बस्ती अगर खपरैल के मकानो की रही होती, तो अग्निदेव

का मनोरथ अपूर्ण ही रह जाता ।

नित्याबाबू ने दुखमोचन को देखा तो बुक्का फाडकर रो पडे ।

अभी पचास कदमो का फासला था । दुखमोचन के साथ वेणी माधव, कपिल और मिहिर थे ।

वेणी माधव ने आहिस्ते से कहा—इनके लिए आग नही, भूचाल आता तो ठीक था । अच्छा होता कि नित्याबाबू के वे सन्दूक जलकर राख हो जाते, जिनमे कबाला और रेहन-मकबूला के दस्तावेज, काश्तकारी कागजात, ब्याज पर लगाये रुपयो के हैण्डनोट आदि रखे है ·· सब-कुछ स्वाहा हो जाता नित्याबाबू का ! · मेरी तो तबीयत करती है कि बुढऊ को उठाकर इस आग मे डाल दूँ

दुखमोचन ने पीछे घूमकर वेणी माधव को देखा । भौंहे तन गई थी, मुख का भाव कठोर हो आया था । कपिल और मिहिर ने दुखमोचन का यह भावान्तर ताड लिया, लेकिन वेणी माधव की समझ मे नहीं आया यह सब ।

जरा देर बाद दुखमोचन बोले—विपत्ति के इन क्षणो मे इस तरह की बाते करना बर्बर प्रतिहिंसा का सूचक है वेणी माधव ! नित्याबाबू की हरकतो से हमारा काफी नुकसान हुआ है और आगे भी हो सकता है, लेकिन इस वक्त तो हम बिना किसी भेद-भाव के उनकी सहायता करेगे । मै महसूस करता हूँ कि अपने गाँव के एक-एक व्यक्ति की सुरक्षा का दायित्व हम पर है । अभी यह नही देखना है कि फलाँ दौलतमन्द है और फलाँ गरीब है, फलाँ हमे गालियाँ देता है और फलाँ हमारा नाम लेकर सुबह-शाम शख फूँकता है · अभी एक-एक व्यक्ति हमारा अपना आदमी है वेणी माधव !

सभी चुप थे ।

बरामदे से नीचे आकर नित्याबाबू दुखमोचन के पैरो पर गिरने को हुए, मगर दुखमोचन ने उन्हे बाँहो मे ले लिया ।

रो-रोकर नित्याबाबू ने कहा—दादा के जमाने के काठ के दोनो

बडे सन्दूक पुराने मकान के अन्दर पडे है•• लोहे के बडे-बडे और मजबूत ताले लगे है उनमे • चाबियाँ भी नही मिल रही है इस वक्त • सन्दूको मे चार पुश्त पुराने बरतन अटे पडे है बेटा ••

घिग्घी बँध गई नित्याबाबूकी, आगे एक भी साफ शब्द मुँह से नही निकल रहा था । पडोसी घरो की लपकती लपटो के प्रकाश मे लगातार बहते आँसुओ की मोटी लकीरे चिकने-चुपडे, गढीले-साँवले गालो को कई गुना ज्यादा चमका रही थी ।

अपनी धोती की खूँट मे नित्याबाबू के आँसू पोछते हुए दुखमोचन ने उन्हे आश्वासन दिया—मै निकलवाता हूँ सन्दूक चाचाजी ! आप रत्ती-भर भी फिक्र न कीजिए •

तुम्हारा ही भरोसा है दुखमोचन—घिघियाते स्वर मे नित्याबाबू बोले—मै तो पुराना पापी हूँ, रात-दिन तुम्हारा बुरा चाहता रहा हूँ ••

—उहूँ उहूँ उहूँ ! यह सब क्या कह रहे हे आप ?

दुखमोचन ने नित्याबाबू के मुँह पर हथेली रख दी, तो वह और अधिक रो पडे ।

दुखमोचन ने नित्याबाबू को अभी उसी तरह रोता छोड दिया । वह बडे दरवाजे से अन्दर हवेली मे घुसे । दो मकान नये और पक्के थे, तीन पुराने । तीनो की दीवारे तो पक्की पुरानी ईटो की थी, लेकिन छप्पर सारे-के-सारे बडे और मज़बूत होने पर भी ऊपर फूस से छवाये हुए थे, मोटे और अच्छे किस्म के फूस से जैसा कि गाँव के किसी दूसरे गृहस्थ के छप्पर पर नही था ।

तीनो मकान लपटो की चपेट मे आ चुके थे । पाँच-सात मज़दूर छोटे-मोटे सामान अब भी हटा रहे थे । सन्दूक लेकिन टस-से-मस नही हो रहे थे ।

दुखमोचन ने कपिल को दौडाया, रक्षा-समिति वाले जवान मधुकान्त के टोले मे बचाव का काम कर रहे थे । पन्द्रह मिनट के अन्दर वे आ धमके ।

आग अब-तब भीतर पहुँच चुकी थी। छप्परो के अन्दरूनी ढाँचे जलने लगे थे। बरेडी का ऊपरी हिस्सा सुलग रहा था। धरने, मानिक-थम्भ और बीच वाले दोनो खम्भे ही बच रहे थे।

खती से ईटे खोदकर चौखट गिरा दी गई। दस आदमियो ने ठेल-ठालकर सन्दूक बाहर निकाल लिये। इन बडे सन्दूको मे नीचे छः-छः मोटे पहिये लगे थे। नित्याबाबू का आँगन क्या था, अच्छा-खासा मैदान था। आँगन के बीचोबीच लाकर सन्दूको को खडा कर दिया गया।

बाकी लोग उधर भौंहो से टपकते पसीने पोछ रहे थे और नित्याबाबू दुखमोचन से चिपटकर रो रहे थे।

दुखमोचन उनके आँसू पोछते-पोछते बोले—चाचाजी, आपके तो भला दो पक्के और शानदार मकान अब भी खडे हैं, लेकिन बाकी लोग कहाँ पनाह लेगे? हमे अभी फुरसत दीजिए, समूचा गाँव प्रलय-काल का आवा बनकर धधक रहा है··धान के बखार तो आपके सही-सलामत हैं न चाचा?

रोते-रोते नित्याबाबू ने कहा—हाँ, दुखमोचन! अनाज पर कोई आँच नही आई। 'आग-आग' का शोर-गुल मचा और लपकती लपटो से आसमान को उजागर देखा तो मैने पहला काम यही किया कि बखारो के छप्पर नीचे गिरवा दिए, वरना सारा गल्ला खाक हो जाता···आज हमारे घूटर ने बडी हिम्मत दिखाई है·· मगर दादा-परदादा के बनवाये मकान आखिर जल ही गए बेटा!

—अजी, फिर से बन जाएँगे चाचा, आप तो नाहक अफसोस करते हैं···

—बाँस-काठ और घास-फूस की ऐसी कारीगरी अब कहाँ देखने को मिलेगी दुखन?

नित्याबाबू फिर रोने लगे, तो दुखमोचन ने उन्हे इशारे से चुप रहने को कहा। अगले ही क्षण सभी बाहर निकले और गाँव के बडे

रास्ते पर आ गए।

राजपूतो का पुरवा गाँव के दक्षिण-पश्चिमी छोर पर कुछ अलग हटकर आबाद था। बाँसो की चौडी-घनी झुरमुटे और कलमी आमों के बाग दरमियान मे पडते थे, इससे राजपूतो का टोला बच गया। इधर से जलते घरो के जो भी बगूले उडे, वे बँसवार और अमराई मे उलझकर रह गए।

मुन्शी पुलकितदाम के दो मकान खपरैल के थे, इसी से नही जले। बाकी दो घर फूस से छपवाये हुए थे, जिनके आठो छप्पर खुलकर दहकते रहे। मुन्शीजी के आँसू रुकते ही नही थे। दहशत के मारे नवलकिशोर की ज़बान बन्द थी।

गाँव-भर मे जितने भी खपरैल के मकान थे, आग ने मानो छू-छूकर उन्हे छोड दिया। लेकिन इस प्रकार के घर तीस से ज्यादा नही थे। दस घर ब्राह्मणो के, सात-आठ जुलाहो के, चार कायस्थो के, दो ग्वालो के, तीन-चार भूमिहारो के मिडिल स्कूल का मकान देवी मन्दिर के नज़दीक ब्रह्म का मण्डप पचायत का छोटा घर * बस, यही कुछ मकान थे, जो नये-पुराने खपडो से छवाये हुए थे।

वेणी माधव का बैठकखाना वाला बडा मकान इन्ही मे से एक था। उसकी बरामदे वाली खम्भेलियाँ-भर झुलसकर रहँ गईं, बाकी समूचा बच गया। शेष फूस वाले तीनो घर स्वाहा हो गए थे। मधुकान्त, रामसागर, दुखमोचन, टेकनाथ, कचन, कन्हाई, बौधू, परमेसर आदि का एक भी घर नही बचा था।

मास्टर टेकनाथ बूआ से एक बूढा बैल माँगकर लाया था पिछले साल। खूँटे से खोल देने पर भी जाने कब वह किधर से होकर वापस आ गया और मास्टर के अनजाने ही पडोस की सँकरी गली के दहकते कोने मे झुलसकर ढेर हो गया था

टेकनाथ-जैसे गरीब ब्राह्मण के लिए यह कोई मामूली मुसीबत नही थी। घर जल गए, कोई बात नही, मडइया खडी कर ली जाएगी।

जैसे-तैसे गुज़ारा हो लेगा। लेकिन बैल के जल मरने पर यह जो चारों चरन प्रायश्चित्त लग गया है इससे छुटकारा पाने मे सिर का एक-एक बाल नुच जाएगा ·

देर तक मास्टर दुखमोचन को खोजता फिरा। उनसे उसकी मुलाकात आखिर चमारो के टोले मे हो गई।

दुखमोचन चमारो की बिरादरी के सबसे बुज़ुर्ग बौधू चाचा से बातें कर रहे थे, मालूम कर रहे थे कि इस बिरादरी मे अग्नि-काण्ड से किसका कितना नुक्सान हुआ है। यो घूम-घामकर वह सब-कुछ देख चुके थे, फिर भी बातचीत आवश्यक थी।

निगाहे मिलते ही दुखमोचन ने पूछा—कहो मास्टर, चीज़-बस्त तो नही नुक्सान गई ? घर तो खैर सबके खाक हो गए हैं तुम्हारे भी, हमारे भी, बौधू चाचा के भी, इनके भी और उनके भी ·

टेकनाथ की आँखे छलछला आई, लगा कि एक शब्द भी गले से ऊपर आएगा तो माथा फट जाएगा। वह चुप रहा, चुप क्या रहा, ज़बान ही नही खुली !

दुखमोचन ने जले छप्परो के दमकते अगारो की मामूली रोशनी मे भी मास्टर का फीका चेहरा देख लिया·· फडकते होठ, डबडबाई आँखें, उसाँस मे फूलते नथने ·

उन्होने गाढी आत्मीयता के लहज़े मे फिर कहा—बोलते क्यो नही हो ? क्या हुआ टेकनाथ ?

इतना कहकर दुखमोचन बिलकुल करीब आ गए और टकनाथ के दाहिने कन्धे पर अपना बायाँ हाथ रख दिया। दाहिने हाथ से उसकी ठुड्डी ऊपर उठाकर ममता की आवाज़ मे फिर पूछा—क्यो भाई, बोलते क्यो नही ? क्या हुआ है ?

अब मास्टर फफक-फफककर रोने लगा···

दुखमोचन ने उसे अपनी बाँहो मे ले लिया। घण्टो घूम-घूमकर वह गाँव-भर की आग बुझाते रहे थे। इससे हाथ ता काले हो ही गए थे,

बल्कि हथेलियाँ सूज गई थी, एक-एक उंगली मे पाँच-पाँच फफोलें निकल आए थे। पैरो का भी यही हाल था। चेहरा भी स्याह लग रहा था। मूँछो और बालो मे उडते बगूलो की सफेद-धूमिल छाइयाँ उलझी पडी थी

टेकनाथ की भी यही तस्वीर थी। बौधू चाचा का भी यही नक्शा था, वेणी माधव और कपिल का भी। रक्षा-समिति वाले भी ऐसे ही दिखाई देते थे।

टेकनाथ ने रो-रोकर कहा—मेरा बैल झुलसकर मर गया है दुख-मोचन! मुझे तो चारो चरन प्रायश्चित्त लग गए घर जलने का उतना अफसोस नही है, जितना इस बात का बैल की हत्या का यह कलक कैसे छूटेगा ? कैसे ऽ ऽ ऽ ••

आगे मास्टर से बोला नही गया, वह फूट-फूटकर रोने लगा।

सभी चुप थे। एक भी शब्द किसी के मुँह से निकलना नही चाहता था। सभी के दिमागो पर मानो गोहत्या का वह पाप क्षण-भर के लिए अपना विषैला प्रभाव छोड गया हो। दुखमोचन की बाँहे अनजाने ही टेकनाथ के बदन से अलग हो गई थी, क्षण-भर के लिए वह भी किंकर्तव्यविमूढ हो गए।

एकाएक दुखमोचन की अपनी सधी चेतना चौकस हो गई, टेकनाथ के कन्धे पर उनका एक हाथ फिर पहुँच गया। आश्वासन की गम्भीर भगिमा मे वह बोले—पण्डितो के पुराने पचडे मे नही पडना मास्टर, वे तो पतिया-प्रायश्चित्त के खरचीले खटरागो मे फँसाकर तुम्हारी बधिया ही बिठा देंगे।

टेकनाथ रोकर हल्का हो चुका था और दुखमोचन का अनुकूल रुख उसके मन मे छुटकारे की आशा का सचार कर रहा था। आहिस्ते लेकिन उदास स्वर मे कह गया—मै किसी से कहूँ भी तो कौन यह मानने को तैयार होगा कि बैल जलकर नही मरा है ? बात तो आखिर सच है ही •

दुखमोचन तुनककर बोले—तो तुमने जान-बूझकर अपने बैल को आग मे झोक दिया था ? अरे, अग्नि महाराज की यही मरजी थी भइया ! अब इसके लिए तुम अपने प्राण क्यो सकट मे डालोगे मास्टर ?

गद्गद स्वर मे टेकनाथ ने कहा—मेरी अकल कुछ काम नही दे रही है दुखमोचन, तुम्हारी बात तुम्ही जानो भाई !

—हाँ, इस मामले मे तुम कुछ नही बोलना । मैं पण्डितो से निबट लूंगा मास्टर !

—मुझे कुछ नही सूझ रहा है, एकमात्र तुम्ही सूझ रहे हो तभी तो दौड़ा आया हूँ ।

—जाओ, रत्ती-भर भी फिक्र मत करो टेकनाथ !

··· ग्यारह

अधेड दीखने वाले एक आदमी ने उत्तर की तरफ से गाँव मे प्रवेश किया। दाढी और सिर के बाल काफी बडे थे। कपार चौडा, नाक नुकीली और आँखें बडी-बडी।

रामसागर ने उसे सडक के मोड पर ही देखा था। अब बडी सडक छोड़कर आगन्तुक ने जब छोटी सडक पकडी और गाँव की सीमा के अन्दर पैर रखे तो रामसागर लपककर करीब आया। पूछा—किसके यहाँ जाना है ?

दाढी पर हाथ फेरकर आगन्तुक बोला—पण्डित सुखदेव मिश्र के यहाँ···मगर देख रहा हूँ कि अग्निदेव ने खुलकर ताण्डव नृत्य किया है। समूचा गाँव जलकर खाक हो गया है · राख के समुद्र मे बीस-पचीस खपरैल-मकान और पाँच-सात कोठे टापुओ की तरह चमकते हैं। हे नारायण, यह कैसी दुर्दशा तुमने इस गाँव की कर दी !

आगे एक शब्द भी आगन्तुक से नही बोला गया, गला फँस गया शोक के उफान मे। आँखो मे आँसू छलछला आए थे।

मलमल की लाल-सुर्ख धोती, कुरता भी उसी तरह लाल। गले मे हाथी के दाँत तराशकर बनाई गई मनको की माला लटक रही थी। पैरो मे कपडे के किरमिची जूते।

महाराज, आप कहाँ के रहने वाले है ?—रामसागर ने पूछा।

आगन्तुक ने ठहाका लगाया और कहा—गलत पूछा! अरे, यह पूछिए कि कहाँ का नही रहने वाला हूँ!

—अजीब बाते करते है आप तो!

—हाँ, मै खुद ही अजीब हूँ! फिर मेरी बात अजीब नही होगी!

रामसागर की समझ मे नही आया कि आगन्तुक का सुखदेव से क्या रिश्ता हो सकता है। वह सुखदेव और दुखमोचन के प्रायः सभी रिश्तेदारो को पहचानता था। अग्निकाण्ड के बाद सभी के रिश्तेदार मिलने आ रहे थे। जान-पहचान के दूसरे लोगो का भी आवागमन बढ गया था। यह नयी बात नही थी कि पण्डित सुखदेव से कोई मिलने आया था। मगर प्रश्नो का उटपटाँग जवाब देनेवाला यह कौन हो सकता है सुखदेव का, रामसागर की समझ मे नही आया।

कुछ सोचकर उसने कहा—इस गाँव मे शायद आप पहली बार आये है, चलिए, मैं आपको सुखदेव भाई के ठिकाने तक छोड आता हूँ।

चलिए!—आगन्तुक ने ठहाका लगाया और कहा—पहली और दूसरी बार आया हो चाहे दसवी बार, अग्निदेव की सत्यानाशी कृपा के कारण कौन अभ्यागत भ्रम मे नही पड जाएगा! झुलसी भीतें, काले-अधजले खम्भे, ठूँस और कलूटे खूँटे—नारायण! नारायण! कैसा भयानक दिखलाई पडता है गाँव! दुर्गा! दुर्गा! दुर्गा! काली! काली! काली! कब लगी थी आग? आज कै दिन हुए है?

छः रोज़ हुए हैं—रामसागर ने कहा—महाराज, आपने बतलाया नही, कहाँ से आ रहे हैं?

आगन्तुक ने रुककर कहा—मैं नर्मदा-तट से आ रहा हूँ, नाम मेरा

है लीलाधर झा। हमारी कुटिया मे एक भगत उस रोज़ अखबार ले आया था। उसीने खबर सुनाई कि दरभगा ज़िले का टमका-कोइली गाँव जलकर खाक हो गया है सुखदेव की मामी मेरी भाभी होती है। जिज्ञासा मे आया हूँ ठीक-ठाक है न वे लोग ?

—हाँ महाराज, ठीक-ठाक है। घर अलबत्ता जल गए, मगर जान-माल का नुकसान नही हुआ आँच और धुएँ की धौस से गल्ला बरबाद हो गया···

—तारा ! तारा ! तारा ! काली ! काली ! काली !

—हाँ महाराज, महामाया की ही लीला है सब-कुछ !· तो आप रिश्ते से सुखदेव भाई के मामा हुए न ?

हाँ !·· लीलाधर क्षण-भर रुककर बोला—लेकिन उनकी मामी सकुशल हैं न ?

—जी महाराज !

अब रामसागर ने आगे से राह छेंककर कहा—तो मै आपको प्रणाम करूँ मामाजी ! ठहरिए ··

उसने लीलाधर के पैर छू लिए।

सधुमई ढग से बँधी एक गठरी लटक रही थी उसके कन्धे से। रामसागर ने वह उतारकर बगल मे दबा ली। बाते करते-करते दोनों जने सुखदेव के ठिकाने पर पहुँचे। घर तो रह नही गए थे, ठिकाना ही था सिर्फ ! खूँटो के सहारे तो धोतियाँ और साडियाँ परदो का काम दे रही थी। वरना परिवारो के दरमियान कही कोई आवरण नही था, सभी सबको देख रहे थे। हाँ झुलसी हुई बदरग भीते यहाँ-वहाँ, जहाँ-तहाँ शील-सकोच का पारिवारिक कवच बनकर अब भी खडी थी। कही-कही इन नगी-कलूटी भीतो के सहारे कामचलाऊ छप्पर-छानी लटका ली गई थी।

मुसीबत आडम्बरो को चीर-फाड़ डालती है। झूठ-मूठ की लाज, फिज़ूल का गुमान, अनावश्यक भावुकता आदि तो उसके सामने टिक

ही नही सकते । मामी ने लीलाधर की आवाज़ सुनी तो झट से आड के बाहर निकल आईं । लीलाधर ने झुककर उनके पैर छुए तो डबडबाई आँखो से उसकी तरफ देखती रह गईं । गला भर आया था, होठ रुलाई के आवेग मे फडक रहे थे ।

दुखमोचन सवेरे ही सहायता के कामो मे निकल गए थे । गुरुदेव कुएँ के आगे 'कलकतिया' आम के झुलसे पेडो की पतली छाया मे नित्य का अपना पूजा-पाठ कर रहे थे । दालान के सहन मे चार-पाँच मज़दूर बाँस के डण्डे फैलाकर बडा-सा छप्पर तैयार कर रहे थे । रुखान, आरी, बसूला, टाँगी, खन्ता आदि औज़ार इधर-उधर बिखरे पडे थे । कोडो, बाती, झाँजन, तडख, खूँटा, खम्भा, खँभेली मोटी और पतली डोरियाँ·· खढ, खढी, सरकडा, बाँस · यानी घर बनाने का सारा सामान मौजूद था । जय माधव और परमेसर मजदूरो से काम भी ले रहे थे, साथ ही खुद भी काम कर रहे थे ।

अपर्णा दौडकर गई, कुएँ से एक डोल पानी भर लाई । लोटा-भर पानी सामने आया तो मामी अपने ही हाथों से लीलाधर के पैर धोने बैठी ।

लीलाधर ने दो-एक दफा हल्की ज़बान से 'न-ना' किया, आखिर चुपचाप पैरो को निश्चेष्ट छोड दिया । वह अच्छी तरह जानता था कि मामी मानेंगी नही, अपने हाथो से जब तक वह इन पैरो को धो नही लेंगी तब तक उनको सन्तोष नही होगा ।

पैरो को धोते समय मामी ने देखा, फटी-सूखी बिवाइयो के तलवो को खुरदरा करके छोड दिया है · बे-तरतीब कटते रहने की वजह से नाखून अपनी सहज शक्ल-सूरत खो चुके है सेवा और चिकनई के अभाव मे चमडी कडी पड गई है, नसो मे एक अनोखा तनाव आ गया है ।

हाय, वे मुलायम और सुन्दर पाँव कहाँ गायब हो गए ! मामी की आँखें अपने लाडले देवर की दुर्दशा देखकर बार-बार सजल हो रही थी ।

पैरो को अच्छी तरह धोकर मामी ने आँचल से उन्हे पोछ दिया और आँखें नीची किये-किये ही अन्दर रसोईघर की तरफ चली गईं।

रामसागर वापस जा चुका था मगर सुखदेव की पूजा अभी बीच मे ही थी। अपर्णा ने आकर नहाने के बारे मे पूछा तो लीलाधर ने बतलाया कि गाडी से वह रात ही उतरा और सुबह-सुबह स्नान-ध्यान आदि से निबटकर स्टेशन से चला है।

थोडी देर बाद अपर्णा बुलाकर लीलाधर को अन्दर ले गई। चम-चमाती थाली मे चार पूडियाँ, हलुआ, तले हुए परवल और आम का अचार—एक फाँक। अलग कटोरे मे दूध। पीढे पर बैठकर वह नाश्ता करने लगा तो बिजनी लेकर मामी हवा करने बैठी।

नलीदार मूठ के अन्दर से घूमती हुई बाँस की वह पखी 'किर्र-किर्र' 'केंच-केंच' आवाज़ कर रही थी। हवा तो खूब आ रही थी, लेकिन कान गुदगुदा रहे थे। लीलाधर ने पखी की तरफ कौतूहल की निगाहो से देखा।

मामी सहज स्वर मे बोली—बडी बेहूदी है यह बिजनी, लखनौली वाला डोम परसो ही तो दे गया है। मेरी अपनी बिजनी अग्नि-महाराज ने ले ली तीन वर्ष की वह मेरी बेहद प्यारी सहेली थी। छोटी बहू के भरोसे मैं उसकी तरफ से निश्चिन्त रही, पीछे नही मिली तो बडा दुख हुआ। नान्ह बाबू, क्या बताऊँ कि उसकी आवाज़ कितनी मीठी थी!

थोडी देर बाद लीलाधर ने कहा—भाभी, अब मेरी जान-मे-जान आई! भरोसा नही था कि तुम्हे सही-सलामत देख पाऊँगा इन आँखो से

हथेली पर ठुड्डी टेककर मामी बोली—नही नान्ह बाबू, इतनी आसानी से मैं नही मरने की! यमराज के मुन्शी ने अपने रजिस्टर से मेरा नाम काट दिया है शायद ‥ ।

यही सब मुझे तुम्हारे मुँह से सुनना था भाभी! —लीलाधर ने विषाद-भरे स्वर मे कहा और हलुआ वाले कटोरे से हाथ हटा लिया।

मामी हँसकर बोली—बुरा मान गए! ‥ मगर हलुआ तो तुम्हें खाना

ही होगा दूध चाहे पीछे ले आना। ··और ·

लीलाधर ने हलुआ खाते-खाते कहा—चुप क्यो हो गई भाभी ? गले तक आई बात मुँह से नही निकालोगी तो अगले जन्म मे जीभ सुन्न हो जाएगी, समझी ?

समझी !—तुनककर मामी ने कहा—जी, बाबाजी महाराज ! · यह तुमने अच्छी धज बना रखी है ! देखा है कभी शीशे मे अपना चेहरा ? पिटारी लेकर घूमोगे तो चार पैसा जरूर कमा लोगे ! हुँ !

लीलाधर दूध छोडकर उठ रहा था, लेकिन मामी ने अपनी कमम देकर दूध पी लेने को बाध्य कर दिया।

हाथ-मुँह धोकर सुखदेव के नजदीक आ बैठा। अपर्णा पान दे गई। पान चाबते-चाबते सुखदेव से बातें करता रहा। पण्डित की पूजा खत्म हो चुकी थी।

पेडो की छाया मे उधर चारपाई डाल दी गई, कम्बल और चादर अपर्णा बिछा गई उम पर। मामूली बातचीत के बाद सुखदेव ने कहा—अब आप आराम करे मामाजी, खाना खाकर मुझे बाजार जाना है ·· कई दिनो के थके हे आप।

फिर उसने जय माधव से कहा—धूप आ जाए तो चारपाई-समेत इन्हे उठाकर छॉव मे कर देना, समझे ?

इस पर सभी को हँसी आ गई। लीलाधर बोला—भगवान् जो न कराएँ !

भगवान् नही मामाजी—सुखदेव ने चिढकर कहा—एक बुढिया की बेवकूफी से समूचा गाँव जलकर खाक हो गया।

—मैं होता तो बढिया को उसी आग मे डाल देता ! ऐसी चुडैल को लोगो ने जिन्दा छोड दिया।

—अजी, वह तो पीछे पता लगा मामा ! उम वक्त तो ऐसी चीख-पुकार और भाग-दौड मची थी कि कुछ न पूछिए। हवा भी उसी शाम को इतनी तेज चल रही थी कि उनचासो पवन मात थे उसके आगे···

जोगेन्द्र ने इतने मे आकर कहा कि खाना खाकर बाज़ार अभी चलना होगा। मामी नाराज़ हो रही है। सुखदेव भीत की आड मे चले गए। लीलाधर की चेतना पर सचमुच थकावट छा रही थी, बदन का एक-एक जोड टूट रहा था। वह अब चारपाई पर लेट गया। कुछ ही क्षणो के बाद उसे नीद आ गई।

सुखदेव के सामने थाली मे जो भात आया, उससे धुँआइन भाप उठ रही थी। झुलसे चावलो का बदरग भात—नाक-भौंह सिकोडकर पडित ने उसमे दाल मिलाई। दाल से भी वैसी ही गन्ध उठ रही थी। तरकारी परवल की थी और ठीक थी। पाँच-सात कौर मुँह मे डालकर उन्होने मामी की तरफ देखा। मामी पखी लेकर हवा कर रही थी।

खाना समाप्त करते ही सुखदेव ने पूछा—मेहमान को भी यही खाना खिलाओगी ?

—तो कहाँ से आएँगे बढिया चावल ? अच्छे चावल बाज़ार से मँगवा लूँ ? मगर ये चावल भी तो फेक नही दिए जाएँगे ! अनाज तो अनाज ही ठहरा, जरा झुलस ही गया तो क्या हुआ ?

—हमारे यह मामाजी पहली बार आये है, क्या कहेगे, मन-ही-मन ?

—कहेगे क्या ! कुछ नही कहेगे। मुसीबत की बात सुनकर ही तो मिलने आये है। आप नाहक इतना-कुछ नान्ह बाबू के लिए सोचते हे पडितजी ! परिवार मे सबके लिए जो कुछ तैयार होगा, वह भी वही खाना खाएँगे। उनके लिए अलग से खाना तैयार होगा तो कल ही भाग खडे होगे। अभी नाश्ते मे पूडियाँ थी, हलुआ था। मेरे डर से नान्ह बाबू ने खा तो लिया, लेकिन आँखे फाड-फाडकर वह झुलसे चावलो के ढेर देखते रहे—

मामी उठकर रसोई मे गयी और कटोरे मे हलुआ ले आई। बोली—आज बबुअन शायद ही लौटें, जरा-सा हलुआ उनके लिए भी रख दिया है। नही आयेंगे तो जोगी खा लेगा। आप लोग बाज़ार से साँझ-सकारे ही लौट आना !

सुखदेव उठे। हाथ-मुंह धोकर पान लिया और बदन मे कुरता डालकर बाज़ार के लिए निकले। हाथ मे खाली डब्बा था, बोतल और झोला लेकर जोगेन्द्र ताऊ के पीछे-पीछे था।

दुखमोचन रात को काफी देर से लौटे। अकेले नही, तीन आदमी और साथ थे—दो विधायक, एक सार्वजनिक कार्यकर्ता। विधायको मे एक थे शुभकर बाबू, दूसरे थे चतुरी ठाकुर।

मामी ने उदास होकर पूछा—अब इत्ती रात को इन्हे क्या खिलाओगे ?

पिपरा बाज़ार से खाकर चले थे—दुखमोचन ने कहा तो मामी के दिल की तसल्ली हुई। फिर भी बोली—शरबत तो पिएँगे—चीनी बाज़ार से आज ही मँगवाई है, सौफ और पुदीना मैं चटपट पीस लेती हूँ। तुम ताज़ा पानी ले आओ।

अच्छा !—दुखमोचन ने कहा—लाल धोती वाला वह दढियल कौन सो रहा है बाहर ? यह कहाँ के सिद्धजी आ टपके मामी ?

अन्दर की ख़ुशी को दबाकर मामी ने गम्भीर मुद्रा धारण कर ली। बोली—मै क्या जानूं ! पडितजी के हीत-मीत कोई मिलने आ गए होगे !

तीनो अभ्यागत तख्तपोश पर बैठे रहे। अन्दर से लाकर दुखमोचन ने दरी-चादर बिछा दी। थोड़ी देर बाद शरबत ले आए, फिर पान आया।

नित्याबाबू का नौकर घूटर खंवास इस बीच यह कह गया कि मालिक ने मेहमानो के लिए बिस्तरे लगवा दिए है। थोडी देर तक अग्निकाड से होनेवाली बरबादी और अगले नवनिर्माण की योजनाओ पर बातें होती रही। तय हुआ कि सुबह घूम-घूमकर समूचा गाँव देखा जाएगा। तीनो आगन्तुको की इच्छा थी कि दुखमोचन के दालान की अँगनई मे सो जाएँगे। लेकिन दुखमोचन ने सोचा कि यहाँ इन्हे तकलीफ होगी। समझा-बुझाकर वह उन्हे नित्याबाबू के बैठकखाने मे ले गए। वहाँ तीनो पलगो पर बाकायदा बिस्तर लगे हुए थे। तीनो लेट

गए। चतुरी ठाकुर बड़े ही कर्मठ किसान-सेवी थे। वह देर तक दुखमोचन से बाते करते रहे। शुभकर बाबू की नाक साँस के मुताबिक बजती रही।

सियारो ने नदी-किनारे लखनौली की ओर कही 'हुआँ-हुआँ' की टेर लगाई तो चतुरी ठाकुर ने आग्रहपूर्वक दुखमोचन को घर भेजा।

मामी बिना छप्पर के खुले बरामदे मे अब तक करवटे बदल रही थी। नीद के पख लग गए थे, पास फटकती तक नही थी। वह बेहद उतावली थी लीलाधर के बारे मे बताने के लिए। मेहमानो की सेवा-टहल मे व्यस्त रहने के कारण ही दुखमोचन दढियल आगन्तुक की तरफ ध्यान नही दे पाया। और मामी ने जब खुद ही कह दिया उसके बारे मे कि 'मै क्या जानूँ!' तो दुखमोचन उसकी तरफ से और भी निरपेक्ष हो गया, दोबारा ज़िक्र तक नही किया • मामी पछता रही थी कि बबुअन ने पूछा तो लीलाधर के बारे मे सीधे-सीधे बतला क्यो नही दिया! बातचीत की टेढी-मेढी शैली कभी-कभी कितनी महँगी पड जाती है! रह-रहकर मामी यही सोच रही थी।

बीच मे दो दफे वह कुएँ के इर्द-गिर्द चक्कर लगा आईं। सुखदेव और लीलाधर दो चारपाइयो पर पास-पास सोए थे। यह चैत का शुक्ल पक्ष था। नील-निर्मेघ आकाश मे द्वादशी का चाँद बडा ही अच्छा लग रहा था। रात्रि-शेष का हल्का गुलाबी जाडा सूती चादर से ठगने के काबिल नही था। दूसरी बार.लीलाधर को सिकुँडे देखा तो मामी आहिस्ते से ट्रक खोलकर अपना शाल निकाल लाई और उसे ओढा दिया। करवीर और हरसिंगार के झाड आग की प्रचण्ड लपटो मे बुरी तरह झुलस गए थे, आँगन की श्रद्धा-रानी तुलसी तो और बुरी तरह झुलसी थी। इनकी ठूँठ परछाइयो से आँखो को खरोच-सी लगी तो मामी वापस आकर बिस्तर पर लम्बी हो गई, पलको को देर तक उँगलियो से दबाए रही।

दुखमोचन के पैरो की आहट पाते ही उठ बैठी मामी।

वह आकर पास ही बैठे। उबासी लेकर कहा—आज बहुत थका

हूँ मामी, सोऊँगा तो एक ही नीद मे सूरज दो बाँस ऊपर चढ जाएगा।

मामी ने चुटकी बजाकर सराहा—बडे भागमन्त हो बबुअन ! यहाँ तो नीद निगोडी जाने कब से खार खाए बैठी है अच्छा, एक नयी खबर है तुम्हारे लिए·· लीलाधर आये है ।

—झूठ !

—इतनी रात को तुमसे मज़ाक करूँगी ? जिस दाढी वाले के बारे मे तुमने तब पूछा था, वह लीलाधर ही तो है · अखबार के ज़रिये उन्हे गाँव जलने की बात मालूम हुई तो मेरी खोज-खबर लेने आये है ·

—भाग तो नही जाएँगे फिर ?

—अब तुम्ही उन्हे सँभालना बबुअन !

नही मामी !—दुखमोचन ने स्नेहसिक्त स्वर मे कहा—मेरा नही तुम्हारा ही मधुमय अकुश लीलाधर को आदमी बना सकता है ।

मामी की आँखे डबडबा आईं, स्वर मे कम्पन उभर आया—बबुअन, लीलाधर ने आज बहुत आँसू बहाए है···

दुखमोचन ने कहा—और तुमने भी !

हाँ बबुअन, मैने भी !—उसी तरह तरल-विह्वल आवाज मे वह बोली ।

थोडी देर तक दोनो तरफ से साँसो को अपना माध्यम बनाकर मौन ही मुखर रहा, फिर दुखमोचन हाथ जोडकर बोले—अब मै लीलाधर मामा को भागने नही दूँगा·· भागकर वह जाएँगे कहाँ ?

दुखमोचन सोने के लिए बाहर निकल आए ।

दालान के बिना छप्परवाले खुले बरामदे मे एक तरफ चरवाहा सो रहा था, दूसरी तरफ चारपाई पर दुखमोचन का बिस्तर बिछा था ।

बरबाद बस्ती का उलग ककाल चाँदनी मे और भी बीभत्स, और भी भयानक लग रहा था। बिना भीत के जले घरो के नग-धडग खम्भे पुरानी नावो के बदरग मस्तूलो की तरह चाँदनी के दूधिया समुद्र मे इस वक्त बेशरमी से इतरा रहे थे ।

· · बारह

पास-पडोस के देहातो ने बाँस-काठ-फूस-अनाज और श्रम-शक्ति द्वारा टमका-कोइली के दुर्दशाग्रस्त लोगो की खुलकर सहायता की। दो विधायक महोदय अग्निकाण्ड से होनेवाली बरबादियाँ अपनी आँखो से देख गए थे। अलग-अलग पार्टी से सम्पर्कित रहने के कारण सहायता के लिए अखबारो मे उनकी अपीले अलग-अलग निकली थी। ज़िलाधीश और अचलाधिकारी अपील निकलने से पहले ही दो हज़ार और दो सौ रुपये मदद के तौर पर दुखमोचन के हवाले कर चुके थे। अब पिपरा बाज़ार, दरभगा और सीतामढी के व्यापारियो ने ढाई हज़ार नकद रकम, दो सौ मन अनाज, पन्द्रह थान कपडा, लोहे के दस सेर कील-काँटे आदि काफी सामग्री भेजी।

दुखमोचन ने पुनर्निर्माण के सिलसिले मे सबसे पहला काम यह किया कि गाँव के दक्षिण, देवी-मन्दिर के नज़दीक सहायता-शिविर के लिए आठ-दस झोपडियाँ एक कतार मे खडी करवाईं। सिमरौन, पुनई चक, लखनौली आदि गाँवो के साठ जवान बिना मज़दूरी के ही काम

पर डटे थे। सोलह-सोलह अठारह-अठारह घण्टे की दैनिक ड्यूटी थी। दो जून का खाना, तमाखू, सुपारी, और बीडी · मनोरजन के नाम पर हँसी-ठट्ठा, चुटकुले, कहानियाँ, आपबीती की दास्तान—सनीचर और मगलवार की रात को ढाई-तीन घण्टे के लिए कीर्तन के नाम पर गाना-बजाना· हारमोनियम, मृदग और मजीरा · फिर काम, काम और काम।

कपिल का काम कोषाध्यक्ष का था। माया खिलाने-पिलाने की ड्यूटी पर थी। मधुकान्त और वेणी माधव घूम-घूमकर सहायता के लिए फेहरिस्त तैयार कर चुके थे। नित्याबाबू, त्रिजुगीनारायण चौधरी, राम रखराय और पुलकितदास-जैसे सम्पदा वालो के नाम जान-बूझकर ही नहीं लिखे गए थे। गरीब किसानो और खेत-मजदूरो की तरफ ज़्यादा ध्यान दिया गया था। मास्टर टेकनाथ और रामसागर-जैसे छोटी हैसियत वालो को सहायता-पात्रो की दूसरी श्रेणी मे रखा गया था। तीसरी श्रेणी मे उनके नाम थे जिनको मदद की आशिक आवश्यकता थी। इनमे रमाकान्त, रामकुमार और वेणीमाधव जैसो के नाम थे। लोगो ने काफी ज़ोर डाला कि इस कोटि मे सुखदेव का भी नाम लिखा जाए मगर दुखमोचन राज़ी नहीं हुए।

अपने परिवार को सहायता पहुँचाने के बारे मे दुखमोचन ने इतना ज़रूर किया कि कामचलाऊ दालान और अन्दर हवेली के नाम पर दो मामूली घर अग्निकाण्ड के बाद सप्ताह मे तैयार करवा लिये। बाँस-लकडी-फूस आदि सारी सामग्री खुद की थी ही, श्रम पडोसी देहात के स्वयसेवको का था।

सुखदेव बेहद नाराज़ थे कि सहायता की सामग्री की रकम, जो दूसरे परिवारो को सहज प्राप्य थी, दुखमोचन ने क्यो नहीं ली। मामी लेकिन असलियत को ताड गई थी, सुखदेव की नाराजगी समर्थन न पाकर उदासी मे बदल चुकी थी। लीलाधर को समझा-बुझाकर ठीक कर लिया गया था कि अगले छ महीने वह अन्यत्र कहीं नहीं जाएँगे और जोगेन्द्र तथा अपर्णा को सस्कृत-हिन्दी-मैथिली पढाएँगे।

दालान पर सवेरे अच्छा रग जमता था। एक तरफ पण्डित सुखदेव अपने शालिग्राम-नर्मदेश्वर-सहित पूजा-पाठ मे जुटे होते और दूसरी तरफ रक्ताम्बरधारी सिद्ध लीलाधर काले कम्बल की आसनी पर वज्रासन लगाए और पीले रग की रेशमी गोमुखी के अन्दर दाहिना हाथ डाले देवी उग्रतारा का बीज-मन्त्र जपने मे घण्टो डटे रहते। लोग कहते—न गाँव मे आग लगती, न हमे सिद्धजी का दर्शन होता।

किन्तु अब लीलाधर ने लम्बी दाढी और बाल कटवा लिये थे, साधारण नेपाली वज्राचार्य की तरह लग रहे थे। दमकता हुआ गोरा चेहरा • कपार पर गाढे सिन्दूर का अँगूठा जितना टीका गले मे रुद्राक्ष और मूँगे की माला आकृति बडी ही भव्य लगती है। मामी उन्हे बीच-बीच मे झाँक जाती।

रामनवमी के दो दिन बाकी थे। प्रसाद के लिए आटा पिसवाना था। मामी गेहूँ पछोर रही थी। बाहर सुखदेव और लीलाधर मानो पूजा-प्रतियोगिता मे आमने-सामने डटे थे।

माया ने मुसकाते-मुसकाते अन्दर हवेली मे पैर रखा। मामी ने उसकी तरफ देख लिया। जवाबी मुस्कान से उनका चेहरा चमक उठा, फिर बोली—क्या बात है माया ? पके दाडिम की तरह फूटी पडती हो, मगर बोलती नही हो कुछ भी !

माया खिलखिलाकर हँस पडी, क्षण-भर बाद कहा—बाहर दालान मे दो ऋषि-मुनि आमने-सामने बैठे हैं, कितना अच्छा लगता है मामी ! उठो, ज़रा चलकर देखो मामी

माया ने मामी का हाथ पकड लिया। हसते-हँसते उन्होने हाथ छुडा लिया, बोली—चल हट ! बता, किस काम से आयी है ?

भौहे नचाकर कृत्रिम क्रोध के स्वर मे माया ने कहा—तो तुमने देख लिया होगा मामी ! हाँ, जरूर देखा होगा

मामी मुसकाती रही और अपना काम करती रही।

कुछ रुककर माया ने कहा—तुम्हारे यहाँ दाल परोसने का बडा

डब्बू होगा, भइया ने कहा था। सोचा ले आऊँ···कलछी से नहीं सपरता है मामी ! जल्दी निकाल दो

—सास से क्यो नही माँग लाई ?

—होता तो ले न आती मामी !

भारी कजूस है तेरी ससुराल वाले, अच्छा-सा एक डब्बू खरीद-कर रखेगे सो नही होता ·

—और चाहे जो कुछ हो मामी, कजूस नही है वे लोग। दो सौ बॉस, दस पेड सीसम के और तून के चार पेड कटवाकर दूसरे किसने दिये है, बता सकती हो ? अभी और दे रहे थे लेकिन दुखमोचन भैया ने खुद ही मना कर दिया। कहा कि फिर से बस्ती बनाने का यह जग्य किसी एक के सरबस-दान से थोडे सँभलेगा, इसमे सभी को अपनी-अपनी आहुति देने दो दूसरो के लिए तभी से भइया ने शर्त लगा दी कि पचास बाँसो से अधिक की सहायता स्वीकार नही की जाएगी···

मामी के जी मे आया कि मज़ाक-मखौल करे, कहे कि अपने मुँह ससुराल वालो की विरुदावली बखान रही है, कलजुग की छोकरी कहकर ताना मारने की तबीयत हुई · लेकिन एकाएक मामी की बुद्धि ने पलटा खाया। विवेक ने कहा कि माया शेखी नही बघार रही है, सजीदा ढग से सही बात कह रही है पिछले दो हफ्तो से दुखमोचन और उनके साथियों के हाथ बटा रही है। वेणी माधव या कपिल से रत्ती-भर भी कम मेहनत नही की है इस लडकी ने ·

मामी के हाथ रुक गए। गेहूँ वाला सूप एक तरफ रख दिया। हाथ झाडती-पोछती उठ खडी हुई।

माया के कन्धे पर हाथ रखकर कहा—हाय ! अपने बालो का क्या हाल कर रखा है पगली ने ! बैठ, चटपट मै तेरे बाल सँवार देती हूँ···

माया खिलखिला पडी, निषेध की मुद्रा मे हाथ हिलाकर बोली—ना मामी, अभी दम मारने की भी फुरसत नही है। यह सब खटराग रहने दो अभी। चलो, डब्ब निकाल दो सन्दूक मे से ·

—हे भगवान्, कैसा उतावलापन है !

—भगवान्, नही डब्बू ! डब्बू चाहिए मामी, दाल परोसने के लिए समझी !

हाँ समझी, सब समझी—हाथ से कपार पीटकर मामी ने कहा और पीतल का डब्बू निकाल लाईं।

अगले ही पल डब्बू लेकर माया सहायता-शिविर मे वापस आ गई। सुग्गी बुआ, रामसागर की स्त्री और मधुकान्त की माँ रसोई के मोरचे पर डटी थीं। दुकान से माया जीरा और लाल मिर्च लेती आई थी।

माया की आवाज सुनाई पडी तो कपिल ने उसे बुलाया। पास आयी तो पूछा—रास्ते मे कही दुखमोचन भइया तो नही मिले ?

—नही तो ! आये थे क्या ?

—अभी-अभी गये है, स्वयसेवको के खाना खाते वक्त आज वह मौजूद रहेगे माया !

—यह तो मै चाहती ही थी कोई नयी बात ?

—नयी बात ?

कपिल को हँसी आ गई। हँसते-हँसते कहा—अब नित्याबाबू भी बिना मजदूरी के ही मकानो की तैयारी के सपने देखने लगे है माया !

घोर स्वार्थी है बुड्ढा !—माया बोली। नाक और भौहे सिकुड गईं। एक क्षण के बाद कहा—एक भी स्वयसेवक उसके यहाँ काम करने गया तो कैम्प छोडकर चली जाऊँगी मै ! तुम दुखमोचन भइया से साफ-साफ बतला देना।

—हाँ, नित्याबाबू की बुढ़भस का कोई कहाँ तक साथ दे ?

—तुम इसे बुढभस कहते हो ? अरे, यह तो साफ बदनीयत है भाई !

—नित्याबाबू दुनिया-भर को धोखे मे डाल सकते हैं, मगर हमारे दुखमोचन भइया पर उनका जाल-फरेब नही चलेगा माया !

—यह तो मैं खूब अच्छी तरह समझ रही हूँ कपिल !

सुग्गी बूआ ने रसोईवाली झोपडी से पुकारा तो माया उधर चली गई।

कहावत है, जले गाँव पर सूरज भी जलता है। दोपहर अभी हुई नही थी, लेकिन धूप कई गुना तेज लग रही थी। हवा चलने पर राख-मिली धूल की होली इन दिनो यहाँ ककाल का शृगार-जैसी लगती थी। उसके लिए लोगो के मुँह से गालियाँ ही निकलती।

कुछ देर बाद रक्षा समिति वाले जवान और स्वयसेवक खाना खाने आये। पुरइन के पत्ते पर मोटे चावल का भात, खेसारी की दाल, आलू का भुरता, इमली की चटनी·· तीस-तीस की दो कतारो मे बैठकर उन्होने खाना खाया, डकार लेते हुए पत्तलें समेट ली और उठ गए।

दुखमोचन ने अपने हाथ से एक-एक टूक सुपारी का टुकडा सबको दिया, और हुलसी आँखो से एक-एक नजर देख भी लिया।

देवी-मन्दिर से दक्षिण पोखर था। पोखर के दक्षिणी मुहार पर कलमी आमो का घना बाग था। बाग के किनारे-किनारे ऊँचे बाडे थे, जिन पर तरुण सीसम की चौकोर पाँते लहरा रही थी। लगता था कि नीलिमा के चारो तरफ हरियाली-पाढ बनकर जमी हुई है।

यह पोखर और बाग नित्याबाबू की जायदाद थे। सहसौला बाजार वाली कच्ची सडक इस पोखर ओर बाग को छूती हुई दक्षिण की ओर निकल गई थी। गरमियो के छायार्थी पथिक बाग के अन्दर घडी-आधी घडी सुस्ता लेते थे।

खाना खाकर घण्टा-आधा घण्टा स्वयसेवको का भी आराम कर लेने का दस्तूर था, आज भी वही हुआ।

दुखमोचन थोडी देर सुग्गी बूआ, माया और कपिल आदि से बाते करते रहे। फिर खाना खाने के लिए घर आ गए। आजकल गाँव का नक्शा, स्केल और जरीब हमेशा साथ रहते थे। मामी ने देखते ही कहा—बबुअन, तुम तो अमीन हो गए! आठो पहर नक्शा-जरीब ढोने की क्या जरूरत आ पडी है, समझ नही पाती हूँ मैं!

सामने खाना आ चुका था। भूख कड़ाके की लगी थी। जल्दी-जल्दी चार-छ कौर भात खाकर दुखमोचन ने कहा—दिन-भर मेरे साथ कभी घूम आओ तो सारी बात समझ मे आ जाएगी मामी!

लीलाधर मामा खा चुके? · आज उन्हे साथ ले जाऊँगा अब वही तुम्हे नक्शा और जरीब का महातम बतलाएँगे आकर!

दुखमोचन इतमीनान से खाना खाते रहे और मामी पास बैठकर पंखा झलती रही। चुप थी कि बबुअन को भी बोलना पड़ेगा और खाना खाने मे देर होगी, तो पीछे कही नाराज न हो जाएँ

सामने आकर वही काला कुत्ता बैठ गया, करिया। गरदन से नीचे आधी पीठ तक उसके बाल झुलस गए थे।

खाना करीब-करीब खत्म हो चुका था। मामी दही ले आईं, ऊपर से मुटठी-भर भात और। दुखमोचन की नजर बार-बार कुत्ते की तरफ जा रही थी। मामी ने कहा—रोज कपूर और रेंडी का तेल इसकी पीठ पर मलती हूँ, मगर बाल जम नहीं रहे बबुअन! आग लगने के तीन दिन बाद राख की ढेरी पर कलमुँहा पीठ खुजलाने गया था 'अन्दर आग थी, बाल झुलस गए।

डकार लेते हुए दुखमोचन ने पूछा—किसने बतलाया?

—चरवाहे ने।

—मुझे तो कुछ और शक ही होता है आवारा छोकरो ने आग वाली गर्म राख की ढेरी पर बेचारे को पटक दिया होगा लेकिन तुम घबराओ नही, चार-छ महीने मे बाल उग आएँगे।

आँचल फैलाकर मामी ने ऊपर सूरज की ओर देखा और प्रार्थना के विगलित स्वर मे बोलीं—दुहाई दीनानाथ दिनकर की! करिया की पीठ पर बाल ज़रूर उगा देना दयानिधान! छठ की अरघ के अवसर पर प्रतिवर्ष मैं आपको इस कुत्ते की तरफ से पकवानों की एक डाली नवेद चढ़ाऊँगी हे सूर्य भगवान्!

दु खमोचन को हँसी तो आई, लेकिन उसे उन्होंने होठो के अन्दर

ही घोट लिया। कुत्ते के प्रति करुणा के जो भाव मामी के हृदय मे हिलोरें ले रहे थे, उनका खयाल आते ही दुखमोचन के चेहरे पर सजीदगी छा गई। दिल ने कहा—अपनी इस अनोखी मामी पर तुझे अपना सर्वस्व निछावर कर देना चाहिए दुखमोचन !

खाना खा ही चुके थे। उठकर हाथ-मुँह धो आए। अपर्णा ने पान लगाकर दिया। जाते-जाते सचमुच ही लीलाधर को साथ लेते गए, तो यह मामी को अच्छा ही लगा।

पिछले दो दिनो से दुमाधो और जुलाहो के पुरवे तैयार हो रहे थे। दस-दस स्वयसेवको के छः जत्थे अलग-अलग काम कर रहे थे। दो जत्थे ब्राह्मणो और कायस्थो के घर तैयार कर रहे थे, बाकी चार जत्थे गरीब किसानो—खेत-मजदूरो वाली बहुसख्यक जनता के महल्लो मे मुस्तैद थे।

पहले बस्ती का कोई क्रम नही था। घर-पर-घर, मकान-पर-मकान। न रास्ते का ठिकाना, न नाली-मोरी का विकास। एक का दालान, दूसरे का पिछवाडा, तीसरे की बथान, चौथे का बाडा सभी आमने-सामने हुआ करते थे। जिसको जैसा सुभीता नजर आया, अपनी छप्पर-छानी डालता गया और ओलती-पलानी फैलाता गया।

दुखमोचन कई रोज तक सोचते रहे। सामने बस्ती का पुराना और बेडौल नक्शा था। बाढ का पानी हटने पर कछारो मे चिकनी या बालू वाली पाँक की जो परते फैली रह जाती हैं, लकीरो के ऐसे ही कुछ बेतरतीब नक्शे उन पर भी उभर आते हैं · लेकिन सदियो पुरानी अपनी निवास-भूमि के नक्शे मे फेर-फार गाँव का भला कौन बाशिन्दा कबूल करेगा ? दूसरो को तो छोड दीजिए, खुद अपने भाई सुखदेव पण्डित की ही नब्ज डूबने लगेगी · नई बस्ती का नया ढाँचा नई जमीन पर ही तैयार होगा। यहाँ नवनिर्माण नही, पुनर्निर्माण करना है। पुराने नक्शे मे मामूली हेर-फेर ही सम्भव होगा

फिर भी निकास के रास्तो, गलियो और मोरियो के बारे मे दुखमोचन बराबर मुस्तैद रहे। बहुत-सारी जगहो पर लोगो ने रास्ते की जमीन हडप

ली थी और अब अपनी नकली सीमा पर अड जाते थे । ऐसे लोगो को कदम-कदम पर नक्शा फैलाकर और जरीब से जमीन नाप-नापकर समझाना पडता था ।

हरखू धान की फसल के दिनो मे दो महीने के लिए घर आया था; माघ की पूरनमासी के अगले रोज़ ही फारबिसगज लौट गया था। छोटे-छोटे दो घर थे बकरी और बाछी के लिए अलग एक पलानी थी। कायदे के मुताबिक फिलहाल एक घर तैयार कर देना था। दोपहर के बाद लौटने पर एक जत्था हरखू की माँ से बताकर कामो मे भिड गया।

लीलाधर को साथ लिये हुए दुखमोचन आये और पीछे पीछे मास्टर टेकनाथ भी आ पहुँचा ।

दुखमोचन के नक्शा फैलाकर और जरीब से ज़मीन नापकर देखा। रास्ता ठीक अपनी जगह पर निकल आया। खुशी से चेहरा खिल उठा।

मैली साडी का जो हिस्सा माथे को ढके हुए था, उसे नीचे नाक तक खीचकर हरखू की घरवाली आगे बढ आई, झुलसे धुआँ के कुठले की ओट लेकर खडी हो गई। पास ही दस-ग्यारह साल की साँवली लडकी थी। लडकी के ही माध्यम से फ़ुसफ़ुसाकर बोली—हमारी ही भूल-चूक से आग भडकी और समूचा गाँव जलकर खाक हो गया मालिक ! हम तो मुँह दिखाने लायक नही रहे हुज़ूर! · ·

आगे एक शब्द भी नही निकला, लेकिन आड रहने पर भी सुनने वाला समझ गया कि कहनेवाली की आँखे डबडबा आई है और होठ परिताप का आवेग पचा नही पा रहे हैं, बुरी तरह फडक रहे हैं ··क्षण-भर के लिए दुखमोचन स्तम्भित रह गए। बातचीत की सुविधा के लिए उन्होने छोकरी से नाम पूछा तो शरमाकर वह बोली—टुनिया।

दुखमोचन बोले—सुनती हो टुनिया की अम्माँ, इस गाँव मे आग यह पहली ही बार नही लगी थी। कुछ कसूर था मौसम का, कुछ पछिया हवा का, कुछ फूस का, कुछ तुम्हारा और कुछ हमारा—इसमे किसी एक का कसूर नही था टुनिया की अम्माँ! होनी थी सो होकर रही, अब

नाहक पछता रही हो ! • हरख् ने इधर रुपये-उपये कुछ भेजे है कि नही ?

टुनिया की माँ का सिर हाँ' की मुद्रा मे हिला, तो दुखमोचन कहने लगे—अभी तो हर परिवार के लिए एक-एक घर ही तैयार करवा रहे हैं। सभी को जल्दी थी, बाल-बच्चे खुले आसमान के नीचे आखिर कब तक धूप-ओस झेलते रहते ? पीछे और भी मदद मिलेगी टुनिया की अम्माँ ! दवा-दारू की जरूरत आ पडे तो टुनिया को मेरे पास भेजना—

हरखू की औरत बीच-बीच मे माथा हिलाती रही।

लीलाधर स्वयसेवको के लिए सुरती तैयार कर रहे थे। मास्टर टेकनाथ गडे हुए खम्भो के सिर पर डोरी तानकर उसके समानान्तर की जाँच कर रहा था। दुखमोचन की बात खत्म हुई, तो टप् से बोला—बुढिया नही दिखाई पडी—आग लगाकर जमालो दूर खडी !

सभी हँसने लगे, लेकिन दुखमोचन का चेहरा गम्भीर रहा। हँसी का फव्वारा थमा, तो उन्होने टेकनाथ की तरफ हाथ बढाकर कहा—जीभ को काबू मे रखना सीखो मास्टर !

सभी चुप थे। मास्टर की निगाहे नीचे की ओर थी।

थोडी देर बाद वह आहिस्ते से बोला • नित्याबाबू ने तुम्हें आज शाम को बुलाया है दुखमोचन !

फुरसत मिली तो जाऊँगा—आरी चलाते हुए दुखमोचन ने कहा। ठट्टर खडी की जा चुकी थी, वह उसमें एक खिडकी निकाल रहे थे। इस्पात की बनी हुई छोटी-सी वह आरी बाँस की बातियो से तैयार की गई ठट्टर को सर्र-सर्र काटती जा रही थी।

लीलाधर लोगो को नर्मदा किनारे के अपने तजरबे सुना रहे थे। दुखमोचन ने कहा—मामा, आप तो बहुत घूमे-फिरे है, पढे-लिखे भी काफी हैं ! हमारे बहादुरो को रोज इसी तरह कुछ-कुछ सुनाया कीजिए।

हाँ मामा, मैं भी सुना करूँगा—टेकनाथ ने बरेरी छीलते हुए कहा।

इस प्रकार हथरस और बतरस दोनो का योग पाकर शाम तक हरखू का एक घर खडा हो गया।

....तेरह

फसल इस बार रबी की अच्छी हुई थी और आम भी खूब फरे थे। गाँव के अन्दर आमो के जितने भी पेड थे, टिकोलो के साथ-साथ उनके पत्ते और टहनियाँ तक झुलस गई थी। लेकिन अमराइयाँ और कलम-बाग गाँव के बाहर थे। उन तक आँच नही पहुँच पाई, वे बच गए थे।

मध्यवर्ग और ऊपरी तबके के परिवारो के लिए आमो की फसल कोई मामूली फसल नही हुआ करती। खूब फरे हो और आँधी-पानी से बरबाद न हो गए हो तो आमो का दो-ढाई महीने का यह मौसम साल-भर की तन्दुरुस्ती बना लेने का अचूक अरसा होता है।

जेठ की पूर्णिमा के पाँच-सात रोज़ बाकी थे। बम्बइया और रोहिणियाँ आम पकने-टपकने लगे थे। लगता था कि समूचा गाँव बागो और अमराइयो मे आ डटा है' गीत, खिलखिलाहट ठहाके, शोर-पुकार, बातचीत, बन्दरो को खदेडने की ललकारें और बीच-बीच मे हवा की हलकी सिसकी से पके आमो का टपकना—और इन विलक्षण ध्वनियो

की पृष्ठभूमि के तौर पर झींगुरो की झकार—अविराम और एकरस ।

दुखमोचन की यह अमराई नयी नही थी, खानदान की पुरानी अमराई थी । मोटे-पतले पचास-साठ पेड थे । किनारे-किनारे जामुन और महुआ की कतार थी । इर्द-गिर्द वेणी माधव, मधुकान्त, राजकुमार आदि की अमराइयाँ थी । जरा हटकर नित्याबाबू और चौधरी लोगो के अमराइयो के टोक थे ।

सुखदेव ने वैशाख के आरम्भ मे ही मचान खडा कर लिया था । कभी खुद, कभी लीलाधर और कभी जोगेन्द्र के साथ अपर्णा अमराई अगोरते थे । दुखमोचन को इन कामो के लिए कतई फुरसत नही थी ।

दिन का खाना दस बजे के करीब ही खाकर आज लीलाधर अमराई के अन्दर आए और टपके हुए तीनो आम जाबी मे लेकर जोगी वापस गया । लीलाधर पढने को पुराने अखबार और मैथिली का एक गल्प-सग्रह साथ लाए थे । सात-आठ वर्षो का लम्बा प्रवासी जीवन बिताकर लौटे थे, अब मिथिला की अपनी यह भूमि बेहद प्यारी लग रही थी । यह देस-कोस, यह माटी-पानी, पहली वर्षा के बाद धानों के ये अकुर, आमो से लदी ये अमराइयाँ, घौदो मे लटके पकने को आतुर जामुन, गुलाबी फल-भार से विनम्र लीची की तुनुक टहनियाँ, श्याम-सलिल पोखर, ग्रीष्म की सजीदा और बरसात की बेहूदी नदियाँ नेह-छोह की सजीव छडी-सी भाभी · अमराई की घनी छाँह···

बाहर कडी धूप थी, मगर अमराई के अन्दर तो मानो समूचे ससार की ठडक सिमट आई थी ।

लीलाधर मचान पर लेटे-लेटे देर तक त्रिकाल-विवेचन करते रहे । बीच-बीच मे भाभी आकर अन्तश्चक्षु के सामने खडी हो जाती थी ।

काफी देर बाद उन्हे करवट बदल लेने की आवश्यकता महसूस हुई तो बदन के साथ-साथ विचार ने भी पासा पलटा । अपन और भाभी के बारे मे लीलाधर ने नये सिरे से सोचना शुरू किया । सकल्पो का उदय हुआ तो विकल्प अब डूबने लगे । कुछ देर बाद वह उठ बैठे और जप की

अव्यक्त उच्चारण वाली शैली मे अपने-आप कहने लगे —भाभी, भविष्य मे कभी मै तुम्हारे आदेशो की अवहेलना नही करूँगा । छोडकर कभी भागूँगा नही, आजीवन साथ निभाऊँगा

कि, कही आम टपका !

लीलाधर ने इसे अपनी इष्ट देवता भगवती उग्रतारा की तरफ से अनुकूल सकेत समझा । दोनो हाथ जोडकर माथा झुका लिया और तीन बार देवी को प्रणाम किया । फिर मचान से उतरकर टपके हुए आम की टोह मे टहलने लगे ।

मोटी जडो वाले एक भारी पेड की ओट मे नन्ही घासो पर लाल मुँह वाला वह पीला आम पडा था । नजर पडी तो प्रसन्न होकर लीलाधर उधर लपके । उठाने को झुके ही थे कि ऊँची आवाज कानो से टकराई—मै देख रहा हूँ मामा ! अजी, इसे मेरे लिए छोड दिया होता

अकचकाकर लीलाधर ने सिर उठाया । देखा तो दुखमोचन अमराई की सीमा के अन्दर आ चुके थे ।

आओ ! आओ ! आओ—लीलाधर हुलसकर बोले और आम वाला हाथ आगे बढा दिया—इस पर तुम्हारा ही हक है बबुअन ! छोटे हो न तुम !

सामने बढ आए हाथ तक अपनी गरदन लम्बी करके दुखमोचन ने आम को सूँघ-भर लिया, हाथ मे लेने की कोशिश नही की । कई बार सूँघा । तृप्ति से चेहरा चमकने लगा । थोडी देर बाद कहा—कैसे यह भूमि छोडकर इतने वर्षों तक आप बाहर रहे मामा ?

बुरे ग्रहो के फेर मे पडकर—लीलाधर धीरे से बोले ।

—अपना कसूर नही था ?

—हाँ बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी ।

—नही, चेतन की चाँदनी पर सशय का कुहरा छा गया था··· अच्छा एक काम मैं लगाना चाहता हूँ आपको मामा···मामी की भी

राय है ''कन्या-पाठशाला बडी बुरी हालत मे है, उसकी आवश्यकता का भार आपको संभालना होगा।

लीलाधर का माथा भारी हो उठा। उन्होंने कातर नेत्रो से दुखमोचन की तरफ देखा। गम्भीर हो कहा—आज तक जीवन मे कही कोई ज़िम्मेदारी मैने नही उठाई। हमेशा भागता रहा हूँ, कन्धे ढालता रहा हूँ हमेशा! अब यह तुम हो कि अपनी क्षमता के प्रति खोयी हुई आस्था मेरे अन्दर फिर वापस लौट आई है ''

गला भर आया, आगे एक अक्षर भी मुँह से नही निकला।

दुखमोचन ने देखा, लीलाधर की आँखें सजल हो आई हैं। उनके कन्धे पर अपनी हथेली से आश्वासन का स्निग्ध स्पर्श देते-देते वह बोले—डाकखाने मे मामी के ढाई हज़ार रुपये जमा हैं, उन्होने निश्चय किया कि दो हज़ार कन्या पाठशाला को दे देंगी। माया ने महज़ दस रुपये मासिक वेतन पर पाँच वर्ष तक अध्यापिका बने रहने का व्रत लिया है। मकान नये सिरे से हमने बनवा ही दिया है। आप-जैसा सुघर-समझदार और अनुभवी आदमी सस्था का अधिष्ठाता होगा तो न रकम का टोटा पडेगा न कार्यकर्ताओ की कमी होगी ' बस यह भार अब आपको उठाना ही है मामा!

दुखमोचन ने उल्टे बडे भाई की गरिमा के अन्दाज़ मे लीलाधर की पीठ थपथपाई और चुमकारा।

लीलाधर ने अँगोछे से नाक-आँख पोछी और खखारकर गला साफ किया, फिर पूछा—थोडी देर बैठोगे नही बबुअन ?

—नही मामा, अभी नही बैठूँगा। घर जाकर खा-भर लेना है। फिर कामो मे जुट जाना है। अगले पाँच-सात रोज यही हाल रहेगा। कई गाँवो की खाक छानकर आ रहा हूँ मामा!

दुखमोचन मुस्कराये तो नाक की नोक पर तिल का निशान निखर उठा। मुस्कराते-मुस्कराते जाने लगे तो लीलाधर ने आम थामते हुए कहा—टुनू को देना, परिवार मे सबसे छोटी उम्र उसी की है न!

खाना खाकर दुखमोचन फौरन निकले ।

वेणी माधव का दालान तैयार हो चुका था । वही दोपहर के बाद गाँव वालो की जुटान थी । अग्नि-काण्ड के बाद सहायता के कामो का और जमा-खर्च आदि का लेखा-जोखा लोगो के सामने रखना था । रजिस्टर, छोटी कौपियाँ और मामूली कागज-पत्तर लेकर कपिल पहले ही पहुँच गया था ।

दुखमोचन आये तो कपिल ने रजिस्टर खोला ।

कोई भी ऐसा टोला-महल्ला नहीं था जिसका प्रतिनिधि गैरहाजिर हो । जातियो, वर्गों और प्रमुख परिवारो का भी प्रतिनिधित्व मौजूद था । कुछ-एक दिन पहले जमकर बारिश हुई थी । खेत जाग गए थे । बहुसख्यक किसान और खेत-मजदूर मीटिंग मे नही आ सकते थे । दुख-मोचन पर उनकी अपार आस्था थी, मीटिंग के परिणामो की तरफ से इसीलिए वे बेफिकर थे ।

वेणी माधव के हाथ मे छोटा सरौता था । वह बारीकी से सुपारी कतर रहा था । नीचे दरी पर पड़े बटुए की नफासत लोगो का ध्यान रह-रह अपनी तरफ खीच लेती थी ।

वेणी माधव की हथेली पर से सुपारी का चुटकी-भर कतरा उठाकर दुखमोचन ने मुँह के हवाले किया और निगाहे घुमाकर जन-समुदाय के रुख का अन्दाज लिया । वही रहीम, वही लतीफ, वही बौधू चाचा । वही राजकुमार और रमाकान्त, वही परमेश्वर और सनीचर और गोनौड मधुकान्त, रामसागर, टेकनाथ, जय माधव वगैरह नजदीक ही बैठे थे ·

और तब, एक बार दुखमोचन की दृष्टि नये सिरे से आबाद हो रही बस्ती के अधूरे ढाँचो की क्षणिक परिक्रमा कर आई ।

बैठे-बैठे ही वह कहने लगे—भाइयो, घर तैयार करने की बहुत-सारी सामग्री के अलावा साढे सात हजार की नकद रकम अब तक हमे सहायता के तौर पर मिल चुकी है । हर परिवार के लिए एक-एक घर

जैसे-तैसे तैयार कर दिया गया। बीज के दाने बुरी तरह झुलस गए थे। हमने तीन हज़ार की रकम लगाकर दो सौ मन बीज के धान खरीद लिए हैं। सौ मन बीज खरीफ और रबी की फसलो का अभी लेना है, पन्द्रह सौ लगभग इसमे भी लग जाएँगे। पाँच हज़ार रुपये पुनर्वास-विभाग की ओर से मिलने वाले हैं। आठ हज़ार की यह रकम घरो को खपरैल का बनाने मे खर्च हो, मै तो यही चाहता हूँ आपकी क्या राय है?

थोडी देर तक चुप्पी छाई रही, फिर फुसफुसाहट क मिले-जुले दबे स्वर उठने लगे।

दुखमोचन ने टेकनाथ की तरफ देखकर कहा – मास्टर, तुम्हारी क्या राय है?

खपडो की तैयारी मे भारी झझट होगी—टेकनाथ सुरती थूककर बोला—बरसात सिर पर है, अभी तो होगा नही। होगा आसिन-कातिक के बाद पास-पडोस के गाँव से बीसो कुम्हार बुलाने होगे, हजारो मन बढिया मिट्टी चाहिए, फिर खपडा और नरिया के पचासो आवा लगाओ, सैकडो मन कण्डे और सूखी लकडियाँ जुटाओ—भारी झमेला है दुखमोचन!

टेकनाथ की यह दलील सुनकर दुखमोचन भन्नाकर हँस पडे, कहा—अपने-आपमे हमारी यह ज़िन्दगी ही क्या कोई मामूली झमेला है मास्टर? झमेले की भी तुमने खूब कही! कैसा भी झझट क्यो न हो, हर परिवार के पास एक-एक घर खपरैल से छवाया हुआ मौजूद रहेगा तो आग लगने पर इस तरह का लका-काण्ड फिर कभी नही होगा। घरो का फूस से अच्छी तरह छवाना ही क्या कुछ कम खरचीला पडता है?

—तो खपरैल ही क्यो? छतें पक्की कर दो न सबकी!

—वह भी होगा मास्टर! आ रहा है ज़माना—फिलहाल इतना तो हो लेने दो!

टेकनाथ तिनके से दाँतो के खोडर खोदने लगा और जनता को

जीभो को हिलने का अवसर मिला। आपस मे ही बाते होने लगी। बौधू चाचा ने लतीफ से पूछा कि खपरैल होने पर फूसवाली छप्परो का क्या होगा तो आसपास कई लोग जोर से हँस पडे। सनीचर बोला कि कई खेतिहरो को हल बनाने की लकडी अब तक नही मिली। सहायता-कार्यों के प्रमुख व्यवस्थापक की हैसियत से दुखमोचन ने इस भूल के लिए लोगो से क्षमा माँगी और वचनबद्ध हुए कि चार रोज के अन्दर ही उन खेतिहरो को बने-बनाए हल मिल जाएँगे।

इसके बाद कपिल कुछ देर तक ब्यौरेवार लेखा-जोखा सुनाता रहा और दस बीस आदमी कान लगाकर सुनते रहे। बाकी लोग दो-दो, तीन-तीन या चार-छ. की अलग-अलग सगतो मे बँटकर घर-गिरस्ती की बातो मे लग गए। फिर आहिस्ते-आहिस्ते उठ-उठकर वे जाने भी लगे।

दुखमोचन ढाई-तीन घण्टे तक वेणी माधव के दालान पर जमे रहे। जय माधव ने बीच मे तकिया ला दिया था। वेणी माधव की पत्नी ने पान के बीडे लगाकर भेजे थे।

कपिल कागज-पत्तर सँभालकर जा चुका था। दुखमोचन ने देखा, मास्टर टेकनाथ हटने का नाम नही ले रहा है और चेहरा भी काफी उदास है बेचारे का।

नरमी से पूछा—क्या बात है मास्टर ? एकाएक यह उदासी क्यो छा गई चेहरे पर ?

क्या बताऊँ दुखमोचन !—रुक-रुककर टेकनाथ बोला—कल शाम को मेरी घरवाली का पडोसिन से किमी बात पर झगडा हुआ…

अजी, यह सब तो चलता ही रहता है !—वेणी माधव बीच मे ही टपक पडा—घरवाली की बातें घर तक ही रहने दो मास्टर !

दुखमोचन ने वेणी माधव को डाँटा—पूरा कहने भी तो दो !… हाँ मास्टर, फिर क्या हुआ ?

रात का खाना बच गया, चलो, अच्छा हुआ !—वेणी माधव से नही रहा गया। वह हास-परिहास के मूड मे था।

टेकनाथ का चेहरा और भी फीका पड गया। दुखमोचन को वेणी-माधव की बचकानी रुझान पर अन्दर-ही-अन्दर भारी क्षोभ हुआ। भौहे तन गईं और आँखो के कोए फैल गए।

दुखमोचन की क्षुब्ध मुखमुद्रा मे वेणी माधव को अपनी भूल फौरन महसूस करा दी, आगे वह गम्भीर हो गया।

टेकनाथ ने नजर घुमाकर इधर-उधर देखा और कहने लगा—पडोसियो और पडोसिनो मे आपस के अदना झगडे तो आए-दिन होते ही रहते है, मगर कल का मामला कुछ और था दुखमोचन ! •• पडोसिन ने मेरी घरवाली से कहा, तेरा घरवाला बैल को भूनकर खा गया और डकार तक नही ली—देखती हूँ, अब कौन तुम लोगो का छुआ पानी पीता है आखिर मे 'कसाई की राँड' कहकर पडोसिन ने तीन बार थूक दिया। दुखमोचन, सचमुच रात का खाना वैसे ही पडा रहा ! न मन्नो की अम्माँ से खाया गया, न मुझसे खाया गया

टेकनाथ चुप हुआ तो लम्बी उसाँस छूटी।

थोडी देर तक सभी मौन थे। दालान के बाहर जेठ की ढलती धूप अब भी तेज थी, लेकिन पुरवैया ने उसकी प्रखरता को पूरी तरह पछाड दिया था।

दुखमोचन की आत्मा बराबर यही कहती रही थी कि बैल जब अपने-आप झुलसकर ढेर हो गया तो इसमे टेकनाथ का क्या कसूर था। लेकिन सामाजिक समाधान के लिए यह आवश्यक था कि समूचा गाँव टेकनाथ को निर्दोष मान ले। बेहद व्यस्त रहने के कारण दुखमोचन बैल के जल मरने की इस बात पर तत्काल उचित ध्यान नही दे सके थे। उधर टेकनाथ दुखमोचन से अपने निर्दोष होने का आश्वासन पा ही चुका था, बेफिक्र होकर घर-गिरस्ती के कामो मे लगा रहा। लेकिन पास-पडोस के लोगो मे इस मामले को लेकर घुसर-फुसर चलती रही—सीधे-सामने तो पहले किसी ने कुछ कहा नही, पडोसिन के माध्यम से

कल शाम को यह पहला ही विस्फोट हुआ था।

दालान की झुलसी दीवार पर हाल मे चिकनी मिट्टी की पोची पडी थी। लेखा-जोखा के बाद दुखन सिर के नीचे तकिया रखकर लेट गए थे, किन्तु अब उठकर बैठ रहे। पीठ दीवार से टिकी हुई थी।

काफी देर तक गम्भीरता मौन से लिपटी रही।

फिर एकाएक दुखमोचन दीवार का सहारा छोडकर सीधी मुद्रा मे बैठे और टेकनाथ की तरफ देखकर बोले—तुम अभी जाओ मास्टर, शाम को मिलना।

—कहाँ मिलूँ दुखमोचन ?

—मधुकान्त के दालान पर।

टेकनाथ उठकर चला गया।

दुखमोचन और वेणी माधव भी उठकर गाँव के दक्षिण छोर पर पहुँचे।

खेती-गिरस्ती का मौसम आ जाने से पडोसी गाँवो के स्वयसेवक और रक्षा-समिति वाले जवान पिछली अमावस के अगले रोज ही वापस जा चुके थे। शिविर वाली झोपडियाँ सूनी पडी थी क्योकि सहायता का दफ्तर अब मधुकान्त के दालान पर चला गया था।

वेणी माधव ने कहा—इन झोपडियो का क्या करोगे ?

दुखमोचन बोले—बौधू चाचा अपने पुरवे मे एक चौपाल खडी करना चाहते है। छठे-छमाहे कोई रदासी भगत आ जाता है तो चमार-भाइयो की भारी जुटान होती है। इन झोपडियो का सामान एक चौपाल के लिए काफी होगा।

—तो बौधू चाचा से कह क्यों नही दिया ?

—भूल गया वेणी माधव, तुम कह आना जाकर · दो-ही-एक दिन मे उठा ले जाएँ! अच्छा, तुमने अपने चाचा से टेकनाथ के मामले की चर्चा की थी ?

—की तो थी, लेकिन वह कुछ बोले नही थे दुखमोचन! और,

दूसरी दफा मैंने कभी पूछा ही नही ।

—मुझ पर तो बेहद खफा होगे कि नही ?

—नही दुखमोचन, इधर काका ने कई बार तुम्हारे बारे मे पूछा है क्रोधित होने पर हमारे पण्डित काका महाकाल-महारुद्र की तरह लगते है, लेकिन गुस्सा हटने पर उनका दिल मक्खन का लोंदा हो जाता है । अभी तुमने काका का एक ही रुख देखा है

देवी-मन्दिर से कुछ हटकर पश्चिम की तरफ ललित पण्डित का, कलमी आमो का छोटा-सा बागीचा था । यह उनकी खुद की रची हुई सृष्टि थी । लगडा, किसुनभोग, वम्बइया, कलकतिया, जर्दालू, शाह-पसन्द, गुलाब-खास, सुकुल और सीपिया आमो के कलमी पौधे छाँट-छाँटकर जाने कहाँ-कहाँ से लाए थे ! पौधो की सेवा मे उन्होने रात-दिन एक कर दिया था । हाता बहुत बडा नही था, दस कट्ठा भीठ जमीन थी । चारो तरफ से सीसम-महुआ-खैर आदि पेडो की तरुण कतारें आमो को घेरकर खडी थी । बाग के बीचो-बीच पक्की ईंटो का छोटा-सा कुटीर था, पक्की जगतवाला एक कुआँ भी ।

दोनो जने बातचीत करते-करते बाग के अन्दर दाखिल हुए तो पण्डितजी 'ब्रह्मवैवर्त-पुराण' का पारायण कर रहे थे ।

दोनों ने पैर छूकर पण्डितजी को प्रणाम किया । आशीर्वाद सकेत से ही मिला । अध्याय समाप्त करके उन्होने हुलसकर दुखमोचन की तरफ देखा । क्षण-भर बाद पूछा—आम तो अभी पकने ही लगे हैं । इक्के-दुक्के टपकते होगे, उनसे अभी बच्चे ही अपनी जीभ की खुजलाहट मिटाते होगे । परसो एक आम बम्बई की डाल मे पका हुआ नजर आया, मैंने लग्गी से टहनी झुकाकर हाथों-हाथ तोड लिया । मौसम का पहला फल कल भगवान् का नैवेद्य हुआ । आज तीन आम तोडे हैं और सयोग से तुम आ गए हो—बेटा, अपनी सृष्टि के फल हैं, खिलाकर आत्मा को परितोष होगा ।

काका चाकू से आम छीलते रहे । वेणी माधव को दुखमोचन ने

केहुनी से छूकर उकसाया, मतलब की बात पूछने के लिए। उसने आहिस्ते से कहा—ताऊ, टेकनाथ के बारे मे आपसे मैंने कुछ पूछा था। याद है ?

हाँ, अच्छी तरह याद है बच्चा !—ललित पडित बोले—कमजोर, अपग बैल खोल देने पर भी लौट आया और गली के कोने मे अनदेखे झुलसकर मर गया तो इसमे टेकनाथ का क्या दोष ?

मगर पडोसी तो उसे बैल का हत्यारा समझते है ताऊजी ! एक-आध जगह इसकी चर्चा भी सुनने मे आई है बेचारा टेकनाथ चिन्ता के मारे सूखकर काँटा हो गया है।

पडित ने कहा—पडोसी भी मूर्ख हैं और टेकनाथ भी मूर्ख है—

ललित पडित का अनुकूल रुख पाकर दुखमोचन को खुशी हुई। भीतर की प्रसन्नता को दबाकर वह बोले—काका, परसो है सक्रान्ति। टेकनाथ सत्यनारायण भगवान् की पूजा करेंगे। आपको उस समय टेकनाथ के यहाँ उपस्थित रहना है और पाद-प्रसाद ग्रहण करना है।

अवश्य !—पडित ने बिना किसी झिझक के कहा और कटोरा दुखमोचन को थमा दिया। छीले आम के लाल कतरे थे उसमे। वेणी माधव अपना भतीजा था, उसे हाथ मे ही थमा दिये गए।

आम खाकर, मुँह-हाथ धोकर दोनो चले तो ताऊ बाग के बाडे तक उन्हे छोडने आये। अलग होते वक्त दुखमोचन की पीठ पर हाथ रखकर बोले—टेकनाथ से कह देना, हत्यावाली बात अपने मन से निकाल डाले और ठाठ से सत्यनारायण भगवान् की पूजा करे, पुरोहिताई बल्कि मुझसे ही करवाए

कह दूँगा काका !—दुखमोचन बाडे से बाहर आ गए।

वेणी माधव पीछे था। चलते-चलते कहा—अगर ताऊ उल्टा रुख अख्तियार करते तो मामला टेढा हो जाता ?

पीछे घूमकर दुखमोचन ने वेणी माधव को देख लिया। फिर जमी हुई आवाज मे बोले—तो भी परसो टेकनाथ से मैं भगवान् की पूजा

'इसी तरह करवाता और इसी तरह समाज के दस आदमी मास्टर के हाथ से पान-प्रसाद ग्रहण करते पण्डित काका की मुहर लग जाने से अब इतना तो हो ही गया कि पुराने विचार के लोगो का दिल भी टेकनाथ के प्रति साफ रहेगा। यो तुम देख ही चुके हो कि माया और कपिल की शादी करवाकर बुजुर्गो की दकियानूसी को हमने किस तरह दफना दिया

दोनो बस्ती के भीतर आये। सूरज डूबने मे थोडा ही विलम्ब था। नये-नये सादे-फीके घर जेठ की सादी सन्ध्या को कई गुना अधिक सादगी मे डुबो देने के लिए मानो घडी-आधी-घडी पहले से ही तैयार खडे थे।

मामी से दो बाते करके दुखमोचन लहेरिया सराय की ट्रेन पकडने के लिए स्टेशन की तरफ लपके। टेकनाथ से मिलने का काम वेणी-माधव को सौपते गए।

लीलाधर रात को खाने बैठे। सामने बैठकर मामी पखी से हवा करती रही। अपनी पसन्द की नयी ब्रिजनी आर्डर देकर उन्होने इधर बनवा ली थी।

अमराई मे दुखमोचन से आज जो कुछ बातें हुई थी, लीलाधर ने सब अपनी भाभी से बतला दी तो वह बोली—बडे भागे-भागे फिरते थे तुम, अब हमारे बबुअन का फन्दा तोडकर भागो तो समझूँ!

दबायी हुई मुस्कान भाभी की आँखो मे कई गुना ज्यादा चमक बनकर जगमगा उठी, लालटेन की मद्धिम रोशनी भी देवर से इस तथ्य को छिपा नही पाई लीलाधर खाते-खाते हँस पडे। कौर चबाने मे व्यस्त मसूडो और चालू गालो की कसरत हँसी का जोर भला कैसे सँभालती! मुँह के कौर को जैसे-तैसे गले के नीचे धकेलकर कहा—खाली फन्दा होता तो एक बात भी थी, मगर इसमे लासा लगा हुआ है भाभी!

अबकी दोनो खुलकर मुस्कराए। तरकारी ले आई मामी उठकर। बैठने की अपनी मुद्रा ठीक करके कहा—बबुअन का अब एक ही काम

जल्दी करने को रह गया है झंडा झुलस गया तब से दालान का आँगन सूना लगता है। पन्द्रह अगस्त के तो अभी ढाई-तीन महीने बाकी हैं। इसी पूर्णिमा के प्रातःकाल ध्वजा गाडने और झंडा फहराने का निश्चय किया है बबुअन ने। देखें, झंडा फहराने के लिए इस बार बाहर से कौन पधारते हैं!

लीलाधर ने डकार लेकर कहा—शुभकर बाबू ··

—हाँ, शायद वही पधारेंगे। बबुअन जिसको चाहेंगे, पकड़ लाएँगे।

हुआ भी यही।

दुखमोचन संक्रान्ति की दोपहर को लौटे। शाम को टेकनाथ ने सत्यनारायण भगवान् की पूजा की और लोगों को अपने हाथ से पान-प्रसाद दिये। सबने वहीं बैठकर उसे ग्रहण किया। ललित पंडित की मौजूदगी का हाल मालूम करके नित्याबाबू और त्रिजुगी चौधरी-जैसे पुराने लोग भी आ गए थे।

अगले दिन पूर्णिमा थी। तीन विधायक आ पहुँचे—शुभकर बाबू, चतुरी ठाकुर और इन्द्रशेखर सिंह। दारोगा, अंचलाधिकारी साहब, पिपरा बाजार के पाँच-सात नागरिक और पडोसी गाँवों के पंच भी आ जुटे।

बौधू चाचा के पुरवे से ढोल-पिपही बजानेवाले भाई सवेरे-सवेरे आकर डट गए थे। समूचा गाँव इस झण्डा-समारोह को अपना खास त्यौहार समझ रहा था। छोकरे और छोकरियाँ गोल बाँधकर तमाशा देखने आये।

मौसम खेती का था। हल्की बूँदा-बाँदी के बाद बादलों ने आसमान को खाली कर दिया तो खुशी के मारे लोगों के चेहरे दमकने लगे।

लम्बा-पतला हल्का हरा ताज़ा-चमकीला 'चाप' बाँस दालान से बीस कदम आगे गाड दिया गया। पिसे चावल की गाढी घोल में हथेली डुबो-डुबोकर मामी ने ध्वज-दंड पर पाँच-सात पचगुरा छाप दे डाली.

फिर सिन्दूर लगा दिया।

लोगो का खयाल था, दुखमोचन शुभकर बाबू से या किन्ही दूसरे विधायक से झडा फहराने का अनुरोध करेंगे। लेकिन ध्वजा के नज़दीक खडे अभ्यागतो की अगवानी मे अनुनय-विनय के चार शब्द कह लेने के बाद दुखमोचन ने हाथ उठाकर सफेद बालो और चुचके गालो वाले एक अर्धनग्न गँवई बुजुर्ग की ओर सकेत किया और बोले—यह हमारे बौधू चाचा है, गाँव के सबसे बूढे। भाइयो, मेरी लालसा थी कि कभी बौधू चाचा को राष्ट्रीय पताका उत्तोलित करते हुए देखूँ ·· आप सभी ने मुझे अपना स्नेह दिया है, मुझमें अपनी आस्था प्रकट की है। आपके ही आशीर्वादो का नतीजा है कि मेरी वह लालसा आज पूर्ण हो रही है·

दुखमोचन खुद ही आगे बढे और बौधू चाचा को ध्वजा के पास ले आए।

लोगो ने आश्चर्य से देखा, बूढा खादी की नयी चारगजी धोती पहने हुए है ··

दुखमोचन ने उसे डोरी खींचकर झडा फहराने के बारे में अच्छी तरह बता दिया

ढोल बज रहा था, पिपही बज रही थी। लोगो की उत्सुक निगाहें ध्वजा की ऊपरी छोर पर जमी थीं कि बौधू चाचा ने खट से डोरी खीच ली और अशोक-चक्र-शोभित तिर गा आकाश मे फहराने लगा।

जोरो से तालियाँ पीटी गईं तो ढोल-पिपही की आवाज भी तीव्र से तीव्रतर हो उठी।

इसके बाद कन्या-पाठशाला की तीन छात्राओ ने 'वन्दे मातरम्' गाया, जिसकी कडियो को अधिकाश लोगों ने दोहराया।

विधायको से दुखमोचन ने 'कुछ' कहने की प्रार्थना की तो तीनो पन्द्रह मिनट तक बोले·· कपिल ने अभ्यागतो को धन्यवाद देकर समारोह के अन्त की घोषणा की।